मंत्र यंत्र और तंत्र

मुनि प्रार्थना सागर

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं ह्रौं नमः स्वाहा

कृति - मंत्र यंत्र और तंत्र

कृतिकार - मुनि प्रार्थना सागर

संपादन - श्रीमती निर्मला पाटनी

प्रधान संपादिका- प्रार्थना टाइम्स, मासिक

प्राप्ति स्थान - (1) श्री जितेन्द्रकुमार अजितकुमार जैन

सरस्वती शिशु मंदिर के पास, मु.पो. गढाकोटा

जि. सागर (म.प्र.) मोबा. ०९८२७५-०५६३७

(2) श्रीमती निर्मला पाटनी

१५/३, कालीसिंध मार्ग, सोनकच्छ

जि. देवास (म.प्र.)

०९८९३८-२१७०७

(3) देवेन्द्र कुमार जैन

एमआईजी– 172 बी भोज होटल के पास (इन्द्रनगर)

पो0 – मण्डीद्वीप, जिला – भोपाल(म0प्र0)

07480–231668, 9425359123

(4) भारत के समस्त रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैण्ड

एवं सभी सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र व तीर्थ क्षेत्रों की बुक स्टॉलों पर उपलब्ध

(5) भारत के मुख्य शहरों की मुख्य पुस्तक विक्रय केन्दों पर उपलब्ध

मुद्रक - Shyam johri & sons

395-sangnm vihar; loni; Ghaziabad (u.p)

Email:-shyamjohri58@gmail.com

9891391058 -9410402935

सर्वाधिकार सुरक्षित - © प्रकाशकाधीन

संस्करण - चतुर्थ सन 2011, प्रतियां : 5000, कुल प्रतियां=17000,

प्रकाशक - मुनि श्री प्रार्थना सागर फाउण्डेशन

सहयोग राशि - रू. 500/-(पुन: प्रकाशनार्थ)

Visit our website:- www.jainmuniprarthnasagar.com

Email:- muniprarthnasagar@gmail.com

सर्वधर्म आधारित मासिक पत्रिका

प्रार्थना टाईम्स

Email:- prarthnatimes@gmail.com

राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक ज्वलंत घटनाओं के बारे में मुनिश्री प्रार्थना सागर जी का नया दृष्टिकोण एवं सभी के दिल और दिमाग को झकझोर देने वाले नवीन वक्तव्यों के साथ-साथ आपकी समस्याओं के सटीक समाधान देखें इस पत्रिका में।

आप भी आज ही सदस्य बनें

सदस्यता शुल्क ☞: ● मासिक - ३० रुपये ● पंच वर्षीय - ११०० रुपये
● आजीवन - ३१००रुपये ● संरक्षक - ५१०० रुपये ● परम संरक्षक - ११००० रुपये

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें :

● **मुनि श्री प्रार्थना सागर फाउण्डेशन**
श्री जितेन्द्रकुमार अजितकुमार जैन
सरस्वती शिशु मंदिर के पास, मु.पो. गढाकोटा
जि. सागर (म.प्र.) मोबा. ०९८२७५-०५६३७

● **श्रीमती निर्मला पाटनी**
१५/३, कालीसिंध मार्ग, सोनकच्छ
जि. देवास (म.प्र.)
मोबा. ०९८९३८-२१७०७

कैसे बनें सदस्य ?

- मुनिश्री की यह पत्रिका देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी लाखों लोगों द्वारा पढ़ी एवं सराही जा रही है, आखिर ऐसा क्या है इसमें ? आप जानना चाहते हैं तो उठायें कलम और आज ही नीचे दिये फार्म को भरकर हमें भेजें।
- कृपया अपना नाम और पता स्पष्ट अक्षरों में पिन कोड, फोन नं. के साथ भरें।
- किसी भी डाक की विलम्ब, परिवहन क्षति या सदस्यता फार्म की विकृति के लिए हम जिम्मेदार नहीं होंगे।

डी.डी. या एम.ओ. के साथ यह फार्म भरकर भिजवाएँ

✂ — — — — — — ✂ — — — — — — — ✂ — — — — — — — ✂

मैं प्रार्थना टाइम्स का

❏ सदस्य बनना चाहता हूँ। ❏ अपनी सदस्यता की नवीनीकरण करवाना चाहता हूँ।

❏ आजीवन के लिए ❏ पाँच साल के लिए ❏ संरक्षक के लिए ❏ परम संरक्षक

मुनि प्रार्थना सागर फाउंडेशन के नाम से चेक/डी.डी./एम.ओ. नम्बर .... दिनांक ....

बैंक .... संलग्न है।

नाम .... उम्र .... व्यवसाय ....

पता .... शहर .... जिला ....

राज्य .... देश .... पिन कोड .... टेलीफोन ....

मुनि श्री प्रार्थना सागरजी महाराज का पठनीय साहित्य

१.	दु:खी क्यों ?	20/–	२.	नग्न क्यों ?	20/–
३.	गुरु से शुरु	20/–	४.	दूध का कर्ज	20/–
५.	मत करो विश्वास	20/–	६.	कैसे मिलता सुख ?	20/–
७.	कैसा होता सत्संग ?	20/–	८.	देखो अपनी आदत	20/–
९.	आखिर क्या है धर्म ?	20/–	१०.	स्वयं को बदलो दूसरों को नहीं ?	20/
११.	साँझ का भूला....	20/–	१२.	आखिर ऐसा क्यों होता है ?	20/–
१३.	अब क्या होगा ?	20/–	१४.	कलह क्यों एवं सुलह कैसे ?	20/–
१५.	इतनी जल्दी क्यों ?	20/–	१६.	इन्तजार किसका ?	20/–
१७.	बस प्रेम करो क्योंकि....	20/–	१८.	मत मानो भगवान को	20/–
१९.	संस्कारों के चमत्कार	20/–	२०.	नारी क्या है ?	20/–

जैन धर्म की मुख्य पुस्तकें

१–आओ ! करें प्रार्थना	50/–	२–	आओ करें अर्चना	25/–
३–ऐसे होता बोध	50/–			

अति विशेष साहित्य

१–	मंत्र, यंत्र और तंत्र	५००/–	२–	वास्तुदोष एवं निवारण	२००/–
३–	ज्योतिष विद्या	२००/–	४–	अंग लक्षण से जानें,	५0/–
५–	हस्तरेखा से जानें अपना भविष्य	१५०/–	६–	ध्यान कैसे करें ?	१००/–
७–	जीवन उपयोगी सूत्र	२००/–	८–	टेंशनमुक्ति का उपाय (हास्य व्यंग्य)	२००/–
९–	उन्नति के सूत्र	२००/–			
१0–	कदम कदम पर मंजिल				
	भाग–१	२००/–		भाग–२	२००/–
	भाग–३	२००/–		भाग–४	२००/–
	भाग–५	२००/–		भाग–६	२००/–

नोट : **मुनि श्री प्रार्थना सागर जी के सभी साहित्य एवं प्रवचन की सी.डी. व ऑडियो कैसेट** मँगवाने के लिये डी.डी. या एम.ओ. भेजें अथवा सम्पर्क करें। तीन से अधिक पुस्तकें मँगवाने पर डाक व्यय फ्री।

पता : **श्री जितेन्द्र कुमार जी, अजित कुमार जी जैन**

सरस्वती शिशु मन्दिर के बाजू में,

पोस्ट गढ़ाकोटा, जिला–सागर (म.प्र.)–४७०२२९ मोबाइल : ०९८२७५–०५६३७

विशेष : आप अपनी प्रतिक्रिया भी इसी पते पर भेजें अथवा पुस्तक प्राप्ति स्थान नम्बर दो सम्पादक के नाम पर भेजें तो और उत्तम है।

-: विषय सूची :-

आद्यमिताक्षर 18
मेरे विचार से 37
णमोकार का चिंतन 39
जरा सोचो विचार करो!

मंत्र अधिकार

मंत्र विद्या 48
मंत्र साधक के लक्षण 50
गुरु के लक्षण 50
शिष्य के लक्षण 50
मंत्र साधना के अयोग्य पुरुष 51
गुरु का महत्व 51
गुरु से ही मंत्र ग्रहण का विधान 52
मंत्राराधना में दिशा बोध 52
पूजा हेतु दिशा बोध 52
मंत्र जाप विधि क्रम 53
दिशा चार्ट 53
जाप की परिभाषा 54
जप के प्रकार 54
त्रियोग जाप फल 55
जाप स्थान का फल 55
जाप का फल कब नहीं मिलता 56
जाप करने का विधान 56
मंत्र साधना के निर्देश 56
सकलीकरण किसे कहते हैं? 58
मंत्रों के पंचोपचार 58
दीपक में घी व तेल का प्रयोजन 59
बत्ती का महत्व 59
कलश में वस्तुएं रखने का महत्व 59
माला का महत्व 59
आसन विधान 60
हवन विधि 60
कार्य सिद्धि के लिए आसन और वस्त्र का विधान 61
माह के अनुसार मंत्र जपने का फल 62
वार के अनुसार जाप का फल 62
तिथियों के अनुसार जाप का फल 62
नक्षत्र अनुसार जाप का फल 62
मंत्र यंत्र तंत्र शक्ति का महात्म्य 63
मंत्र तत्रं सिद्धि का मोक्ष मार्ग में निषेध 63
परिस्थिति वश मंत्र प्रयोग की आज्ञा 63
किन्तु मंत्र द्वारा साधु का अजीवका करने का निषेध 63
माला विधान 64
माला- निर्देश 64
माला का फल 65
मंत्र जाप निषेध 65
दीपानादि प्रकार 66
बिना विचारे सिद्ध करने योग्य मंत्र 66
गृहीत शत्रु मंत्र को त्याग करने की विधि 67
दुष्ट मंत्र को जपने की विधि 67
मंत्र सिद्ध होगा या नहीं देखने की विधि 68
पुरुष का ऋणी धनी विचार 69
कलियुग के सिद्धिप्रद मंत्र 69
मंत्र के अधिकारी द्विजवर्णों के योग्य मंत्र 69
ब्राह्मण और क्षत्रियों के योग्य मंत्र 69
चारों वर्णों के योग्य मंत्र 69
वर्ण क्रम से बीजों के अधिकारी 69
वर्णों के भेद 69
वर्ण-रंग व मण्डल की अपेक्षा 69
तिथि-वार व गति की अपेक्षा 70
अक्षरों की शत्रु-मित्रता 70
मण्डलों की अपेक्षा 70
चतुर्वर्णाक्षरों की अपेक्षा 71
लिंग की अपेक्षा 71

लिंग ध्यान संकेत	72
मंत्रों के भेद व लक्षण	73
अक्षर संख्या की अपेक्षा-	73
लिंग की अपेक्षा	73
आग्नेय और सौम्य की अपेक्षा	73
प्रबुद्ध व स्वाप की अपेक्षा	73
मंत्रों का षडङ्ग न्यास	73
ॐ पंचपरमेष्ठी का वाचक है	74
मंत्रों के दस कर्म-	74
अक्षरों का लक्षण और माहात्म्य	74
मंत्रों के जप में गूंथने के भेद	81
बीजों का प्रयोजन	82
बीजाक्षरों की सामर्थ्य	84
बीजाक्षरों का संक्षिप्त कोष	87
बीजाक्षरों के लिए कुछ सांकेतिक शब्द	88
ऋतु विचार	89
शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र	89
बीजाक्षरों के भेद	90
जप में दिशा कालादि अष्टकर्मों का चार्ट	91
मंत्र सिद्ध (जाप) करने की विधि	**92**
मंगलाष्टक	**92**

मंत्र प्रकरण

सर्वकार्य सिद्ध मंत्र	97
मनोवांछित कार्य सिद्धि मंत्र	99
सर्व ऋद्धि सिद्धि प्राप्त मंत्र	101
अत्यंत चमत्कारी मंत्र	102
चिन्ताहरण मंत्र	102
महामंत्रों का महामंत्र	102
सौभाग्य प्राप्ति मंत्र	104
सर्वसम्पत्ति वान बनने का मंत्र	104
कन्या प्राप्त होय मंत्र	**105**
संतान प्राप्ति मंत्र	**106**
सुख से प्रसव होय मंत्र	107
ब्रह्मचर्य रक्षक मंत्र	**107**
सर्वजन प्रसन्न मंत्र	108
श्रोतागण आकर्षण मंत्र	108
मंगलकलश के सामने जपने का मंत्र	109
अभिषेक मंत्रित करने का मंत्र	109
प्रतिष्ठा के समय का मंत्र	109
वेदी में भगवान विराजमान करने का श्लोक व मंत्र	**110**
माला शुद्धि मन्त्र	110
अशुभ मुहूर्त भी शुभ हों	110
बुद्धि-वृद्धि-मंत्र	110
रोजगार या नौकरी मिले मंत्र	112
सर्वरक्षा मंत्र	113
नवग्रह शान्ति हेतु विशेष मंत्र	115
सर्व ग्रह शान्ति मंत्र	116
पद्मावती सिद्धि मंत्र	116
कलिकुण्डदण्ड मंत्र	118
ज्वाला मालिनी देवी सिद्धि मंत्र	119
चक्रेश्वरी देवी मंत्र	119
पापभक्षिणी विद्या	120
कर्ण पिशाचिनी सिद्धि मंत्र	120
स्वप्न में शुभा शुभ कहे मंत्र	121
दर्पण में देखते उत्तर मिले	123
श्री पंचांगुली देवी का मंत्र	123
नवरात्रि, दीवाली,शरद पूर्णिमा,सर्वकार्य सिद्धि मंत्र	**125**
क्षेत्रपाल सिद्धि मंत्र	126
प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न क्षेत्रपाल	127
घंटाकर्ण मंत्र	128
अनेक विशेष मंत्र	129
ऋषि-मण्डल मंत्र	129
गायत्री मंत्र	130
मंगल ग्रह निवारण मंत्र	130
कालसर्प दोष निवारण मंत्र	130

केतु राहु ग्रह पीड़ा निवारक मंत्र	130
भगवान पारसनाथ का मूल मन्त्र	130
भगवान महावीर स्वामी का मूल मन्त्र	130
त्रिभुवन सार मंत्र	130
त्रैलोक्य मण्डल विधान जाप	131
सुख शान्ति हेतु प्रतिदिन के लिए जाप	131
मात्रृका मंत्र	131
सुरेन्द्र मंत्र	132
वर्द्धमान मंत्र	132
महामृत्युञ्जय मंत्र	132
यक्षिणी विद्या	133
सामान की बिक्री का मंत्र	**135**
लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र	**136**
ऋण मोचन मंत्र	**139**
व्यापार वृद्धि मंत्र	**140**
सर्व समृद्धि के लिए मंत्र	141
शान्ति मंत्र	141
सर्व भय निवारण मंत्र	142
सर्वशत्रु शान्त मंत्र	143
उनमत्त करने का मंत्र	145
दुर्जन वशीकरण मंत्र	145
वशीकरण मंत्र	145
पुरुष (राजा)वशीकरण मंत्र	151
उच्चाधिकारी वशी मंत्र	152
पति वशीकरण मंत्र	152
स्त्री वशीकरण मंत्र	152
सासा वशीकरण मंत्र	154
आकर्षण मंत्र	154
मोहन मंत्र	155
स्तम्भक मंत्र	155
विरोध कारक (विद्वेषण) मंत्र	157
पौष्टिक मंत्र	157
परविद्या छेदन मंत्र	158
उच्चाटन मंत्र	159
मारण प्रयोग	160
विरोध विनाशक मंत्र	160
संकट हरण मंत्र	160
सर्व विपत्तियाँ दूर हो मंत्र	161
विघ्नहरण नमस्कार मंत्र	161
क्लेश नाशक मंत्र	161
विवाद विजय मंत्र	162
सर्वत्र विजय मिलती	162
क्रोध शान्ति मंत्र	162
गृह क्लेश निवारण मंत्र	163
लड़की ससुराल रहे मंत्र	163
सामने वाला सत्य बोले मंत्र	163
झूठे को सत्य करें मंत्र	163
वंधीमोक्ष मंत्र	163
व्यंतर बाधा (डाकिनी शाकिनी भूत पिशाच) विनाशक मंत्र	164
नजर आदि सर्व दोष निवारण मंत्र	168
निद्रा आने का मंत्र	168
निद्रा स्तंभन मंत्र	168
अग्नि उतारक मंत्र	169
आकाश गमन मन्त्र	170
सर्पविष नाशक मंत्र	170
बिच्छू का जहर नष्ट मंत्र	172
कुत्ते का जहर उतरे मंत्र	173
सर्व विष हरण मंत्र	173
मछली बचावन मंत्र	173
चूहे भागे मंत्र	174

खटमल भगाने का मंत्र	174
मक्खियाँ भगाने का मंत्र	174
कौआ,तोता-मैना,श्वानबोली-ज्ञान मंत्र	175
सर्व रोग निवारण मंत्र	176
शरीर पीड़ा दृष्टिदोष विनाशक मंत्र	176
सिर दर्द नाशक मंत्र	177
आंख (नेत्र) पीड़ा दूर मंत्र	177
कान (कर्ण)रोग विनाशक मंत्र	178
दांत ,दाढ़,मुख के रोग शांत मंत्र	179
श्वांस,पाद ,पीलिया रोग निवारण मंत्र	180
पेट रोग निवारण मंत्र	180
वात नष्ट मंत्र	181
अंडकोष-वृद्धि व खालबिलाई मंत्र	181
बाला (नहरवा) मंत्र	182
दाद ,खुजली, घाव, फोड़ा ठीक मंत्र	182
ज्वर नाशक मंत्र	183
बवासीर ठीक मंत्र	185
औषधि मंत्र	185
बच्चा चुप हो ,बच्चा दूध पीवे मंत्र	185
परदेश गमन लाभ मंत्र	186
खेती संबंधी समस्त मंत्र	186
पुरुष व स्त्रियों की सुन्दरता का मंत्र	187
स्त्रियों का रक्तस्राव बन्द हो मंत्र	187
स्तन पीड़ा नाशक मंत्र	188
चोरी गई वस्तु मिले	188
वृष्टि कारक मंत्र	189
मेघस्तम्भन मंत्र	190
पृथ्वी में से धन निकालने का मंत्र	190
खोया धन व प्राणी प्राप्ति मंत्र	191
अन्य फुटकर मंत्र	**191**
घर में अन्य पुरुष नहीं आय मंत्र	191
घर के लोग सो जाते मंत्र	191
जुआ में जीत मंत्र	191
अदृश्य होने का मंत्र	191
डूबती नाव बच ाने का मंत्र	192
अनाज में कीड़ा नही पड़ने का मंत्र	192
पशु रोग निवारण मंत्र	192
गाय भैंस के दूध बढ़ाने का मंत्र	192
सैनिक घायल नहीं होता मंत्र	192
पथ कीलित हो जाता मंत्र	192
पराधीनता नष्ट मंत्र	192
अपकीर्ति निवारण मंत्र	193
मोक्ष साधन के लिये मंत्र	193
बेचैनी दूर मंत्र	193
भोजन पचाने का मंत्र	193
सम्मान वर्धक एवं लाभ प्रदायक मंत्र	193
कुश्ती जीतने का मंत्र	**193**
बुरे स्वप्न वा अपशकुन निवारण मंत्र	**193**
उपसर्गहर स्तोत्र के ऋद्धि, मंत्र व फल	194
कल्याणमंदिर स्तोत्र ऋद्धि-मंत्र विधि	197
कल्याण मन्दिर स्तोत्र ऋद्धि-मन्त्र द्वितीय विधि	205
विषापहार स्तोत्र ऋद्धि- मंत्र	210
भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र	215
अंकन्याय का चित्र	222-223
तीर्थंकर परिचय बोध चार्ट	224
श्री जिनेन्द्रदेव प्राण प्रतिष्ठा मंत्र	225
गर्भ कल्याणक मंत्र/विधि	225
जन्म कल्याणक मंत्र/विधि	228
तपकल्याणक विधि/मंत्र	231
केवलज्ञान विधि/मंत्र	234
निर्वाण कल्याणक विधि/मंत्र	242

आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु के सूरि मंत्र 243
शासन देवता सूरि मंत्र 244
चरण पादुका प्रतिष्ठा मंत्र 245
शास्त्र (जिनवाणी) प्रतिष्ठा मंत्र 245
गुरु द्वारा दीक्षा(शिष्यव संस्कार)विधि 245
मुनि दीक्षा विधि 247
आर्यिक दीक्षा विधि 252
क्षुल्लक दीक्षा विधि 252
उपाध्याय पद प्रतिष्ठा विधि 253
आचार्य पद प्रतिष्ठा विधि 254

यंत्र अधिकार

यंत्र-विद्या 257
यंत्र संबंधी आवश्यक निर्देश 257
यंत्र लिखने की विधि 260
यंत्र लिखने की समय विधि 260
यंत्र महिमा 260
यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा विधि 261
अथ लघु शांतिधारा 261
सर्व यंत्र पूजन विधि 264
मंगल कलश व यंत्र स्थापन विधि 266
श्री मंगल कलश की आरती 269

यंत्र प्रकरण

सर्व मनोकामना सिद्ध यन्त्र 270
सर्व कार्य सिद्धिदायक मंत्र 270
सर्व विजय यंत्र 276
मुकदमा जीतने का यंत्र 277
युद्ध में विजय यंत्र 277
शस्त्र न लगे यंत्र 277
सर्व रक्षा यंत्र 279
आत्म रक्षा यंत्र 279
सभी भय निवारण यंत्र 280
शत्रु भय नाशक यंत्र 280
चिंताहरण यंत्र 280
भाग्य वृद्धि यंत्र 280
उज्जवल भविष्य बनाता यंत्र 281
व्यापार वृद्धि यंत्र 281
बिक्री अधिक होय यंत्र 282
व्यापार (कारोबार)बांधने का यंत्र 285
व्यापार नजर निवारण यंत्र 285
गड़े धन की प्राप्ति यंत्र 285
चमत्कारी सर्व अनिष्ट निवारक महायंत्र 286
चमत्कारी यंत्र 288
ऋण मुक्ति यंत्र 288
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र 289
लक्ष्मी दाता चमत्कारी यंत्र 292
घर में लक्ष्मी स्थिर रहे यंत्र 292
दरिद्रता नाशक यंत्र 295
सर्व सिद्धिदाता यंत्र 295
सुख शांति दाता का यन्त्र 296
सर्व संकट निवारक यंत्र 297
विघ्न विनाशक यंत्र 298
आपत्ति निवारण यंत्र 298
शीघ्र विवाह हेतु यंत्र 299
इच्छित स्थान पर विवाह आदि यंत्र 299
लड़की ससुराल में रहे यंत्र 300
स्त्री ससुराल ठहरे यंत्र 300
पुत्र प्राप्ति यंत्र 301
संतान प्राप्ति यंत्र 301
गर्भ स्तंभन यंत्र 302
गर्भ रक्षण यंत्र 304
अकाल में प्रसव रक्षा 305
गर्भ ठहरे यंत्र 305
सुख प्रसव यंत्र 306
प्रसूति पीड़ा हर यन्त्र 306
स्त्री कूंख बन्द यंत्र 307
मरे बच्चे होना बन्द हों यंत्र 308
मासिक धर्म बन्द हो यंत्र 308
रक्तस्राव रुके यंत्र 308

मां का दूध वृद्धि यंत्र	309
स्त्री के दूध बढ़ाना यंत्र	309
स्त्री दुग्ध नाशक यंत्र	309
आजीविका प्राप्ति यंत्र	310
सेना में नौकरी यंत्र	310
पदोन्नति यंत्र	310
विदेश यात्रा यंत्र	311
मित्र समागम यंत्र	311
सम्मान वृद्धि यंत्र	311
मूठ भय निवारण यंत्र	312
सर्व उपद्रव नाश यंत्र	312
पिशाच पीड़ा हर यन्त्र	313
भूत प्रेत निवारण यंत्र	313
व्यंतर देव दोष निवारण यंत्र	314
डाकिनी शाकिनी आदि वाधा निवारण यंत्र	318
सर्व जन वश होय यन्त्र	322
सभा वश होय यंत्र	324
राज वशीकरण यंत्र	325
अधिकारी की कृपा यंत्र	**326**
राजा,गुरु प्रसन्न यंत्र	326
देव वशीकरण यंत्र	326
शत्रु वशीकरण यंत्र	327
पति पत्नी की अनमन दूर यंत्र	328
परस्पर प्रीति उत्पन्न यंत्र	328
पति वशीकरण यंत्र	329
पति क्रूरता स्तंभन यंत्र	331
सास ससुर वश होय यंत्र	331
प्रेमिका वशीकरण यंत्र	332
पत्थर दिल भी वश होय यंत्र	332
कामिनी आकर्षण यंत्र	333
स्त्री आकर्षण यंत्र	333
स्त्री वशीकरण यंत्र	333
मोहन यंत्र	334
पक्षी आकर्षण यंत्र	334
उच्चाटन निवारण यन्त्र	334
उच्चाटन यन्त्र	335
क्रोध स्तम्भक यंत्र	335
कलह कराने का यंत्र	335
आपस में झगड़ा कराये यंत्र	337
आपस में जुदाई होती है यंत्र	337
परस्पर प्रीति नष्ट होय यंत्र	337
शत्रु पलायन करे यंत्र	338
शत्रु के घर में क्लेश होय यन्त्र	338
शत्रु बांधने का यंत्र	338
शत्रु का मुख स्तम्भन यंत्र	338
शत्रु का मुँह सुजाने का यंत्र	338
शत्रु भगाने का यंत्र	339
शत्रु नहीं लगे यंत्र	339
शत्रु उच्चाटन यन्त्र	340
शत्रु निंदा नहीं करे यंत्र	340
शत्रु-विजयी यंत्र	340
शत्रु को शूल उठे यंत्र	340
दिन में रात दिखने का यंत्र	341
छल विष निवारण यंत्र	341
कुत्ते का विष दूर होय यंत्र	341
सर्प भय निवारक यंत्र	341
घर में सर्प नहीं आवे यंत्र	341
हाट उजड़ जाय यंत्र	342
मशान जगाने का यन्त्र	342
घर में आग नहीं लगे यंत्र	342
जुआ जीतने का यन्त्र	342
चोर भय निवारण यंत्र	343
खोई हुई वस्तु की प्राप्ति यंत्र	343
खोया गया पशु वापिस आये यंत्र	344
परदेश गया वापिस आये यंत्र	344
लापता व्यक्ति के आने का यंत्र	345
चूहे कपड़े नहीं काटते यंत्र	345
अनाज में कीड़े नहीं पड़ें यंत्र	346
अनाज न घुने यंत्र	346
वृक्ष में फल अधिक लगे यंत्र	346
खेत में पैदावार बढ़ाने का यंत्र	346

टिड्डी खेत न खावे	347
पशु रोग दूर यंत्र	347
घोड़े का रोग ठीक हो यंत्र	347
गाय को बछड़ा प्रदायक यंत्र	347
गाय-भैंस के दूध बढ़ाने का यंत्र	348
मक्खन वृद्धि यंत्र	348
घी वृद्धिकर यंत्र	349
अकाल-मृत्यु-निवारण यंत्र	349
असाध्य रोग निवारण यंत्र	349
सर्व रोग निवारण यंत्र	350
ज्वर-ताप हर चमत्कारी यंत्र	352
पुराना ज्वर नाशक यंत्र	353
अन्तराल ज्वर नष्ट यंत्र	353
आधा शीश दुखना नष्ट यंत्र	355
सिर दर्द नाशक यंत्र	356
बन्द नाक बहे यंत्र	357
कर्ण पीड़ा निवारण यंत्र	357
आंख पीड़ा निवारण यंत्र	357
मुंह का छाला दूर हो यंत्र	358
दाढ़ दुखती अच्छी हो यंत्र	358
दांत दर्द निवारण यंत्र	358
गले की गांठ नाशक यंत्र	358
चित्त भ्रम दूर यन्त्र	359
हृदय घबराहट नाशक यंत्र	359
खांसी निवारण यंत्र	359
पेट का अफारा मिटे यंत्र	359
पेट दर्द निवारक यंत्र	360
वायु गोला का दर्द तुरन्त ठीक यंत्र	360
शूल रोग जाय यंत्र	360
धरन ठिकाने पर आती है	361
अण्डकोष वृद्धि रुके यंत्र	361
नपुंसकता ठीक हो यंत्र	362
वीर्य (शुक्र) स्तंभन यंत्र	362
स्वप्नदोष हर यंत्र	362
वैराग्योत्पत्ति कर यंत्र	363
काम वासना नाशक यंत्र	363
नामर्द बनाने का यंत्र	363
बवासीर मिटे यंत्र	664
मसा हर यंत्र	364
शीतला(चेचक)निवारण यंत्र	365
दाद दूर हो यंत्र	365
पीलिया रोग दूर यंत्र	365
मृगी रोग निवारण यंत्र	366
मंथवाय नाशक यंत्र	367
हिस्टीरिया बन्द हो यंत्र	367
हैजा रोग मिटे यंत्र	367
कागलिया रोग नाशक यंत्र	367
गैष्टिक निवारण यंत्र	367
खुलखुलिया निवारण यंत्र	368
वन भ्रमण कारक यंत्र	368
मार्ग स्तंभन यंत्र	368
बालक रक्षा यंत्र	368
बच्चे का रोना बन्द होने का यंत्र	369
बाल भय हरयन्त्र	369
बालक रोगहर यंत्र	369
बच्चे का सूखना बन्द हो यंत्र	370
नजर नहीं लगे यंत्र	370
नजर दूर करने का यंत्र	370
स्वप्न निवारण यंत्र	371
बुरे स्वप्न दिखना दूर हों यंत्र	372
स्वप्न दिखना बन्द हों यंत्र	372
शुभाशुभ ज्ञान यंत्र	372
विद्या प्राप्ति यंत्र	372
सरस्वती प्राप्ति यंत्र	373
वाणी(वचन) सिद्धि यंत्र	375
परीक्षा में पास होने का यंत्र	376
गृह क्लेश निवारक यन्त्र	377
सर्वोपद्रव नाशक यंत्र	377
वास्तु प्राप्ति यंत्र	377
वास्तु दोष नाशक यंत्र	378
दिक्दोष नाशक यंत्र	379
विशेष यंत्र	380

सर्व सुख प्रदाता यंत्र 380
णमोकार यंत्र 380
सर्व सुखी यंत्र 380
मंगल कलश यंत्र 381
मातृका यंत्र 381
कल्प वृक्ष यंत्र 382
इंद्राणी यंत्र 383
श्री यंत्र 383
नवग्रह शान्ति यंत्र 383
चन्द्र ग्रह अरिष्ट निवारक यंत्र 383
नवग्रह शान्ति यंत्र 384
कालसर्प दोष निवारण यंत्र 386
श्री पार्श्वनाथ यंत्र 387
भगवती पद्मावती महायंत्र 388
कलिकुण्डदण्ड यंत्र 389
देवी पंचांगुली महायंत्र 390
पंचांगुली देवी का **चित्र** 391
सरस्वती यंत्र 391
श्रुतस्कन्ध यंत्र 392
मृत्युंजय यंत्र 393
अन्य फुटकर महायंत्र 394
श्री मणिभद्र महायंत्र 398
महावीर यंत्र 398
श्री घंटाकर्ण महावीर अद्‌भुत 399
ऋषि-मण्डल यंत्र 400
पासा केवली यंत्र 401
अन्य फुटकर पंचकल्याणक संबंधि यंत्र 402
श्री भक्तामर यंत्र 412
श्री कल्याण मंदिर यंत्र 420

तंत्र अधिकार

तंत्र-विद्या 427
तंत्र के प्रकार 428
क्या तंत्र-टोने-टोटको से सफलता मिलती है? 431
ध्यान रखने योग्य विशेष बातें 431
किस दिशा में कोन सा टोटका करें 431
माह तिथि वार के अनुसार टोटके 431
तंत्र-टोनें टोटकों सम्बंधी वनस्पति लाने की विधि 432

तंत्र प्रकरण

रोग निवारक टोटके तंत्र 434
असय बीमारी दूर करने हेतु 434
सर्व ज्वर निवारण तंत्र 436
कान दर्द दूर करने का तंत्र 437
आँख में पीड़ा निवारण तंत्र 437
निद्रा स्तंभन पर तंत्र 437
आधा शीशी का दर्द दूर करने का तंत्र 438
मानसिक तनाव दूर तंत्र 439
नकसीर ठीक तंत्र 439
गूंग बोले तंत्र 439
दाँत (दाढ़)की पीड़ा हर तंत्र 439
वमन (कै) बंद करना 439
हिचकी शांत होय तंत्र 440
खाँसी पर तंत्र 440
श्वांस पर रोग तंत्र 440
हृदय रोग पर तंत्र 440
पेट दर्द निवारण तंत्र 440
घुटने का दर्द निवारण तंत्र 441
एक्जिमा रोग निवारण तंत्र 441
मूत्र रोग निवारण तंत्र 441
दस्तों पर तंत्र 441
बवासीर रोग ठीक होय पर तंत्र 441
मधूमेह पर तंत्र 442
मर्कटिका रोग नष्ट तंत्र 442
सेऊआ होने पर तंत्र **442**
चेचक रोग निवारण तंत्र 442
मोटापा निवारण तंत्र 442
दुर्बलता दूर करने हेतु तंत्र 443

अतिसार रोग नाश हेतु तंत्र	443
सूखा रोग निवारण तंत्र	443
पोलियो निवारण हेतु तंत्र	443
पीलिया निवारण हेतु तंत्र	443
मृगी रोग शान्त हेतु तंत्र	443
बहता रक्त बन्द हो तंत्र	444
सुन्न अंग पर तंत्र	444
कुष्ठ रोग पर तंत्र	444
हड्डी टूटने या मोच आने पर दर्द निवारण	444
बच्चों रोग दूर करने का तंत्र	444
बच्चों के दांत निकलने में सरलता	445
बिस्तर (शय्या) मूत्र निवारण हेतु तंत्र	446
बच्चे का डरना बन्द हो तंत्र	446
नजर लगने पर तंत्र	446
बुरे स्वप्न नाशक तंत्र	447
स्वप्न दोष निवारण हेतु तंत्र	447
नार्मद बनाने के लिए तंत्र	448
वीर्य स्तम्भन हेतु तंत्र	448
संतान प्राप्ति हेतु तंत्र	448
असमय गर्भपात न होय तंत्र	449
फिर रजस्वला हो तंत्र	449
गर्भाव नहीं हो तंत्र	450
मासिक धर्म की परेशानी दूर हेतु तंत्र	450
प्रसव के लिए तंत्र	450
शराब सिगरेट, बीडी, तंबाकू छुड़ाने हेतु	451
घर से भागे व्यक्ति को पुनः बुलाने हेतुतंत्र	451
गृहक्लेश (कलह) निवारण हेतु तंत्र	452
मकान में खुशहाली हेतु तंत्र	453
गृह अशुद्धि पर तंत्र	453
शयन कक्ष पर तंत्र	454
बुद्धिमान होय	**455**
विवाह शीघ्र कैस हो ?	**455**
विवाह विलंब नवारण हेतु तंत्र	**457**
सुखी वैवाहिक जीवन हेतु तंत्र	458
रोजगार की समस्या हल हेतु तंत्र	459
कार्य सफलता हेतु	**459**
व्यापार वृद्धि के विशेष चमत्कारी टोटके	**460**
कर्ज मुक्ति हेतु तंत्र	**464**
धन लाभ हेतु तंत्र	**464**
मनोकामना पूर्ण हेतु तंत्र	**468**
सर्व कार्य सिद्धि	**468**
टोने टोटके का असर खत्म हेतु तंत्र	468
बलाएँ दूर करें	469
परे शानियां दूर करने हेतु	469
दुष्ट (शत्रु) व्यक्ति से पीछा छुड़ाना हेतु तंत्र	470
वाद विवाद में विजय हेतु तंत्र	470
शत्रु भय निवारण तंत्र	470
दुष्मन पर विजय तंत्र	471
राजा की तरह सम्मान मिलें	**472**
जुआ में जीत	472
मुकदमे में विजय प्राप्ति का तंत्र	**472**
अंगूठी बनाने का विधान	473
भूख प्यास न लगे तंत्र	**473**
भूख प्यास ज्यादा हो	473
जमीन या मकान न बिकता हो तो	474
पृथ्वी से गढ़ा धन निकालने का तंत्र	474
खेत वृद्धि का तंत्र	475
पशुओं पर तंत्र	475
सर्प जहर निवारण तंत्र	475
बिच्छू का जहर तंत्र	476
पागल कुत्ता काटने पर	477
मच्छर, मक्खी आदि भगाने हेतु टोटका	477
खटमल पर तंत्र	478
चींटियाँ भगाने का उपाय	478
चूहे भगाने का उपाय	478

मनुष्यों की भीड़ भगाने के लिए	478
यक्षिणी सिद्ध	478
भूत भगाने का टोटका	479
हाथी भय दूर तंत्र	480
अदृश्य प्रयोग	481
कुछ अन्य तांत्रिक प्रयोग (टोटका)	481
नक्षत्र अधिकार	484
नक्षत्र कल्प	486
बूटियों के पर्यायवाची नाम	487
चार्ट में देखें जन्म नक्षत्र के वृक्ष	488
आकर्षण संबंधी तंत्र प्रयोग	489
सम्मोहन सम्बन्धी तंत्र-प्रयोग	490
मोह न होय	493
वशीकरण सम्बन्धी तंत्र-प्रयोग	493
पुरुष-वशीकरण सम्बन्धी तंत्र प्रयोग	496
स्त्री-वशीकरण सम्बन्धी तंत्र प्रयोग	498
स्तंभन संबंधी तंत्र प्रयोग	501
मारण संबंधी तंत्र प्रयोग	502
उच्चाटन संबंधी तंत्र प्रयोग	502
कल्प विभाग	503
रूद्राक्ष कल्प	504
मयूर शिखा कल्प	504
सहदेवी कल्प	504
बहेड़ा कल्प	505
निर्गुण्डी कल्प	505
हाथा जोड़ी कल्प	505
श्वेतार्क कल्प	506
बांदा नक्षत्र कल्प	506
लक्ष्मणा कल्प	508
एकाक्षी नारियल कल्प	508
गोरखमुंडी- कल्प	509
विजया कल्प	510
सरपंखा कल्प	510
श्वेतगुंजा कल्प	510
दक्षिणावर्त शंख कल्प	511
गौरोचन कल्प	511
रक्तगुन्जा कल्प	511
रक्तगुंजा कल्प	512
लक्ष्मणा कल्प	513
लजालु (छुइमुइ) कल्प	514
हीरा बनाने की विधि	514
सोना-चाँदी बनाने का तंत्र	514
काल सर्प दोष / मंगल दोष निवारण हेतु	516
ग्रह दोष निवारण वनस्पति मूल (जड़) तन्त्र	516
ग्रह दोष निवारण तन्त्र स्नान (मतान्तर से)	517
सर्व ग्रह पीड़ दूर करने हेतु औधीषय स्नान	518

स्वास्थ्य अधिकार

औषध क्रिया की परिभाषा	519
बूटियों के पर्यायवाची नाम	520

चिकित्सा प्रकरण

रोग तथा दोष विज्ञान	522
वात	523
वायु कुपित होने के कारण	**523**
पित्त	524
पित्त प्रकोप के कारण	**524**
कफ	524
कफ प्रकोप के कारण	**525**
वात प्रकोप के लक्षण	**525**
पित्त प्रकोप के लक्षण	**525**
कफ प्रकोप के लक्षण	**525**
वायु कोप का समय	**526**
पित्त कोप का समय	**526**
कफ कोप का समय	**526**
वात प्रकृति का लक्षण	**526**
पित्त प्रकृति का लक्षण	**526**
कफ प्रकृति वाले के लक्षण	**526**
द्विदोषज त्रिदोषज प्रकृति लक्षण	**526**
वात शामक उपाय	**526**
पित्त शामक उपाय	**527**

कफ शामक उपाय 527
रोगी की मृत्यु की पहिचान 527
ज्वर रोग के कारण 528
वात ज्वर 529
पित्त ज्वर 529
कफ ज्वर 530
वात कफ ज्वर 531
कफ पित्त ज्वर 531
वात पित्त ज्वर 531
सन्निपात ज्वर 532
जीर्ण-ज्वर 532
मलेरिया बुखार 533
टाईफाइड (मियादी) ज्वर 533
निमोनिया-ज्वर 533
1. यदि कफ में रक्त आता हो तो 534
2. भूत ज्वर 534
3. ज्वर में प्यास ज्यादा होने पर 534
4. ज्वर में खांस होय 534
5. ज्वर में वमन होने पर 534
6. ज्वर में श्वास होने पर 535
7. ज्वर में मूर्छा होने पर 535
8. ज्वर में कब्ज तथा अफारा 535
10. गर्मी के ज्वर में वमन होना 535
11. ज्वरातिसार 535
12. ज्वर की निर्बलता 535
13. लू लगकर ज्वर होना 535
14. मौसम का ज्वर 535
15. गर्दन तोड़ व कमर तोड़ बुखार 535
16, साधारण ज्वर 535
जुकाम रोग 536
सिर-रोग 536
आधासिर दर्द 536
1. वायु से सिर दर्द 537
2. पित्त से सिर दर्द 537
3. कफ की मस्तक पीड़ा 537
4. मस्तक की स्नायु सम्बन्धी पीड़ा 537
5. जुकाम से सिर दर्द 537
6. मस्तक पीड़ा, भंवल व चक्कर आना 537
7. मस्तक वेग 537
8. मस्तक में रुधिर का जमाव 537
9. मस्तक का दर्द दूर के लिए 537
स्मरण-शक्ति 538
अति बुद्धि बढ़े 538
गंजापन दूर करने हेतु 539
बाल बढ़ जाते 540
भीघ्र के ा पतन 540
बाल दूर करना 540
बाल काले बनाना 540
बालों को काला करना 541
बालों की सफेदी नश्ट 542
पित्त रोग 542
तृषा रोग 542
खाँसी रोग 543
सूखी खाँसी 543
श्वास-खाँसी 544
दमा (श्वास) रोग 546
क्षय (तपेदिक) रोग 546
बालकों के ज्वर तथा अन्य रोग 547
बिस्तर (शय्या) मूत्र निवारण 547
दन्त-रोग 547
पाइरिया 548
दाँतों के मसूड़ों तथा मुँह का रोग 548
मुख के छाले 549
मुख से खून आने के रोग 549
मुख की दुर्गन्ध दूर करने का उपाय 549
मुहांसे दूर (मुँह पर धब्बे का रोग) 550
मुख सुन्दर के लिए 550
गले के रोग 550
स्वर-भंग- 551
हकलाना दूर होता 552

हिचकी-रोग 552
खट्टी डकारे 552
नेत्र रोग 553
कान-रोग 554
नाक-रोग 555
वमन-रोग 555
वमन कराने के उपाय 556
हैजा-रोग 556
पत्थरी रोग 556
लीवर (यकृत) रोग 557
तिल्ली (लिप) रोग 557
हृदय रोग 557
रक्त चाप (ब्लड प्रेशर) 558
जलोदर-रोग 559
उदर (पेट) रोग 559
पेट की धारियां मिटें 560
कफोदर-रोग- 560
पेट की गैस (वायु) 560
अम्ल पित्त 561
धरण (पेचुटी) नाभि रोग 561
कब्ज रोग 561
मंदाग्नि रोग 562
अरुचि रोग 562
पेट का कृमि रोग 562
पित्त का अतिसार 562
आम अतिसार 563
भस्मक रोग 563
शरीर का मोटापा दूर करना 563
सदा जवान रहें 563
सर्व वात रोग 563
जोड़ों का दर्द 564
घुटनों का दर्द 565
गठिया रोग 565
शून्य-वात-लकवा रोग 565
पुस्तवाय(हाथ पैरों में अधिक पसीना आना) 566
कम्पवाय (हाथ-पैर काँपना) 566
शून्यवात 566
अर्द्धागं-वाय 566
आम -वात 566
लकवा रोग 566
हाथ-पैरों की ऐंठन (बाईन्टे) तथा चोट पर 566
चोट लगकर सूजन आने पर 567
कमर और पसली पीड़ा 567
सूजन-रोग (शोध रोग) 568
मृगी रोग 568
उन्माद (पागलपन) रोग 569
डिप्रेशन (अवसाद) दूर करने हेतु 569
मूर्च्छा रोग 569
चक्कर आना रोग 570
पाण्डु रोग 570
पिलिया रोग 570
पोलियो रोग 571
कुष्ठ (कोढ़) रोग 571
वभूति रोग 572
श्वेत कुष्ठ रोग 572
सफेद दाग 572
चर्म रोग 572
बवासीर (मस्सा) रोग 573
मूत्र(पेशाब)रोग 575
निद्रा-रोग पित्ति-रोग 577
पित्ति (पिस्ती) रोग 578
प्रमेह और मधुमेह रोग 578
मधुमेह रोग 578
डायरिया 578
मेद रोग 579
शरीर में पसीने की दुर्गन्ध 579
काँख की दुर्गन्ध के लिए 579
कैंसर ,अल्सर रोग 579
खुजली दूर 580
व्रण (फोड़ा-फुन्सी) रोग 580

दाद और पाँव तथा खुजली रोग 581
घाव ठीक के बाद सफेद दाग का उपाय 581
अग्नि से जले हुए तथा अन्य उपाय 581
हड्डी टूटने पर 582
काँच निकलना 582
अधो वायु बंध का उपाय 582
हाथ पाँवों की ब्याऊ फटने पर 582
त्वचा **583**
पाँव की एड़ी का दर्द **583**
नख टूटने पर **583**
हाथी पांव 583
घावों पर लगाने 583
गाँठ के लिए लेप 583
नहरुआ (बाला) रोग 584
सर्प के काटने पर 584
बिच्छुके काटने पर 584
कुत्ते द्वारा काटा निष्प्रभावी होय 585
बर्र-ततैया के जहर पर 585
सिर की जूँ या लीक 586
जानवरों के काटने पर जहर चढ़ने पर उपाय 586

स्त्री गुप्त रोग चिकित्सा

प्रदर-रोग 586
श्वेत प्रदर रोग 587
रक्तार्श (रक्त प्रदर) 588
रुका हुआ मासिक धर्म खुलने के लिए 588
मासिक धर्म पुनः होय 588
रजोधर्म तुरन्त ही होने लगता 588
ऋतु धर्म नष्ट के लिए 589
गर्भ धारण करना 589
पुत्री प्राप्ति हेतु 591
पुत्र(कन्या)प्राप्ति 593
गिरता गर्भ रोकना 593
गर्भ गिराने के लिए 593
गर्भधारण नहीं होगा 594
सुख से प्रसव होय 594
दूध बढ़ाने के लिए 594
स्तन पीड़ा व अन्य रोगों का उपाय 595
स्तनों की शिथिलता दूर 595
योनि दोष दूर हो जाता 596

पुरुष गुप्त रोग अधिकार

गुप्तेन्द्रिय रोग 597
अण्डकोष वृद्धि रोग 597
शुक्राणुओं की वृद्धिहेतु 598
स्वप्न दोष निवारण 598
वीर्य स्तम्भन 599
बल पुरुषार्थ (शक्ति वर्धक) 600
दुर्बलता निवारण 601
नपुंसकता,वीर्य धातु रोग 601
कामेन्द्रिय (लिंग) में दृढता 602

180.विशेष नुस्खे

दाँत मन्जन 603
हींग्वष्टक चूर्ण 603
लवण भास्कर चूर्ण 603
संजीवनी बूटी 604
अमर सुन्दर बटी 604
चन्द्र-प्रभा बटी 604
बाम 604
पंचसम चूर्ण 604
कस्तूरी भैरव रस 605
नवजीवन 605
आरोग्यवर्द्धनी 605
वज्र लेप तैयार करने की विधि-अर्थ 605
विशेष नुक्से 605
गुणकारी लौंग 606
तेजी मन्दी निकालने की विधि ६०९
मकर संक्रान्ति फल 611
संक्रान्ति से गणित द्वारा तेजी-मंदी का परिज्ञान 612
तेजी मंदी के उपयगी पांच वारों का फल 612
संक्रांति के वारों का फल 613
रवि नक्षत्र फल 613

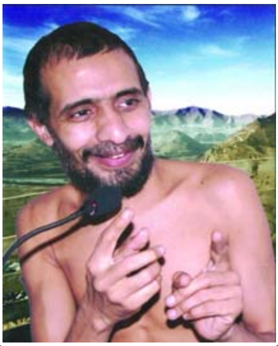

आद्यमिताक्षर

वर्तमान समय में लोगों का रुझान मिथ्यात्व की ओर द्रुतगति से आकृष्ट हो रहा है एवं अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं का निराकरण करने के लिए नाना प्रकार के कुदेवी-देवताओं की पूजा-उपासना आदि करने अथवा मिथ्या तापसी बाबाओं, पंडितों, पुरोहितों एवं महन्तों का प्रश्रय करके मिथ्या मंत्र-यंत्र-तंत्र के जंजाल में फँसकर कुछ पाने की बजाय अपना सर्वस्व खो डालते हैं और दुखी पीड़ित होकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। अत: ऐसे लोगों को उपरोक्त समस्याओं से मुक्ति दिलाने हेतु हमने अपनी साधना, स्वाध्याय एवं अभ्यास के माध्यम से खोज कर कुछ महान मंत्र-यंत्र-तंत्र आदि का संग्रह करके इस महान ग्रन्थ का निर्माण किया है। जो आप सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

वैसे भी भारत वर्ष अनादि काल से ज्ञान विज्ञान की गवेषणा, अनुशीलन एवं अनुसंधान की भूमि रहा है। विद्याओं की विभिन्न शाखाओं में भारतीय मनीषियों, ऋषियों ने जो कुछ काम किया है, नि:सन्देह वह प्रशंसनीय रहा है। आदि मानव से आज तक क्या-क्या नहीं किया गया। अग्नि की खोज की, ट्रेन-प्लेन और मोटर की खोज की। यहां तक कि मानव को महावीर, नर को नारायण, इन्सान को ईश्वर और आत्मा को परमात्मा बनाने तक की खोज की है।

इसी गवेषणा के परिणाम स्वरूप मंत्र-यंत्र-तंत्र का भी प्रस्फुटन हुआ है। मंत्र में असीम शक्ति होती है, आपने देखा होगा कि जब किसी व्यक्ति को सर्प काट देता है तो साधक मंत्र के प्रभाव से उस सर्प को बुलाकर उसका जहर निकलवा लेता है और उस सर्प डसे व्यक्ति को ठीक कर देता है। अथवा जब किसी व्यक्ति को भूत-व्यन्तर आदि की बाधा हो जाती है, भूत आदि उसे सताने लगते हैं, तो मंत्री साधना के बल से उसको बुलाकर पूछता है कि आपका नाम क्या है, आप इस व्यक्ति को क्यों परेशान करते हैं? आदि। फिर वह मंत्री (साधक) कहता है- अब आप इसे छोड़कर जाइये, इसे परेशान मत करिये। और जब वह भूत आदि नहीं मानता है तो साधक मंत्र के प्रभाव से उसे भगा देता है।

जैन परम्परा के अनुसार मंत्रविद्या का संबंध अत्यन्त प्रचीन है तथा अङ्गपूर्व ज्ञान से

जुड़ा हुआ है। सर्वज्ञ भाषित, गणधर देव द्वारा ग्रंथित द्वादशांग में बारहवां अंग दृष्टिवाद है। उसके पांच विभाग हैं- १.परिकर्म, २.सूत्र, ३.प्रथमानुयोग, ४.पूर्वगता और ५.चूलिका। जिसमें पूर्वगता के चौदह पूर्व होते हैं, उनमें दसवां विद्यानुवादपूर्व है। जो एक करोड़ दस लाख पद का माना गया है। विद्यानुवाद पूर्व मुख्यतः साधनाओं, सिद्धियों एवं उनके साधकों से संबंधित यंत्र, मंत्र, तंत्र और विद्याओं का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों में मतिसागर द्वारा संग्रहीत विद्यानुशासन की पाण्डुलिपियां मिलती है। जयपुर के शास्त्र भण्डार में विद्यानुवाद के नाम से ग्रन्थ उपलब्ध है जो मल्लिषेण द्वारा निबद्ध है। इसके अतिरिक्त गणधर वलय मंत्र, घंटाकर्ण कल्प, भैरवपद्मावती कल्प, ज्वालामालनी कल्प, ऋषिमंडल कल्प, भक्तामर कल्प, कल्याणमंदिर कल्प, णमोकारमंत्र कल्प आदि अनेक ग्रंथ मंत्र-यंत्रों से भरपूर हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य अपना मानव जीवन सफल व सार्थक कर सकता है।

वैसे भी मानव जीवन अति दुर्लभ है। उसका अन्तिम साध्य आवागमन या जन्ममरण के बन्धन से उन्मुक्त होना है, जिसका साधन धर्म की साधना- आराधना है। धर्म का आधार मानस की पवित्रता, भावनाओं की उज्ज्वलता, तपमूलक आचार का अनुसरण है, पर केवल आदर्श की परिधि में नहीं, व्यवहारिक भूमिका पर जरा विचार करें, यह सब कब सध सकता है, जब मनुष्य के घर की स्थिति सन्तोषजनक हो। दूसरे शब्दों में उसे दैनंदिन जीवन-निर्वाह की समीचीन व्यवस्था हो, अधिक स्पष्ट कहें तो उसका सांसारिक जीवन सुखमय हो। जिस व्यक्ति के पास दोनों समय के भोजन की व्यवस्था नहीं है और रहने को स्थान तक नहीं है, जिसके बच्चे क्षुधा से पीड़ित रहते हैं, रुग्ण होने पर जिन्हें औषधि तक उपलब्ध नहीं होती, क्या उनके लिए संभव होगा, वे अपने को आत्म-ध्यान में रमा सकेंगे? व्यवहार की भूमिका पर सोचने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ऐसा असंभव नहीं तो दु:संभव अवश्य है।

शायद कतिपय मन्त्र-विद्या वेत्ताओं और मंत्राराधकों के मानस में यह आया हो कि जो कुछ उन्होंने अर्जित किया है, उससे वे समाज को लाभान्वित कर सकें ताकि श्रद्धालु लोग उन प्रयोगों के द्वारा पीड़ा, रोग, शोक व कष्ट आदि से छुटकारा पा सकें, शान्ति, सुख-समृद्धि अर्जित कर सकें। अतएव उन्होंने मन्त्र, तंत्र व यंत्र- जिन्हें प्राय: गोप्य रखने की परम्परा रही है, उन्हें अधिकारी जनों के समक्ष उद्घाटित किये, जिससे लोग लाभान्वित हुए और आज भी हो रहे हैं।

भगवान् महावीर के लगभग डेढ़ शताब्दी बाद भद्रबाहु आचार्य द्वारा रचित उवसग्गहर स्तोत्र, तदनन्तर सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित कल्याणमन्दिर स्तोत्र, मानतुंग सूरि द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र, नन्दिषेण मुनि द्वारा रचित शान्ति स्तवन आदि मंत्रशास्त्र की

महान् निधियाँ हैं। इन दो हजार वर्ष के ज्ञात इतिहास में आचार्य सिद्धसेन दिवाकर, आचार्य पादलिप्त, आचार्य वज्रस्वामी, आचार्य नागार्जुन, आचार्य हरिभद्र, आचार्य हेमचन्द्र, आचार्य जिनदत्त, आचार्य जिनप्रभ आदि अनेक महाविद्वान, वैराग्यवान् साधक आचार्य हुए हैं जिनके द्वारा रचित महा प्रभावशाली मन्त्र, यंत्र, तंत्र आदि ग्रन्थ आज भी कहीं कहीं उपलब्ध हो सकते हैं। पांचवीं शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी तक पांच सौ वर्षों में इस रहस्यमय विद्या पर केवल बौद्ध भिक्षुओं ने ही दो-ढाई हजार ग्रंथ रच डाले थे। तिब्बत, चीन, लंका, मंगोलिया, बर्मा, कम्बोडिया आदि देश तो तांत्रिक बौद्ध लामाओं के गढ़ थे।

हमारे आगमिक ग्रन्थों में यद्यपि मन्त्र-विद्या का उल्लेख उपलब्ध नहीं हो सका, पर पारम्परिक प्रसिद्ध जनश्रुति के आधार पर यह मान्यता चली आ रही है। लेकिन कुछ समय उपरान्त हमारे महान आचार्यों ने सोचा कि कहीं स्वल्प सत्व, धैर्य व गंभीर हृदय वाले साधक इसका दुरुपयोग न कर लें, इस जनहित की भावना से पूर्व-आचार्यों ने अपने शिष्यों को इस अध्ययन की वाचना देना बन्द कर दिया, जिसके परिणाम स्वरूप शनैः-शनैः कालक्रम से मंत्र विद्या का अध्ययन विलुप्त हो गया।

वैसे हमारे पूर्वाचार्यों को अनेकों विद्याएं सिद्ध थीं। आचार्य कुन्दकुन्द महाराज विद्या के बल से ही विदेह क्षेत्र गये थे। कहा जाता है कि वह लौटते समय अपने हाथ में तन्त्र मंत्र का ग्रन्थ भी लाये थे किन्तु वह मार्ग में लवण समुद्र में गिर गया। और भी कहा है कि एक बार गिरनार पर्वत पर श्वेताम्बरों के साथ उनका विवाद हो गया, तब उन्होंने वहां ब्राह्मी देवी के मुख से कहलवाया था कि ''दिगम्बर निर्ग्रन्थ मार्ग ही सच्चा है।'' इससे ज्ञात होता है कि वह मंत्र- तंत्रों के ज्ञाता थे और उन्हीं के शिष्य आचार्य उमास्वामी जी महाराज को आकाश गामिनी विद्या प्राप्त थी, उनके शिष्य आचार्य पूज्यपाद जी महाराज भी तंत्र विद्या के प्रयोग से विदेह क्षेत्र में साक्षात विराजमान भगवान सीमंधर स्वामी के दर्शन करने गये थे। आचार्य वादिराज जी महाराज ने कारणवसात् स्तोत्र विद्या से कुष्ठ रोग दूर किया।

● आचार्य समन्तभद्र स्वामी महान मन्त्रवेत्ता थे उन्होंने अपने मंत्रों के प्रभाव से बनारस नगरी में शंकरजी की पिण्डी में से चन्द्रप्रभ की प्रतिमा को प्रगट कर दिया था। इस तथ्य का समर्थन श्रवणबेलगोला के शिलालेख में मिलता है-

बन्धो भस्मक-भस्म सात्कृति-पटु पद्मावती देवता।
दत्तोदात्त-पदस्व-मन्त्र वचन-व्याहूत-चन्द्रमत्रः।
आचार्यस्य समन्तभद्रगण भृधेनेह काले कलौ,
जैनंवर्त्म समन्तभद्रय भवद्‌भद्रं समन्तान्मुहूः॥

इसके अतिरिक्त आचार्य समन्तभद्र पर पद्मावती देवी की विशेष कृपा थी जो मंत्रों की आराध्य देवी मानी जाती है।

- आचार्य अकलंक देव पर कुसुमांडिनी देवी प्रसन्न थी और उन्होंने कुसुमांडिनी देवी को सिद्ध कर लिया था। ब्रह्म नेमीदत्त आराधना कथाकोश और मल्लिषेण प्रशस्ति से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि अकलंक देव ने हिम-शीतल राजा की सभा में शास्त्रार्थ करके तारा देवी को परास्त किया था।
- आचार्यों के पश्चात् देश में भट्टारकों का युग आया और वे ६००-७०० वर्षों तक समाज में सर्वाधिक प्रतिष्ठा एवं सम्मान को प्राप्त हुए। वह मंत्रों के विशेष साधक होते थे। सूरत शाखा के भट्टारक मल्लिभूषण ने पद्मावती देवी की आराधना की थी, तथा लाडबागड गच्छ के भट्टारक महेन्द्रसेन ने क्षेत्रपाल को सम्बोधित किया था। मंत्र साधना द्वारा भट्टारक सोमकीर्ति ने पावागढ़ में और भट्टारक मलयकीर्ति ने आंतरी में यह चमत्कार किया था कि सरस्वती की पाषण मूर्ति के द्वारा दिगम्बर सम्प्रदाय का प्राचीनत्व सिद्ध किया।
- भट्टारक प्रभाचन्द्र तुगलक वंश के शासन काल में हुए जिन्होंने देहली विहार के समय बादशाह के पंडित राधोचेतन से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की मंत्र शक्ति से पालकी का आकाश गमन, अमावस्या का पूर्णिमा में परिवर्तन, एवं कमण्डलु में जल को विपक्षी द्वारा मदिरा में परिवर्तन कर देने पर उसे पुष्पों में परिवर्तन कर देने जैसे अनेक चमत्कार किये थे।
- आचार्य सोमकीर्ति काष्ठासंघ के ८७वें भट्टारक थे संवत् १५१८ आषाढ़ शुक्ल अष्टमी को भट्टारक पद पर अभिषिक्त हुए और सुलतान फिरोजशाह के शासन काल में पावागढ़ में पद्मावती देवी की कृपा से आकाश गमन का चमत्कार दिखाया था।
- भट्टारक जगत्कीर्ति संवत् १७४५ में चांदखेड़ी प्रतिष्ठा महोत्सव में, जब एक श्वेताम्बर यति द्वारा रथ को मंत्र से कील दिया गया तब भट्टारक जगत्कीर्ति जी ने अपने मंत्र शक्ति के प्रभाव से रथ को बिना हाथियों के ही चला दिया था।
- संवत् १७६१ में करवर (हाड़ौती) प्रतिष्ठा महोत्सव में कुछ यतियों ने अपनी मंत्र शक्ति से खाद्य पदार्थ को आकाश में उड़ा दिया तब भट्टारक जगत्कीर्ति ने अपने कमण्डलु में से पानी छिड़क कर विघ्न शान्त किया और सामग्री को वापिस गिराया था।

आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व महान आचार्य श्री अर्हद्वलि जी महाराज ने दक्षिण भारत के समस्त दिगम्बर संतों का सम्मेलन किया था, तब वहीं से श्रुत संवर्धन हेतु धरसेन आचार्य ने दो साधुओं को बुलवाया था। और जब पुष्पदन्त भूतबलि दो महाराज आए तो उनकी ज्ञान परीक्षा के लिए महान मंत्रवेत्ता आचार्य धरसेन महाराज ने उन दोनों मुनिराजों को दोष पूर्ण मंत्र सिद्ध करने को दिये थे, लेकिन उन महान ज्ञानी

मुनिराजों ने जब मंत्र सिद्ध किया तो मालूम हुआ कि यह मंत्र शुद्ध नहीं है। तब उसे सही करके सिद्ध किया था। शायद इस कहानी से आप सभी लोग परिचित होंगे। इस प्रकार के अनेकों उल्लेख जैन आगम में आज भी उपलब्ध हैं।

- पुद्‌मपुराण में लिखा है कि रावण को ग्यारह सौ विद्यायें प्राप्त थी जिसके प्रभाव से वह नारायण के अतिरिक्त किसी से भी पराजित नहीं हो सकता था।
- श्रेष्ठि जिनदत्त को दहेज में अनेक विद्यायें प्राप्त हुई थी। दे. जिनदत्त चरित्र
- हनुमान विद्याबल के प्रभाव से ही लंका दहन में सफल हुये थे।

श्रीपाल चरित्र में कथानक आता है कि जिस समय रत्नमंजूषा के पिता विवाह योग्य वर की खोज में थे, तब मुनिराज से पूछा- गुरुदेव! मेरी पुत्री का विवाह कब किससे होगा? गुरुदेव अवधिज्ञान के धारी थे, अतः उन्होंने कहा- 'श्रेष्ठी! जो यह सहस्त्रकूट चैत्यालय बहुत समय से बन्द है, जिस महापुरुष के आगमन से इसके द्वार खुल जायेंगे वही तुम्हारी पुत्री का योग्य वर होगा।' इस प्रकार प्रथमानुयोग भी साधुओं के उपकारों से भरा पड़ा है।

मैना सुन्दरी को भी शान्ति का मार्ग- भयंकर कुष्ठ रोग निवारण का मार्ग जंगल में किसने बताया था? मात्र दिगम्बर साधु ने। क्योंकि सच्चे दिगम्बर संत अपाय-विचय धर्मध्यानी होते हैं। और अपाय विचय धर्म ध्यान- मंत्र-यंत्र द्वादशांग के अंग हैं। इसलिए जो साधक दुखी प्राणी के दुखों को दूर करने का चिन्तन करता है वही अपाय-विचय ध्यानी साधक कहलाता है, लेकिन हां उसे आजीविका का अंग न बनाएं। मात्र धर्म प्रभावना व परोपकार की दृष्टि से साधक मंत्रों का प्रयोग कर सकता है। और फिर वैसे भी अपाय-विचय धर्मध्यान के महानेता के चरणों में जो भी जाता है उसका संकट दूर हो ही जाता है। और दूसरी बात संसार में संत, सरिता और सूर्य ही सच्चे परोपकारी हुआ करते हैं।

शायद इसलिए जैन आचार्यों, यतियों, सन्तों ने सूक्ष्म व गम्भीर गवेषणा करके अनेक उपयोगी मंत्रों, यंत्रों व तंत्रों की रचना की और उनका सफल प्रयोग भी किया, लेकिन प्रयोग अत्यन्त आवश्यकता पड़ने पर किया और वह भी केवल परोपकार या संघीय प्रभावना की दृष्टि से किया। यदि आज पूर्ण रूप से खोज की जाए तो निश्चित ही बहुत बड़ा उपयोगी साहित्य मन्त्र विज्ञान नष्ट हो चुका है। और जो शेष बचा है उसे समझने वाले नहीं हैं, क्योंकि मंत्रों को समझना बड़ा मुश्किल काम है और यदि कोई समझता-जानता है तो वह किसी दूसरे को नहीं बतलाना चाहता, इसलिए भी बड़ी मुश्किल होती है; क्योंकि कुछ मंत्रों के अक्षर छूटे हुए हैं, कुछ की विधि छूटी हुई है, किसी का सही अर्थ समझ में नहीं आता आदि अनेकों परेशानियां मंत्रों को पढ़ने में आती हैं।

मैंने एक मंत्र पढ़ा था, उसका विधि विधान भी लिखा था और फल में लिखा कि

मन्त्र को भुजा पर बांधने से 'निकिडा व निकिशा तन्रतु ड़छो तीजा' है। काफी सोचने के बाद मुझे मालूम हुआ कि ये तो उल्टे अक्षरों में लिखा है, जैसे डाकिनी शाकिनी तुरन्त छोड़ जाती हैं आदि।

आपके मन में प्रश्न हो सकता है- आखिर मंत्र-यंत्र-तंत्र है क्या? तो मेरी दृष्टि से यह एक वैज्ञानिक, अभूतपूर्व चमत्कारी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से साधक चिन्तित फल प्राप्त करता है। जैसे सूर्य की किरणों को एक कांच (लेन्स) के माध्यम से एकत्रित करने पर अग्नि उत्पन हो जाती है, ठीक उसी प्रकार मन्त्र के माध्यम से मन को एकत्रित करके ऊर्जा (शक्ति) उत्पन्न हो जाती है, जिससे सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि मन्त्र फैली हुई ऊर्जा (शक्ति) को एकत्रित करता है, बढ़ाता है। इस विद्या में मुख्यत: तीन विशिष्ट क्रियाओं का समावेश होता है- मन्त्र-यन्त्र और तन्त्र।

मंत्र- विशिष्ट प्रभावक शब्दों द्वारा निर्मित किया हुआ वाक्य मंत्र कहा जाता है। उसका बार-बार जाप करने पर शब्दों के पारस्परिक संघर्ष के कारण वातावरण में एक प्रकार की विद्युत तरंग उत्पन्न होने लगती है जिससे साधक की इच्छित भावनाओं को बल मिलने लगता है। फिर वह जो चाहता है, वही होता है। मंत्रों की सिद्धि के लिए उनके हिसाब से जाप की विभिन्न मात्रा में शब्द, अंक तथा विभिन्न प्रकार के पदार्थों से बनी मालाएँ, विभिन्न प्रकार के फल-फूल, आसन, दिशाएं, क्रियाएं इत्यादि का भी विशेष महत्व होता है।

यंत्र- जो किसी विशिष्ट प्रकार के कागज, पत्र या धातु पर, किसी विशिष्ट प्रकार के निर्धारित अंकों, शब्दों या आकृतियों को बनाकर विशेष प्रकार के मंत्रों से अभिमंत्रित किया जाता है उसे यन्त्र कहते हैं। फिर उस यंत्र को किसी ताबीज आदि में रखकर किसी की बांह में बांध दिया जाता है या गले में लटका दिया जाता है अथवा किसी स्थान पर रख दिया जाता है अथवा चिपका दिया जाता है, जिससे कार्य सिद्धि होती है।

तंत्र- तन्त्र का सम्बन्ध विज्ञान से है। इसमें कुछ ऐसी रसायनिक वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, जिससे एक चमत्कार पूर्ण स्थिति पैदा की जा सके ; लेकिन किसी प्रकार के मंत्र-यंत्र-तंत्र के प्रयोग के लिए बारह प्रकार की शुद्धियों का होना आवश्यक है।

१.द्रव्यशुद्धि :- पंचेन्द्रिय तथा मन को वश में करने के लिए, शरीर को स्वच्छ व निर्मल रखना द्रव्य शुद्धि है; लेकिन बाह्य द्रव्य शुद्धि के साथ अन्तरंग द्रव्य शुद्धि भी अनिवार्य है। अर्थात् जाप करने के पहले यथाशक्ति अपने अन्दर के विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, माया आदि) को हटाना आवश्यक है; क्योंकि यहां द्रव्यशुद्धि का अभिप्राय पात्र की अन्तरंग शुद्धि से है।

२. क्षेत्रशुद्धि :- निराकुल स्थान, जहां किसी प्रकार का शोरगुल /आवाज न होती हो, डॉस- मच्छर आदि बाधक जन्तु न हों, चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने वाले उपद्रव एवं शीत-उष्ण की बाधा न हो, ऐसा एकान्त निर्जन स्थान मंत्र साधना के लिए उत्तम है।

अर्थात् शान्तप्रिय स्थान, जैसे-मन्दिर-चैत्यालय, नदी- सरोवर का किनारा, तीर्थक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र आदि मंत्र साधना के लिए उपयुक्त स्थान हैं।

३. **समयशुद्धि** :- प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या समय मन्त्र-आराधना के लिए उपयुक्त समय है। वैसे कालशुद्धि के अन्तर्गत मन्त्र जाप का प्रारंभिक समय भी लिया जाता है। अतः शुभ-दिन, शुभ-तिथि, शुभ-नक्षत्र, शुभ-लग्न, शुभ-योग और शुभ-अमृत-लाभ चौघड़िया में जाप प्रारंभ करना चाहिए

४. **आहार शुद्धि** :- मंत्र-साधक का आहार सात्विक व परिमित होना चाहिए। क्योंकि राजसिक व तामसिक आहार से मंत्र साधना में मन नहीं लगता तथा प्रमाद आता है। अतः साधक को शुद्ध, शाकाहारी, सात्विक, भूख से कम भोजन लेना चाहिए।

५. **संबंध शुद्धि** :- साधक को सच्चे आस्तिक लोगों के साथ रहना चाहिए जिससे उसका मंत्र एवं मंत्र प्रदाता पर विश्वास बना रहे; क्योंकि मंत्र या मंत्र प्रदाता पर विश्वास न होने से मंत्र सिद्ध नहीं होता।

६. **आसन शुद्धि** :- काष्ठ, शिला, भूमि, चटाई या शीतलपट्टी पर पूर्वदिशा या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पद्मासन, अर्धपद्मासन, खड्गासन, या सुखासन पर स्थिर होकर क्षेत्र तथा काल का प्रमाण करके मौन पूर्वक जाप करना चाहिए।

७. **विनयशुद्धि** :- जिस आसन पर बैठकर जाप करना हो, उस आसन को सावधानी पूर्वक ईर्यापथ शुद्धि के साथ साफ करना चाहिए तथा जाप करने के लिए नम्रता पूर्वक भीतर का अनुराग भी रहना चाहिए। क्योंकि जाप करने के लिए जब तक भीतर का उत्साह नहीं होगा, तब तक सच्चे मन से जाप नहीं किया जा सकता।

८. **मन शुद्धि** :- विचारों की गन्दगी का त्याग कर मन को एकाग्र करना, चंचल मन इधर-उधर न भटकने पाये इसकी चेष्ठा करना, मन को पूर्णतया पवित्र बनाने का प्रयास करना ही इस शुद्धि में अभिप्रेत है।

९. **वचन शुद्धि** :- धीरे-धीरे साम्यभाव-पूर्वक मन्त्र का शुद्ध जाप करना, अर्थात् उच्चारण करने में अशुद्धि न होने पाये इसका विवेक रखना वचन शुद्धि है। मन ही मन भी जाप किया जा सकता है।

१०. **काय शुद्धि** :-शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर यत्नाचारपूर्वक शरीर को शुद्ध करके हलन-चलन रहित होकर जाप करना कायशुद्धि है।

११. **मन्त्र शुद्धि** :- जिस मंत्र का जाप करना हो उसके बीजाक्षरों का मिलान करके देख लें कि गलत तो नही हैं, फिर शुद्ध उच्चारण पूर्वक त्रियोग से जापकरना चाहिए।

१२. **विधि-विधान शुद्धि**- पूर्व निर्धारित क्रिया पूर्वक जाप करना विधि-विधान

शुद्धि है। अर्थात् जिस प्रकार की मंत्र-यंत्र-तंत्र में सिद्ध करने की क्रिया लिखी हो उसी प्रकार क्रिया करना विधि-विधान शुद्धि है।

यदि इस प्रकार की शुद्धि पूर्वक साधक साधना करता है तो नियम से सफल होता है। क्योंकि यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया भी है। वैसे मंत्र और विज्ञान दोनों में कुछ अन्तर भी है। जैसे विज्ञान का प्रयोग जहां भी किया जाता है, फल एक ही होता है। परन्तु मंत्र में यह बात नहीं है, उसकी सफलता साधक और साध्य के ऊपर निर्भर है। ध्यान के अस्थिर होने से भी मन्त्र असफल हो जाता है। मन्त्र तो तभी सिद्ध होता है जब श्रद्धा, इच्छा और दृढ़ संकल्प ये तीनों ही यथावत् कार्य करते हों। मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि मनुष्य की अवचेतना में बहुत सी आध्यात्मिक शक्तियाँ भरी रहती हैं और इन्हीं शक्तियों को मंत्र की ध्वनियों के संघर्ष द्वारा उत्तेजित किया जाता है। इस कार्य में केवल विचार शक्ति ही काम नहीं करती है, बल्कि इसकी सहायता के लिए उत्कृष्ट इच्छा शक्ति की इच्छा द्वारा ध्वनि - संचालन की भी आवश्यकता होती है। और यह मैंने पहले ही कहा है कि **मन के साथ जिन ध्वनियों का घर्षण होने से दिव्य ज्योति प्रकट होती है उन ध्वनियों के समुदाय को मंत्र कहते हैं।** तो मंत्र शक्ति के प्रयोग की सफलता के लिए मानसिक योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है, जिसके लिए नैष्ठिक आचार की आवश्यकता होती है।

मंत्र निर्माण के लिए- ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः, हं सः क्लीं क्लूं ब्लूं, द्रां द्रीं द्रूं द्रः, श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः, क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः, क्ष्वीं र्हं अं फट् वषट्, संवौषट् घे घे यः ठः खः ह्ल्व्र्यूं, पं वं यं णं तं थं दं आदि बीजाक्षरों की आवश्यकता होती है। साधारण व्यक्ति को तो ये बीजाक्षर निरर्थक प्रतीत होते हैं, किन्तु हैं ये सार्थक और इनमें ऐसी शक्ति अन्तर्निहित रहती है, जिससे आत्मशक्ति या देवताओं को उत्तेजित किया जा सकता है। अतः ये बीजाक्षर अन्तःकरण और वृत्ति की शुद्ध प्रेरणा के व्यक्त शब्द हैं, जिनसे अत्यधिक शक्ति का विकास किया जा सकता है और बीजाक्षरों की उत्पत्ति प्रधानतः णमोकार मंत्र से हुई है, क्योंकि मातृका ध्वनियां इसी मंत्र से उद्भूत हैं। इन सबमें प्रधान 'ओं' बीज है, यह आत्मवाचक मूलभूत है। इसे तेजो बीज, कामबीज और भवबीज भी माना गया है। पंचपरमेष्ठी वाचक होने से 'ओं' को समस्त मंत्रों का सारतत्त्व बताया गया है। इसे प्रणववाचक भी कहा जाता है।

श्रीं को कीर्तिवाचक, ह्रीं को कल्याणवाचक, क्षीं को शान्तिवाचक, हं को मंगलवाचक, ॐ को सुखवाचक, क्ष्वीं को योगवाचक, ह्रं को विद्वेष और रोष वाचक, प्रीं को स्तम्भवाचक और क्लीं को लक्ष्मी प्राप्ति वाचक कहा गया है। सभी तीर्थंकरों के नाम-अक्षरों को मंगलवाचक एवं यक्ष-यक्षिणियों के नामों को कीर्ति और प्रीति वाचक कहा गया है। आगम में बीजाक्षरों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है- ॐ प्रणव, ध्रुव, ब्रह्मबीज या तेजो बीज

है। ऐं वाग्भव बीज, लृं कामबीज, क्रों शक्ति बीज, हं सः विषापहार बीज, क्षीं पृथ्वी बीज, स्वा वायु बीज, हा आकाश बीज, ह्रां मायाबीज या त्रैलोक्यनाथ बीज, क्रों अंकुशबीज, जं पाश बीज, फट् विसर्जनात्मक या चालन- दूरकरणार्थक, वौषट् पूजाग्रहण या आकर्षणार्थक, संवौषट् आमन्त्रणार्थक, ब्लूं द्रावणबीज, क्लौं आकर्षण बीज, ग्लौं स्तम्भन बीज, ह्रौं महाशक्तिवाचक, वषट् आह्वानन वाचक, रं ज्वलन वाचक, क्ष्वीं विषापहार बीज, ठः चन्द्रबीज, घे घै ग्रहण बीज, द्रं विद्वेषणार्थक, रोष बीज, स्वाहा शान्ति और हवन वाचक, स्वधा पौष्टिक वाचक, नमः शोधन बीज, हं गगनबीज, ह्वं ज्ञानबीज, यः विसर्जन या उच्चारण वाचक, नु विद्वेषणबीज, झ्वीं अमृत बीज, क्ष्वीं भोग बीज, ह्रूँ दण्ड बीज, खः स्वादन बीज, झ्रौं महाशक्ति बीज, ह्ल्व्र्यूं पिण्डबीज, क्ष्वीं मंगल और सुख बीज, श्रीं कीर्तिबीज या कल्याण बीज, क्लीं धनबीज , कुबेरबीज, तीर्थंकर के नामाक्षर शान्तिबीज, ह्रौं ऋद्धि- सिद्धि बीज, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व शान्ति, मांगल्य, कल्याण, विघ्न विनाशक, सिद्धिदायक, अ आकाश बीज, धान्यबीज, आ सुखबीज -तेजो बीज, ई गुणबीज, तेजोबीज, वायुबीज, क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः सर्व कल्याण, सर्वशुद्धि बीज , वं द्रवणबीज , मं मंगल बीज, सं शोधनबीज, यं रक्षाबीज, झं शक्ति बीज और तं थं दं कालुष्यनाशक, मंगल वर्धक और सुखकारक बीज बताया गया है। इन समस्त बीजाक्षरों की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र तथा इस मंत्र में प्रतिपादित पंचपरमेष्ठी के नामाक्षर तीर्थंकर और यक्ष यक्षिणियों के नामाक्षरों से हुई है।

मन्त्र शास्त्र के बीजों का विवेचन करने के उपरान्त आचार्यों ने उनके रूप का निरूपण करते हुए बतलाया है कि - अ आ ऋ ह श य क ख ग घ ङ ये वर्ण वायुतत्त्व संज्ञक हैं। च छ ज झ ञ इ ई ॠ अ र प ये वर्ण अग्नितत्त्व संज्ञक हैं। त ट द ड उ ऊ ण ऌ व ल ये वर्ण पृथ्वी संज्ञक हैं। ठ थ ध ढ न ए ऐ ॡ स ये वर्ण जलतत्त्व संज्ञक है एवं प फ ब भ म ओ औ अं अः ये वर्ण आकाश तत्त्व संज्ञक हैं और अ उ ऊ ऐ ओ औ अं क ख ग ट ठ ड़ ढ त थ प फ ब ज झ ध य स प क्ष ये वर्ण पुल्लिंग हैं। आ ई च छ ल व वर्ण स्त्रीलिंग और इ ऋ ॠ ऌ ॡ ए अः घ भ य र ह द ञ ण ङ ये वर्ण नुपंसकलिंग संज्ञक होते हैं। मन्त्र शास्त्र में स्वर और ऊष्म ध्वनियाँ ब्राह्मण वर्ण संज्ञक; अन्तस्थ और कवर्ग ध्वनियाँ क्षत्रिय वर्ण संज्ञक; चवर्ग और पवर्ग ध्वनियाँ वैश्यवर्ण संज्ञक एवं टवर्ग और तवर्ग ध्वनियाँ शूद्रवर्ण संज्ञक होतीं हैं।

वश्य, आकर्षण और उच्चाटन में ह्रूँ का प्रयोग; मारण में 'फट्' का प्रयोग; स्तम्भन, विद्वेषण और मोहन में, नमः का प्रयोग एवं शान्ति और पौष्टिक के लिए 'वषट्' शब्द का प्रयोग किया जाता है। मन्त्र के अन्त में स्वाहा शब्द रहता है। यह शब्द पापनाशक, मंगल कारक तथा आत्मा की आन्तरिक शान्ति को उद्‌घाटित करने वाला बतलाया गया है। मन्त्र को शक्तिशाली बनाने वाली अन्तिम ध्वनियों में स्वाहा को स्त्रीलिंग; वषट्, फट्, स्वधा को पुल्लिंग और नमः को नपुंसक लिंग माना है।

चार पीठ– मन्त्र–सिद्धि के लिए चार पीठों का वर्णन जैन शास्त्रों में मिलता है– श्मशानपीठ, शवपीठ, अरण्यपीठ और श्यामापीठ।

१. श्मशानपीठ– भयानक श्मशानभूमि में जाकर मन्त्र की आराधना करना श्मशानपीठ है। अभीष्ट मंत्र की सिद्धि का जितना काल शास्त्रों में बताया गया है, उतने काल तक श्मशान में जाकर मंत्र साधना करना आवश्यक है। भीरू साधक इस पीठ का उपयोग नहीं कर सकता है। प्रथमानुयोग में आया है कि सुकुमाल मुनिराज ने णमोकार मंत्र की आराधना इस पीठ में करके आत्म सिद्धि प्राप्त की थी। इस पीठ में सभी प्रकार के मंत्रों की साधना की जा सकती है।

२. शवपीठ– शवपीठ में कर्ण पिशाचिनि, कर्णेश्वरी आदि विद्याओं की सिद्धि के लिए मृतक कलेवर पर आसन लगाकर मंत्र साधना करनी होती है। आत्मसाधना करने वाला व्यक्ति इस घृणित पीठ से दूर रहता है । वह तो एकान्त निर्जन भूमि में स्थित होकर आत्मा की साधना करता है।

३. अरण्यपीठ– अरण्यपीठ में एकान्त निर्जन स्थान, जो हिंसक जन्तुओं से समाकीर्ण है, में जाकर निर्भय एकाग्र चित्त से मंत्र की आराधना की जाती है। निर्ग्रन्थ परम तपस्वी साधक ही निर्जन अरण्यों में जाकर पंचपरमेष्ठी की आराधना द्वारा निर्वाण लाभ प्राप्त करते हैं। क्योंकि राग–द्वेष, मोह, क्रोध, मान, माया और लोभ आदि विकारों को जीतने का एक मात्र स्थान अरण्य ही है। अत् एव महामंत्रों की साधना इसी स्थान पर यथार्थरूप से हो सकती है।

४. श्यामापीठ– एकान्त निर्जन स्थान में षोडशी नवयौवना सुन्दरी को वस्त्ररहित कर सामने बैठ कर मंत्र सिद्ध करना एवं अपने मन को तिलमात्र भी चलायमान नहीं करना और ब्रह्मचर्यव्रत में दृढ़ रहना श्यामापीठ है। इन चारों पीठों का उपयोग मंत्र–सिद्धि के लिए किया जाता है। किन्तु णमोकार महामंत्र की साधना के लिए इस प्रकार के पीठों की आवश्यकता नहीं है। यह तो कहीं भी और किसी भी स्थिति में सिद्ध किया जा सकता है। यह णमोकार मंत्र समस्त द्वादशांग जिनवाणी का सार है , इसमें समस्त श्रुतज्ञान की अक्षर संख्या निहित है। जैन दर्शन के तत्त्व, पदार्थ, द्रव्य, पर्याय, नय, निक्षेप, आस्रव, बन्ध आदि इस मंत्र में विद्यमान हैं और समस्त मंत्रशास्त्र की उत्पत्ति इसी महामंत्र से हुई है। समस्त मंत्रों की मूलभूत मातृकाएं इस महामंत्र में निम्न प्रकार से निहित (विद्यमान) हैं।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

विश्लेशण :– ण्+अ + म् + ओ + अ + र् + इ + ह् + अं + त् + आ + ण् + अं + ण् + अ + म् + ओ + स् + इ + द् + ध् + आ + ण् + अं + ण् + अ + म् + ओ + आ + इ + र् + इ + य् + आ + ण् + अं + ण् + अ + म् + ओ + उ + व् + अ + ज + झ + आ + य् + आ + ण् + अं + ण् + अ + म् + ओ + ल् + ओ + ए + स् + अ + व् + व्+ अ + स्+ आ + ह् + ऊ + ण् + अ + म्।

इस विश्लेषण में से स्वरों को पृथक् किया तो– अ + ओ + अ + इ + अं + आ + अं + अ + ओ + इ + अ + अं + अ + ओ + आ + इ + इ + आ + अं + अ + ओ + उ + अ + आ + आ + अं + अ + ओ + ओ + ए + अ + अ + आ + ऊ + अं पुनरुक्त स्वरों को निकाल देने के पश्चात् रेखांकित स्वरों को ग्रहण किया तो शेष बचे स्वर– अ आ इ ई उ ऊ (र्) ऋ ॠ (ल) लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

व्यंजन– ण् + म् + र् + ह् + त् + ण् + ण् + म् + स् + द् + ध् + ण् + ण् + म् + र् + य् + ण् + ण् + म् + व् + ज् + झ् + य् + ण् + ण् + म् + ल् + स् + व् + व् + स् + ह् + ण्। पुनरुक्त व्यंजनों को निकाल देने के पश्चात् शेष व्यंजन– ण् + म् + र् + ह् + ध् + स् + य् + र् + ल् + व् + ज् + घ् + ह्।

ध्वनि सिद्धान्त के आधार पर वर्णाक्षर वर्ग का प्रति निधित्व करता है। अतः घ्= कवर्ग, झ्= चवर्ग, ण्= टवर्ग, ध्=तवर्ग, म्= पवर्ग, य र ल व श ष स ह्। अतः इस महामंत्र की समस्त मातृका ध्वनियां निम्न प्रकार हुईं– अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः; क् ख् ग् घ् ङ्, च् छ् ज् झ् ञ्, ट् ठ् ड् ढ् ण्, त् थ् द् ध् न्, प् फ् ब् भ् म्, य् र् ल् व्, श् ष् स् ह्। यह उपर्युक्त ध्वनियाँ ही मातृका कहलाती हैं। जयसेन प्रतिष्ठापाठ में लिखा है–

अकारादिक्षकारान्ताः वर्णाः प्रोक्तास्तु मातृकाः।
सृष्टिन्यास-स्थितिन्यास-संहृतिन्यासतस्त्रिधा॥३७६॥

अकार से लेकर क्षकार (क्+ ष् + अ) पर्यन्त मातृका वर्ण कहलाते हैं। इनका तीन प्रकार का क्रम है– सृष्टि क्रम, स्थिति क्रम और संहारक्रम।

णमोकार मंत्र में मातृका ध्वनियों का तीनों प्रकार का क्रम सन्निविष्ट है। इसी कारण यह मंत्र आत्मकल्याण के साथ-साथ लौकिक अभ्युदयों को देने वाला है। संहार क्रम कर्म विनाश को प्रकट करता है तथा सृष्टिक्रम और स्थितिक्रम आत्मानुभूति के साथ लौकिक अभ्युदयों की प्राप्ति में भी सहायक है। इस मन्त्र की महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें मातृका-ध्वनियों का तीनों प्रकार का क्रम सन्निहित है, इसलिए इस मन्त्र से मारण, मोहन और उच्चाटन इन तीनों प्रकार के मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है। बीजाक्षरों की निष्पत्ति के

संबंध में बताया गया है-

हलो बीजानि चोक्तानि स्वराः शक्तय ईरिताः ॥३७७॥

अर्थात्- ककार से लेकर हकार पर्यंत व्यंजन बीजसंज्ञक हैं और अकारादि स्वर शक्ति रूप हैं। मन्त्र बीजों की निष्पत्ति बीज और शक्ति के संयोग से होती है। सारस्वत बीज, माया बीज, शुभनेश्वरी बीज, पृथ्वीबीज, अग्निबीज, प्रणवबीज, मारुतबीज, जलबीज, आकाशबीज, आदि की उत्पत्ति उक्त हल् और अचों के संयोग से हुई है।

मंत्र शास्त्र का संक्षेप में विश्लेषण और विवेचन का निष्कर्ष यह है कि मंत्रों के बीजाक्षर, सन्निविष्ट ध्वनियों के रूप विधान में उपयोगी लिंग और तत्त्वों का विधान एवं मंत्र के अन्तिम भाग में प्रयुक्त होने वाला पल्लव अंतिम ध्वनि समूह का मूल स्रोत णमोकार महामंत्र है। जिस प्रकार समुद्र का जल नवीन घड़े में भर देने पर नवीन प्रतीत होने लगता है, उसी प्रकार णमोकार मन्त्र रूपी समुद्र में से कुछ ध्वनियों को निकालकर मंत्रो का सृजन हुआ है। कातंत्र रूपमाला का सूत्र 'सिद्धो वर्णसमाम्नाय:' बतलाता है कि वर्णों का समूह अनादि है। णमोकार मंत्र में कण्ठ, तालु, मूर्धन्य, अन्तस्थ, ऊष्म, उपध्यानीय, वरर्स्थ आदि सभी ध्वनियों के बीज विद्यमान हैं और बीजाक्षर मंत्रों के प्राण हैं। ये बीजाक्षर ही स्वयं इस बात को प्रकट करते हैं कि इनकी उत्पत्ति कहां से हुई है।

बीजाकोश में बताया गया है कि ''ॐ'' बीज समस्त णमोकार मंत्र से, ''ह्रीं'' की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम पद से, ''श्रीं'' की उत्पत्ति द्वितीय और तृतीय पदों से 'क्लीं' की उत्पत्ति प्रथम पद में प्रतिपादित तीर्थंकरों की यक्षिणियों से, अत्यन्त शक्तिशाली सकल मंत्रों में व्याप्त 'र्हं' की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम पद से, 'द्रां द्रीं' की उत्पत्ति उक्त मंत्र के चतुर्थ और पंचम पद से हुई है 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः' बीजाक्षर प्रथम पद से और 'क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षः' बीजाक्षरों की उत्पत्ति प्रथम, द्वितीय और पंचम पद से निष्पन्न हुई है। इसके अलावा णमोकार मन्त्र कल्प, भक्तामर यंत्र मंत्र, कल्याणमंदिर यंत्र मंत्र, यंत्र मंत्र संग्रह, पद्मावती मंत्रकल्प, ज्वालामालिनी कल्प, आदि मंत्र ग्रथों के अवलोकन से पता लगता है कि समस्त मंत्रों के रूप बीज पल्लव की उत्पत्ति इसी णमोकार महामंत्र से हुई है। और इतना ही नहीं चौरासी लाख मंत्रों की उत्पत्ति इसी महामन्त्र से हुई मानी जाती है। आचार्य शुभचन्द्र महाराज ने ज्ञानार्णव महा ग्रन्थ में लिखा है कि षोडशाक्षर, षडाक्षर, चतुराक्षर, द्वयाक्षर, एकाक्षर, पंचाक्षर, त्रयोदशाक्षर, सप्ताक्षर, अक्षरपंक्ति इत्यादि नाना प्रकार के मन्त्रों की उत्पत्ति इसी महामंत्र से हुई है। इसके अतिरिक्त सकलीकरण क्रिया मंत्र, ऋषिमन्त्र, पीठिकामन्त्र, प्रोक्षणमन्त्र, प्रतिष्ठामन्त्र, शांतिमंत्र, इष्टसिद्धि-अरिष्ट निवारक मंत्र, विभिन्न मांगलिक कार्यो के अवसर पर उपयोग में आने वाले मंत्र, विवाह मंत्र, यज्ञोपवीत धारण मंत्र, मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा मंत्र, सूरि मंत्र, वेदी प्रतिष्ठा मंत्र, दीक्षा मंत्र, मातृका मंत्र, अनेक

शुभाशुभ अवसरों पर हवन-पूजन आदि के लिए प्रयुक्त होने वाले समस्त मन्त्रों की उत्पत्ति णमोकार महामंत्र से हुई है। इस महामन्त्र की ध्वनियों के संयोग, वियोग, विश्लेषण और संश्लेषण के द्वारा ही मन्त्र शास्त्रों की उत्पत्ति हुई है।

प्रवचन-सरोद्धार की वृत्ति लिखा में है- यह णमोकार मंत्र सभी मंत्रों की उत्पत्ति के लिए समुद्र के समान है। जिस प्रकार समुद्र से अनेक मूल्यवान् रत्न उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार इस महामंत्र से अनेक उपयोगी और शक्तिशाली मन्त्र उत्पन्न हुए हैं। यह मन्त्र-कल्पवृक्ष है, इसकी आराधना से सभी प्रकार की कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। इस मन्त्र से विष, सर्प, शाकिनी, डाकिनी, भूत, पिशाच, यक्ष, राक्षस आदि सब वश में हो जाते हैं। यह मन्त्र ग्यारह अंग और चौदह पूर्व का सारभूत है। मन्त्रों के आचार्यों ने इसे वश्य, आकर्षण आदि नौ भागों में विभक्त किया है। ये नौ प्रकार के मन्त्र इसी महामन्त्र से निष्पन्न हुए हैं। क्योंकि उन मन्त्रों के रूप इस मन्त्रोक्त वर्णों या ध्वनियों से ही निष्पन्न हुए हैं। सभी मन्त्रों के प्राण बीजाक्षर इसी मन्त्र से निःसृत हैं इसी महामंत्र से सभी मंत्रों का विकास और निकास हुआ है अतः यह महामंत्र महासमुद्र है।

णमोकारादि मंत्र संग्रह ग्रंथों में बताया गया है कि इस महामंत्र के एक-एक पद का जाप करने से नवग्रहों की बाधा शान्त होती है। *''ॐ णमो सिद्धाणं''* के दस हजार जाप से सूर्य ग्रह की पीड़ा दूर होती है। *''ॐ णमो अरिहंताणं''* के दस हजार जाप से चन्द्रग्रह की पीड़ा, *''ॐ णमो सिद्धाणं''* के दस हजार जाप से मंगलग्रह की पीड़ा, *''ॐ णमो उवज्झायाणं''* के दस हजार जाप से बुधग्रह की पीड़ा, *''ॐ णमो आइरियाणं''* के दस हजार जाप से गुरु ग्रह की पीड़ा, *''ॐ णमो अरिहंताणं''* के दस हजार जाप से शुक्रग्रह की पीड़ा और *''ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं''* के दस हजार जाप से शनि ग्रह की पीड़ा दूर होती है। राहु ग्रह की पीड़ा शान्ति के लिए समस्त णमोकार मंत्र की जाप *''ॐ''* जोड़कर अथवा *''ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं''* मंत्र की ग्यारह हजार जाप तथा केतु ग्रह की पीड़ा शांति के लिए *''ॐ''* जोड़कर समस्त णमोकार मंत्र का जाप या *''ॐ णमो सिद्धाणं''* पद का ग्यारह हजार जाप करना चाहिए।

भूत, पिशाच और व्यन्तर की बाधा को दूर

भूत, पिशाच और व्यन्तर की बाधा को दूर करने के लिए निम्न प्रकार २१००० जाप करना चाहिए। इक्कीस हजार जाप करने के उपरान्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर सिद्ध हो जाने के बाद ९ बार पढ़कर झाड़ देने से व्यन्तर बाधा दूर हो जाती है। मन्त्र यह है-

मंत्र :- ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, सर्व दुष्टान् स्तम्भय-स्तम्भय मोहय-मोहय अन्धय-अन्धय-मूकवत्कराय कराय ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

विधि- इस मन्त्र द्वारा एक ही हाथ द्वारा खींचे गये जल को, (मन्त्र सिद्ध होने पर ९ बार और सिद्ध न होने पर १०८ बार) मन्त्रित करके, पश्चात् णमोकार महामंत्र पढ़ते हुए यह जल व्यन्तराक्रान्त व्यक्ति के ऊपर छिड़क देने से व्यन्तर, भूत, प्रेत, और पिशाच की बाधा दूर हो जाती है।

मंत्र जाप में अंगुलियों का महत्व :- इस मन्त्र को धर्मकार्य और मोक्ष प्राप्ति के लिए अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुली से, शान्ति के लिए अंगुष्ठ और मध्यमा अँगुली से, सिद्धि के लिए अंगुष्ठ और अनामिका से एवं सर्वकार्य सिद्धि के लिए अंगुष्ठ और कनिष्ठा से जाप करना चाहिए।

मंत्र जाप में माला का महत्व :- सभी कार्यों की सिद्धि के लिए पंचवर्ण पुष्पों की माला से, दुष्ट और व्यन्तरों के स्तम्भन के लिए मणियों की माला से, रोग शान्ति और पुत्र-प्राप्ति के लिए मोतियों की माला या कमलगट्टों की माला से एवं शत्रुच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला से मंत्र का जाप करना चाहिए। वैसे यह मन्त्र तो सभी का हित साधक हैं, परन्तु साधना करने वाला अपने भावों के अनुसार मारण, मोहनादि कार्यों को सिद्ध कर लेता है। मन्त्र साधना में मन्त्र की शक्ति के साथ-साथ साधक की शक्ति भी कार्य करती है। एक ही मन्त्र का फल विभिन्न साधकों को उनकी योग्यता, परिणाम, स्थिरता आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न मिलता है। अत: मन्त्र के साथ साधक का भी महत्वपूर्ण सम्बन्ध हैं।

❖ वास्तविक बात यह है कि यह मंत्र ध्वनिरूप है और भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ अ से लेकर ज्ञ तक भिन्न शक्ति स्वरूप हैं। प्रत्येक अक्षर में स्वतन्त्र शक्ति निहित है, भिन्न-भिन्न अक्षरों के संयोग से भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्तियाँ उत्पन्न की जाती हैं। जो व्यक्ति इन ध्वनियों का मिश्रण करना जानता है, वह उन मिश्रित ध्वनियों के प्रयोग से उसी प्रकार के शक्तिशाली कार्यों को सिद्ध कर लेता है। णमोकार मन्त्र ध्वनि-समूह इस प्रकार का है कि इसके प्रयोग से भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य सिद्ध किये जा सकते हैं। ध्वनियों के घर्षण से दो प्रकार की विद्युत उत्पन्न होती है- एक धन विद्युत् और दूसरी ऋण विद्युत्। धन विद्युत् शक्ति द्वारा बाह्य पदार्थों पर प्रभाव पड़ता है और ऋणविद्युत् शक्ति अन्तरंग की रक्षा करती है। आज का विज्ञान भी मानता है कि प्रत्येक पदार्थ में दोनों प्रकार की शक्तियों निवास करती है और मंत्र का उच्चारण एवं मनन इन शक्तियों का विकास करता है। **जिस प्रकार जल में छिपी हुई विद्युत-शक्ति जल के मन्थन से उत्पन्न होती है, उसी प्रकार मन्त्र के बार-बार उच्चारण करने से मन्त्र के ध्वनि-समूह में छिपी शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं।** भिन्न-भिन्न मन्त्रों में यह शक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है तथा शक्ति का विकास भी साधक की क्रिया और उसकी शक्ति पर निर्भर करता है। अत: सब मन्त्र की साधना सभी प्रकार के अभीष्टों को सिद्ध करने वाली और अनिष्टों को दूर करने वाली है।

❖ यह मेरा अनुभव है कि किसी भी प्रकार का **सिरदर्द हो, तो इक्कीस लौंग णमोकार मंत्र द्वारा मन्त्रित कर रोगी को खिला देने से सिरदर्द तत्काल बन्द हो जाता है। एक दिन के अन्तर से आने वाले बुखार में पीपल के पत्ते पर केसर से णमोकार लिखकर रोगी के हाथ में बाँध देने से बुखार नहीं आता है। पेट दर्द में कपूर को णमोकार मन्त्र द्वारा मन्त्रित कर खिला देने से पेटदर्द तत्काल रुक जाता है। लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल स्नानादि क्रियाओं से पवित्र होकर-** ''ॐ श्रीं क्लीं णमो अरिहंताणं ॐ श्रीं क्लीं णमो सिद्धाणं ॐ श्रीं क्लीं णमो आइरियाणं, ॐ श्रीं क्लीं णमो उवज्झायाणं ॐ श्रीं क्लीं णमो लोए सव्वसाहूणं'' **इस मन्त्र का १०८ बार पवित्र शुद्ध धूप देते हुए जाप करने से निश्चय ही लक्ष्मी प्राप्ति होती है।** लेकिन इन सब साधनाओं के लिए मन्त्र के ऊपर अटूट श्रद्धा होना चाहिए, क्योंकि श्रद्धा के अभाव में मंत्र फलदायक नहीं होता। और यदि श्रद्धा होने के बाद भी पूर्व कर्मोदय से मंत्र सिद्ध न हो या कार्य में सफलता न मिले, तो भी मंत्र की या मंत्र को देने वाले गुरु की निन्दा आलोचना नहीं करना क्योंकि की गई साधना कभी निष्फल नहीं होती। यदि आपकी साधना का, मंत्र जाप का फल अभी न मिले तो बाद में अवश्य मिलता है। **कारण किसी भी कार्य का फल दो प्रकार से प्राप्त होता है- तात्कालिक और कालान्तर भावी। जैसे तत्वानुशासन में लिखा है कि णमोकार मंत्र के एक अक्षर का भाव सहित स्मरण करने से सात सागर के और पाँच अक्षरों का भक्ति पूर्वक उच्चारण करने से पचास सागर तक भोगे जाने वाले पाप नष्ट हो जाते हैं और सम्पूर्ण मंत्र का भक्तिभाव सहित विधिपूर्वक स्मरण करने से पाँच सौ सागर तक भोगे जाने वाले पाप नष्ट हो जाते हैं। अभव्य प्राणी भी इस मंत्र के स्मरण से स्वर्गादि के सुखों को प्राप्त करता है। भाव सहित स्मरण किया गया मंत्र असंख्यात दुःखों का क्षय करने वाला तथा इह लौकिक और पारलौकिक समस्त सुखों को देने वाला है।** इस मन्त्र के चिन्तन, स्मरण और मनन करने से भूत, प्रेत, ग्रहबाधा, राजभय, चोर भय, दुष्टभय, रोगभय आदि सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। राग-द्वेष-जन्य अशान्ति भी इस मन्त्र के जाप से दूर होती है। श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी आदि की प्राप्ति इसी मन्त्र के जाप से होती है। कर्मों की ग्रन्थी को खोलने वाला यही मन्त्र है तथा भावपूर्वक नित्य जप करने से निर्वाण पद की प्राप्ति होती है।

❖ **आचार्य वादीभसिंह ने क्षत्रचूड़ामणि ग्रन्थ में लिखा है** कि करुणावश जीवन्धर स्वामी ने मरणोन्मुख कुत्ते को णमोकार मन्त्र सुनाया था, तो इस मन्त्र के प्रभाव से वह पापाचारी श्वान भी स्वर्ग में सुदर्शन नामक यक्षेन्द्र देव के रूप में उत्पन्न हुआ था। राजकुमार पार्श्वनाथ ने जलते हुए नाग-नागिन को णमोकार मन्त्र सुनाया तो वे मरने के बाद धरणेन्द्र-पद्मावती हुए। राजकुमार राम ने मरते हुए बैल को सुनाया तो वह बैल मरकर सुग्रीव हुआ। उसी महामंत्र के प्रभाव से अंजन चोर का भी उद्धार हुआ। अधिक क्या कहें पापी से पापी

प्राणियों का भी इस णमोकार महामंत्र के जाप से उद्धार हुआ एवं होता है, अत: प्रतिदिन लोकैषणा, पुत्रैषणा और वित्तैषणा छोड़कर इस मंत्र का जाप अवश्य करना चाहिए। क्योंकि इस मंत्र के प्रभाव से जब निर्वाण पद तक की प्राप्ति हो सकती है तो फिर धन-वैभव, सुख-समृद्धि, चक्रवर्ती, अहमिन्द्र, इन्द्र आदि पदों की प्राप्ति क्या बड़ी बात है। इस मंत्र से तो लौकिक व पारलौकिक सभी प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। पर इस संबंध में एक बात अवश्य है कि जाप करने वाला साधक, जाप करने की विधि, जाप करने के स्थान की भिन्नता से फल में भिन्नता हो जाती है। यदि जाप करने वाला सदाचारी, शाकाहारी,शुद्धात्मा, सत्यवक्ता, अहिंसक एवं ईमानदार है तो उसको इस मंत्र की आराधना का फल तत्काल मिलता है। अत: मन-वचन और काय की शुद्धिपूर्वक, विधिसहित आस्था-विश्वास के साथ एकाग्रचित्त होकर तल्लीनता पूर्वक जाप करना चाहिए।

❖ लेकिन हाँ यह बात अवश्य है कि जिसने साधना की सीढ़ी पर प्रारम्भिक पैर रखा है, तो मन्त्र जाप करते समय उसके मन में दूसरे विकल्प जरूर आयेंगे, किन्तु उनकी परवाह नहीं करना चाहिए। कारण जिस प्रकार आरम्भ में अग्नि जलाने पर धुंआँ नियम से निकलता है, किन्तु जब कुछ देर अग्नि जलती रहती है, तो धुंआँ निकलना बन्द हो जाता है। ठीक इसी प्रकार प्रारम्भिक साधक की साधना के समक्ष नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प आते हैं किन्तु साधना पर कुछ आगे बढ़ जाने पर विकल्प स्वयं ही रुक जाते हैं। अत: संकल्प पूर्वक दृढ़ श्रद्धा के साथ मंत्र जाप करना चाहिए।

❖ मंत्रों का बार-बार उच्चारण किसी सोते हुए को बार-बार जगाने के समान है। यह प्रक्रिया इसी के तुल्य है, जिस प्रकार किन्हीं दो स्थानों के बीच बिजली का सम्बन्ध लगा दिया जाये। साधक की विचार शक्ति स्विच का काम करती है और मन्त्र शक्ति विद्युत लहर का। जब मन्त्र सिद्ध हो जाता है तब आत्मिक शक्ति से आकृष्ट देवता साधक (मन्त्रिक) के समक्ष अपना आत्म-समर्पण कर देता है, और उस देवता की सारी शक्ति उस साधक में आ जाती है, जिससे साधक किमिच्छित कार्य करता है। सामान्यत: मन्त्रों के लिए नैतिकता की उतनी विशेष आवश्यकता नहीं है जितनी शुद्ध मन्त्रों के उच्चारण की। क्योंकि साधक बीजमन्त्र और उनकी ध्वनियों के घर्षण से अपने भीतर आत्मिक शक्ति प्रस्फुटित करता है। मन्त्र शास्त्र में इसी कारण हमारे पूर्वाचार्यों ने मन्त्रों के अनेक भेद बताये हैं, जो निम्नप्रकार हैं।

१. शान्ति मंत्र: जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा भयंकर से भयंकर व्याधि, व्यन्तर-भूत-पिशाचों की पीड़ा, क्रूर ग्रहपीड़ा, जंगम स्थावर विष-बाधा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्षादि, भय, उपसर्ग और चोर आदि का भय शान्त हो जाए उन ध्वनियों के सन्निवेष को शान्ति मन्त्र कहते हैं। अथवा मन कषायों के क्षय-उपशम या क्षयोपशम से आत्मस्वभाव में स्थिर हो जाय तो उसे शान्ति मंत्र कहते हैं।

२. पौष्टिक मंत्र- जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा सुख सामग्रियों की प्राप्ति, सौभाग्य, यश, कीर्ति, सन्तान आदि की प्राप्ति हो उन ध्वनियों के सन्निवेश को पौष्टिक मंत्र कहते हैं। अथवा जिन भावों या बीज पदों के द्वारा मोक्षमार्ग के प्रति दृढ़ता मजबूती की वृद्धि हो उसे पौष्टिक मंत्र कहते हैं या संसार की अपेक्षा से रहित होकर उपसर्ग परिषहों को जीतने की सामर्थ्य उत्पन्न हो उसे पौष्टिक मंत्र कहते हैं।

३. स्तंभन मंत्र- जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा मनुष्य पशु-पक्षी, सर्प, व्याघ्र, सिंह आदि जीवों की गति, हलचल का निरोध हो, भूत-प्रेत, पिशाच आदि दैविक बाधाओं को, शत्रुसेना के आक्रमण तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा किये जाने वाले कष्टों को दूर कर उनको जहां के तहाँ निष्क्रिय कर स्तम्भित कर दिया जाये, उन ध्वनियों के सन्निवेश को स्तम्भन मन्त्र कहते हैं। अथवा मन को एकमात्र किसी एक विषय में रोकने को स्तम्भन मंत्र कहते हैं।

४. मोहन मंत्र- जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा किसी मनुष्य पशु, पक्षी आदि को मोहित किया जाये, उन ध्वनियों के सन्निवेष को मोहन (मोहित) मंत्र कहते हैं। मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म आदि प्रायः इसी के अंग हैं। अथवा जिन बीजाक्षरों के द्वारा अपना मन अपनी आत्मा में प्रीति को प्राप्त हो उसे मोहन मंत्र कहते हैं।

५. उच्चाटन मंत्र- जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा किसी मनुष्य, पशु, पक्षी अपने स्थान से भ्रष्ट हों, इज्जत-सम्मान खो दें अथवा किसी का मन अस्थिर, उल्लासरहित, एवं निरुत्साहित होकर पदभ्रष्ट एवं स्थान भ्रष्ट हो जाये उन ध्वनियों के सन्निवेश को उच्चाटन मन्त्र कहते हैं। अथवा जिन मंत्र पदों के द्वारा दुर्ध्यानों से मन हटकर धर्मध्यान में लग जाय उसे उच्चाटन मंत्र कहते हैं। अर्थात् आर्तध्यान और रौद्रध्यानों से मन हट जाये उसे उच्चाटन मंत्र कहते हैं।

६. वशीकरण मंत्र- जिन ध्वनियों के सन्निवेश के घर्षण द्वारा इच्छित व्यक्ति को वश में किया जा सके, वह साधक व्यक्ति जैसा कहे सामने वाला वैसा करे, उन ध्वनियों के सन्निवेश को वशीकरण मंत्र कहते हैं। अथवा जिन आत्मभावों के द्वारा इन्द्रिय और मन अपने वश में होते हों उसे वशीकरण मंत्र कहते हैं।

७. आकर्षण मंत्र- जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण-द्वारा इच्छित वस्तु या व्यक्ति साधक के पास आ जाये- किसी का विपरीत मन भी साधक की अनुकूलता स्वीकार कर ले अथवा दूर रहने वाला मनुष्य, पशु, पक्षी आदि अपनी तरफ आकर्षित हो, अपने निकट आ जाये, उन ध्वनियों के सन्निवेश को आकर्षण मंत्र कहते हैं। अथवा अपना मन रत्नत्रय स्वरूप आत्मा में आ जाये उसे आकर्षण मंत्र कहते हैं।

८. जृंभण मंत्र- जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा शत्रु, भूत, प्रेत,

व्यन्तर साधक की साधना से भयत्रस्त हो जायें, कांपने लगें अर्थात् मनुष्य ,पशु , पक्षी प्रयोग करने वाले की सूचना (आज्ञा) के अनुसार कार्य करें, उन ध्वनियों के सन्निवेश को जृम्भण मंत्र कहते हैं। अथवा आत्म साधना के अनुसार इन्द्रिय और मन अपना कार्य करें उसे जृंभण मंत्र कहते हैं।

९. विद्वेषण मंत्र– जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश के घर्षण द्वारा दो मित्रों के बीच में फूट पड़े, सम्बन्ध टूट जाए अथवा कुटुम्ब, जाति, देश, समाज, राष्ट्र आदि में परस्पर कलह और वैमनस्य की क्रान्ति मच जाये, उन ध्वनियों के सन्निवेश को विद्वेषण मंत्र कहते हैं।

१०. मारण मंत्र– जिन ध्वनियों के वैज्ञानिक सन्निवेश घर्षण द्वारा जीवों की मृत्यु हो जाये, या साधक आततायियों को प्राणदण्ड दे सके, उन ध्वनियों के सन्निवेश को मारण मंत्र कहते हैं।

❖ मन्त्रों में एक से तीन ध्वनियों तक के मन्त्रों का विश्लेषण अर्थ की दृष्टि से नहीं किया जा सकता है, किन्तु इससे अधिक ध्वनियों के मन्त्रों का विश्लेषण हो सकता है। मन्त्रों से इच्छाशक्ति का परिष्कार या प्रसारण होता है, जिससे अपूर्व शक्ति आती है।

❖ जैसे हम सूरज की किरणों को एक कांच के लैंस से इकट्ठा कर लें, तो आग पैदा हो जाती है। क्योंकि सूरज की किरणों में आग छिपी होती है। परंतु पृथक–पृथक रहने से ज्यादा से ज्यादा गरमी पैदा तो हो सकती है किन्तु आग नहीं निकल सकती; लेकिन हां यदि किरणों को एकत्र कर लिया जाए, किरणें इकट्ठी हो जाएं तो आग पैदा हो जाती है। ठीक इसी प्रकार आपके मन में भी बहुत बड़ी ऊर्जा शक्ति छिपी हुई है किन्तु वह अभी अलग–अलग है इसलिए सिर्फ उष्णता रहती है। यदि उसे मंत्रों के द्वारा इकट्ठा कर लिया जाये तो उस आग से अनंतों जन्म के कर्म जल सकते हैं। और आत्मा परमात्मा बन सकती है। अत: जैसे कांच (लैंस) सूर्य की किरणों को इकट्ठा करता है वैसे ही मंत्र हमारी शक्ति (गर्मी) को इकट्ठा करते हैं जिससे बड़ी गर्मी, बड़ी ऊर्जा इकट्ठी (पैदा) होकर कार्य सिद्धि होती है और यदि कोई सतत मंत्रों का प्रयोग करता रहे तो उसके जीवन में अनेक शक्ति की घटनाएं घटना शुरू हो जाएँगीं।

❖ हमने इस ग्रन्थ में कुछ मंत्र–यंत्र और तंत्रों को संकलित किया है जिससे आप लाभ उठा सकते हैं और अपने मानव जीवन को सुख शान्तिमय और आनंदमय बना सकते हैं। मंत्र साधना से इहलौकिक ही नहीं पारलौकिक सिद्धि भी होती है। वैसे इस ग्रन्थ में हमने सभी प्रकार के मंत्र यंत्र और तंत्रों का संग्रह किया है जिसमें कुछ अशुभ मंत्रों का वर्णन भी हो सकता है; किन्तु यह पूर्वाचार्यानुसार है; लेकिन साधकों से मेरा सविनय अनुरोध है कि आप मंत्रों का प्रयोग किसी अच्छे कार्य में ही करें, बुरे अशुभ, पाप वर्धक कार्यों में न करें। मारण–उच्चाटनादि के प्रयोग भी, कभी भूलकर न करें, क्योंकि अशुभ मंत्रों के प्रयोग से इहलोक के

साथ-साथ परलोक भी बिगड़ता है। तथा अनेक जन्मों में दुख भोगना पड़ता है। अत: अशुभ मंत्र को छोड़कर शुभ मंत्रों को सिद्ध करें। **लेकिन ध्यान रखें मंत्र को सिद्ध करना यानि सर्प की वामी में हाथ डालना है। क्योंकि मंत्र साधना में थोड़ी सी भी गलती हुई कि वह मंत्र सिद्ध नहीं होता अथवा उल्टा प्रभाव कर साधक को पागल भी कर सकता है या मृत्यु भी करा सकता है; इसलिए साधक को अपने गुरु से मंत्र लेकर ही सिद्ध करना चाहिए।** देखा-देखी में या दूसरों के द्वारा प्रशंसा सुनकर अथवा पुस्तकों में महिमा आदि पढ़कर मंत्र सिद्ध नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे अनर्थ भी हो सकता है। अत: अनर्थ की आशंका वाले अशुभ मंत्रों को छोड़कर शुभ मत्रों को अपने गुरु से लेकर ही परोपकार के लिए सिद्ध करना चाहिए।

❖ हमने इसे लोक कल्याण की उपयोगी वस्तु मानकर ही परिश्रम किया है। और जो मुझे स्वाध्याय, साधन, सत्संग से प्राप्त हुआ उसे आपके सामने प्रस्तुत किया है। यह प्राचीन ऋषि, मुनि, साधकों द्वारा उद्घाटित शब्द विज्ञान कहाँ तक प्रभावोत्पादक है, यह गवेषण वैज्ञानिकों, साधकों, चिन्तकों, अन्वेषकों और विचारकों पर निर्भर करता है। कहाँ तक इसकी सत्यता प्रमाणित हो पाती है, यह उन्हीं मनीषियों के अधिकार की बात है। लेकिन फिर भी यदि पाठकों व साधकों को इस ग्रन्थ से कुछ लाभ होता है या वह इस ग्रंथ से कुछ लाभ उठाकर अपने जीवन को सुख-समृद्धि, शान्ति और आनंदमय बनाकर प्रसन्न होते हैं तो मैं अपने परिश्रम को सफल सार्थक समझूंगा।

अन्त में मेरी भावना है कि आपका जीवन पावन पवित्र व मंगलमय हो, आपके जीवन में सुख-शान्ति और आनंद का भंडार रहे एवं यह ग्रन्थ आपके लिए मंगलकारी सिद्ध हो यही मेरा आशीर्वाद है।

ॐ ह्रीं नम: -

मुनि प्रार्थनास

नोट :- १. किसी भी मंत्र, यंत्र, तंत्र का प्रयोग पुस्तकों में महिमा पढ़कर यसुनदेखी में सिद्ध न करें। २. मंत्र, यंत्र, तंत्र का प्रयोग योग्य गुरु के मार्गदर्शन में ही करें अन्यथा आपको हानि उठाना पड़ेगी, यहां तक कि बिना गुरु के दिये मंत्र सिद्ध करने पर अनेकों लोग पागल हो जाते हैं अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं; क्योंकि वह दैविक शक्ति को सहन नहीं कर पाते हैं। ३.गलत ढंग से मंत्रों का प्रयोग करने पर अथवा बिना गुरु के दिये मंत्रों का प्रयोग करने पर जो आपको हानि उठाना पड़ेगी उसके जवाबदार आप स्वयं होंगे, हम नहीं। ४. किसी भी मंत्र का प्रयोग गलत कार्य अर्थात् दूसरों का बुरा विचारने के उद्देश्य से न करें, क्योंकि इससे भारी पाप लगता है। ५. किसी भी मंत्र, यंत्र, तंत्र की कार्य सिद्धि में पूर्ण श्रद्धा का होना एवं विधि विधान पूर्णत: सही होना आवश्यक है।

विशेष - 'मंत्र, यंत्र और तंत्र' में कहीं अगर त्रुटि रह गई हो तो ज्ञानी पुरुष हमें अवगत करायें जिससे पुन: वह गलती न हो सके।

- **मुनि प्रार्थना सागर**

मेरे विचार से

व्यक्ति के जीवन में उसकी इच्छानुसार कार्य न होना ही दु:ख व समस्या है। इसमें ९५ प्रतिशत समस्याएं व्यक्ति के स्वयं के कर्मों द्वारा व ५ प्रतिशत समस्याएं पूर्वजन्मकृत (भाग्य) कर्मों पर आधारित हैं। ज्यों - ज्यों हमारी महत्वाकांक्षाएं, इच्छाएं, अपेक्षाएं, अभिलाषाएं, मोहादि का दायरा बढ़ता जाता है कि त्यों-त्यों हमारी समस्याएं परेशानियां बढ़ती जाती हैं। फिर हम मजबूरी वश अपनी समस्याओं की पूर्ति के लिए किसी तांत्रिक, ज्योतिषी या डॉक्टर के पास जाते हैं और ठगाएं जाते हैं।

मेरे निजी विचार से आज कोई कितना भी बड़ा ज्योतिषी, तांत्रिक या चमत्कारिक शक्ति आपके भाग्य व कर्म से अधिक कुछ भी नहीं दे सकते। जीवन-मरण, हानि-लाभ, यश-अपयश, आदि सब आपके पूर्व व वर्तमान कर्मों पर निर्भर है। उपाय तो मात्र इतना कार्य कर सकते हैं कि जैसे नल पाईप में कोई कंकरी फँसी हो तो जल प्रवाह अवरुद्ध होता है, यदि उस अवरुद्ध (कंकरी) को हटा देते हैं तो पानी प्रवाहित होने लगता है। ठीक ऐसे ही जो ऊर्जा अन्यत्र जा रही थी उसे मंत्र द्वारा सही जगह पर लगाना ही समस्या का सही समाधान है। मेरे विचार से उपाय का अर्थ ऊर्जा का उपयोग है। क्योंकि ग्रह कोई ठोस व्यक्ति विशेष न होकर राशियों (गैसों) के पिन्ड हैं। और प्रत्येक व्यक्ति उन राशियों से कम या अधिक प्रभावित होता है। जिसे हम उपाय के माध्यम से न्यूनाधिकता को कम या ज्यादा कर सकते हैं जो कार्य सिद्धि में सहायक होती है।

वैसे उपायों में भी गहन विज्ञान छुपा है। जैसे पीली हल्दी की गाँठ को पूजा करके अपने पास रखने से धन शुभता का कार्य प्रशस्त होता है। क्योंकि पीली हल्दी गुरु का प्रतिनिधित्व करती है और गुरु धन व ज्ञान का कारण है। जब हम पूजा करते हैं तो हमारे दिमाग की तरंगें उसमें प्रविष्ट होकर उसका प्रभाव बढ़ाती हैं व उसे शरीर में रखने से यह शेष रंगों को अवशोषित करके पीले रंग को प्रभावी बनाती हैं, जिससे हमारे शरीर के पास या उस स्थान पर विशेष औरा बनाती हैं, जो अनूकूल होकर उससे संबंधित तत्त्वों को आकर्षित करती हैं। इसमें हमारी आस्था व विश्वास जितना प्रगाढ़ होगा, उतना ही अधिक ओरा (आभामण्डल) बढ़ेगा व आपसे संबंधित व्यक्ति या वस्तु

स्वतः ही अनुकूल होंगी।

वैसे मंत्र कोई व्यक्ति के लिए वस्तु अनुकूल प्रतिकूल नहीं करते और न ही किसी समस्या का समाधान करते हैं। हाँ यह बात अवश्य है कि यदि इन्हें आस्था पूर्वक जपा जाय तो आपके मन मस्तिष्क व शरीर में विशेष प्रकार की ऊर्जा का संचार होता है, जिसके कारण आभामण्डल अधिक विकसित होकर यथायोग्य व्यक्ति द्वारा या अन्य कारणवश आपको नई दिशा या सोच का मार्ग प्रशस्त होकर समस्या के समाधान में सहायक सिद्ध होता है। जो दिल दिमाग व शरीर को भी स्वस्थ करता है। आस्था और विश्वास जितना प्रगाढ़ होता है उतनी ही अधिक शीघ्र सफलता मिलती है और फिर उपाय तो मात्र आस्था और विश्वास का ही विषय है तर्क का नहीं। मेरी दृष्टि से विश्वास का उदय भी वहीं से शुरु होता है जहाँ तर्क, विचार, बुद्धि, शब्द सब गौण हो जाते हैं। केवल आस्था व चेतना जागृत होती है तभी कल्याणकारी (चमत्कारी) लाभ मिलता है।

वैसे जीवन में चमत्कार नाम की कोई चीज नहीं होती, हाँ प्रकृति प्रदत्त प्रत्येक वस्तु स्वयं चमत्कार है। अतः सत्य केवल वह नहीं है जो प्रत्यक्षतः दिखता है; बल्कि सत्य वह भी है जो दिखता भी नहीं है किन्तु अनुभूत होता है। आज की कल्पना कल सत्य हो सकती है, मात्र श्रद्धा होना चाहिए। इस शास्त्र में दिये गए सभी उपाय शास्त्रीय पुस्तकों, शास्त्रों, पारम्परिक स्तर पर गाँवों में प्रयुक्त किए जाने वाली प्रक्रियाओं, वैद्यों एवं बुजुर्गों आदि से प्राप्त किए गए हैं और प्रमाणिक हैं, परन्तु सभी हमारे गुरुदेव द्वारा परीक्षित नहीं है। हाँ कुछ क्रियाओं का प्रयोग हमारे गुरुदेव द्वारा किया गया जिससे लोग लाभान्वित अवश्य हुए हैं। अतः हमें विश्वास है कि शेष उपाय भी प्रामाणिक सिद्ध ही होंगे। **यदि इस पुस्तक में आपको कोई कमी महसूस हो तो मुझे अवगत करना जिससे भविष्य में गलती की पुनरावृत्ति न हो सके। आपके शब्द हमारे लिए प्रेरणादायक होंगे जो हमारी श्रद्धा को प्रगाढ़ता देंगे।**

अंत में इस ग्रन्थ के प्रकाशन में द्रव्य सहयोगी सभी समाज का आभार व्यक्त करती हुई, परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि ज्ञानदान प्रदाताओं के लिए एक दिन केवलज्ञान की प्राप्ति हो, जिससे वह संसार सागर से पार होकर शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकें। अन्त में मम गुरुदेव मुनि श्री प्रार्थना सागर जी महाराज के श्री चरणों में श्रद्धा–भक्ति पूर्वक कोटि कोटि वंदन।

–श्रीमती निर्मला पाटनी

प्रधान संपादिका– प्रार्थना टाइम्स, मासिक

Email:-prarthnatimes1@gmail.com

णमोकार का चिंतन

मंत्र हमारी सुरक्षा करता है एवं मंत्रों से ही हमारा कवच बनता है। हमारे इर्द-गिर्द आभामण्डल को शब्द का संयोजित रूप मंत्र दृढ़ता देता है। मंत्र संकट का निवारण करता है। मंत्र से अनेक कार्य सम्पन्न होते हैं। शब्द के साथ संकल्प शक्ति जुड़ती है तो सर्व कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। मंत्र का दुरुपयोग भी संभव है।

- जो पुनः-पुनः अभ्यास एवं मनन से सिद्ध होता है वह मंत्र है। इससे लौकिक व लोकोत्तर सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

मंत्र दैवी शक्ति है जो ध्वनि के रूप में अभियोजित होती है। मंत्र के जाप से स्पन्दनों का निर्माण होता है। स्पन्दनों से आकृतियाँ बनती हैं। ये स्पन्दन शक्तिशाली आध्यात्मिक शक्तियाँ होती हैं। मंत्र का जाप करने से ये शक्तियाँ उद्घाटित होती हैं।

आचार्य सोमदेव महाराज ने यशस्तिलक चम्पू में लिखा है- भाष्य जप से जितना लाभ होता है, उससे हजार गुना लाभ अंतर्जप (उपांशु) जाप से होता है और अर्न्तजप से जो लाभ होता है उससे हजार गुना लाभ मानसिक जप से होता है। मंत्र साहस बढ़ाने का माध्यम है। साहस के लिए जितनी ऊर्जा चाहिए, वह यदि प्राप्त होती है तो साहस जाग जाएगा।

अब हम नवकार मंत्र की बात करेंगे। नवकार मंत्र अनादिसिद्ध मंत्र है। इसे परमेष्ठी मंत्र भी कहते हैं। इसमें चौदह पूर्वों का सार है। सम्पूर्ण जैन वाङ्मय इसमें समाया है। यह परम मंगलकारी है। प्रथम दो पद देव कोटि में आते हैं। शेष तीन पद गुरु कोटि में आते हैं।

जिस स्थान पर मयूर अपने पंखों को फैलाकर नृत्य करते हैं उस स्थान पर रह रहे व्यक्तियों को सर्प का लेशमात्र भी भय नहीं रहता । वैसे ही नमस्कार महामन्त्र को मनोमंदिर में प्रति समय उपयोग पूर्वक स्मरण में रखने वाली आत्मा को भयंकर विडंबना दायक संसार कुछ नहीं कर सकता।

जापाज्जयेत्क्षयमराचक माग्निमांद्यं,
कुष्ठोदरामकसनश्वनादि रोगान्।
प्राप्नोतिचाऽप्रतिमवाग् महतीं महद्भयः,
पूजां परत्रच गतिं पुरुषोत्तमाप्ताम्॥

नवकार मंत्र के जाप से क्षय, अरुचि, अपच, कोढ़, आँवरोग, खाँसी, श्वास आदि रोगों का नाश होता है। जाप करने वाला अप्रतिम वाणी वाला बनता है। अंत में परमगति (मोक्ष) को प्राप्त होता है।

शब्द अथवा शब्दों के समूह का अर्थ उनकी मानस पटल पर छवि, ज्ञान, ध्यान,

आदि निम्नलिखित स्थितियों पर निर्भर करता है। जैसे महामंत्र में प्रथम पद णमो बोलने के बाद कोई 'अरिहंताणं' तथा कोई 'अरहंताणं' शब्द समूह का उच्चारण करते हैं। किन्तु इन दोनों शब्दों में काफी अन्तर है। अरिहंत शब्द अरि+हंत से बना है। जिसमें 'अरि' का अर्थ 'शत्रु' तथा 'हंत' का अर्थ 'नाश' होता है। अर्थात् इस अपेक्षा से अरिहंत का अर्थ हुआ 'शत्रुओं' को नाश करने वाले। वैसे शत्रु का अर्थ व्यापक है। व्यक्ति की व्यक्ति से, समाज की समाज से, राष्ट्र की राष्ट्र से, पशु की पशु से तथा जलचर, नारकी, तथा देवताओं में होने वाली शत्रुता भी शत्रुता कहलाती है। अत: अरिहंत शब्द के शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा अपने शत्रु का हंत (नाश) करने वाला प्रत्येक जीव, वर्ग अरिहंत कहलाने का अधिकारी हो जावेगा।

किन्तु यहाँ भाव शत्रु क्रोध, मान, माया, लोभ तथा घातिया कर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय व अन्तराय जो जीव के मोक्ष जाने में बाधक हैं उन्हें लिया गया है। अत: जो इनका नाश करने वाले हैं वह सभी अरिहंत के अधिकारी हैं। वैसे अरिहंत और अरहंत में बहुत सूक्ष्म अन्तर है। अरिहंत का अर्थ है शत्रुओं का नाश करने वाले और अरहंत शब्द अर्हं शब्द से बना है। 'अर्हं' शब्द का अर्थ है जिन, पूजनीय, सम्माननीय, योग्य तीर्थंकर आदि। आपके मन में शंका हो सकती है कि पूजनीय या सम्माननीय तो इन्द्र, चक्रवर्ती, सम्राट, राष्ट्रपति, देवी-देवता, आदि अनेक हैं फिर तो सभी अरहंत पद को प्राप्त हो जाएंगे, किन्तु ऐसा नहीं है, 'अरहंत' से मतलब जो तीनों लोकों में सर्वोत्कृष्ट हैं। अरहन्त की समृद्धि के सामने इन्द्र व चक्रवर्ती की समृद्धि भी तुच्छ है। अरहंत तो इन्द्र, चक्रवर्ती, देवों से भी पूजित हैं। दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थों में अरहंत का अर्थ लिखा है- अतिशय पूजार्हत्वाव्दार्हन्तः। अर्थात् अतिशय पूजा के योग्य होने से अर्हंत संज्ञा प्राप्त होती है। इसलिए जो अतिशयों के योग्य हैं वह अरहन्त कहलाते हैं। जो देव, असुर और समस्त मनुष्यों से पूज्यता को प्राप्त होते हैं।

अरिहंताणं और अरहंताणं शब्द में कुछ विचारणीय बातें:-

१. 'अरिहंत'शब्द में 'अरि' का अर्थ शत्रु होता है और 'हन्त' का अर्थ नष्ट करने वाला। अत: शत्रु का नाश करने वाला प्रत्येक जीव, समुदाय अरिहंत कहलायेगा।

२. यदि 'अरि' का अर्थ कर्म शत्रुओं से लिया जावे और उनका हन्त करने वाले को अरिहंत कहा जावे तो यह भी उचित नहीं है, क्योंकि ऐसी अवस्था तेरहवें गुणस्थान में होती है और उस समय उनके ६३ कर्म प्रकृतियों का क्षय हो जाता है, घातिया कर्म नहीं रहते, उनको हन्त करने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता है।

३. वीतराग के न कोई शत्रु हैं और न ही कोई मित्र हैं। अत: 'हन्त', घात क्रिया के द्योतक शब्द परमात्मा को अरिहंत कहना भी उचित नहीं है।

४. 'अरिहंत' पद में प्रयुक्त 'अरि' शब्द शत्रुओं का तथा 'हन्त' शब्द हनन, घात, नष्ट करने वाले अर्थात् प्रयुक्त होता है। जबकि णमोकार मंगलमय मंत्र में हंत धातु का

प्रयोग अहिंसा संस्कृति के अनुकूल कदापि नहीं है। लौकिक व्यवहार में भी भोजन के समय मारना, नष्ट करना जैसे हिंसा वाची क्रिया पद के उच्चारण में अन्तराय माना जाता है। अत: कोई भी अहिंसक व्यक्ति इन शब्दों का प्रयोग मंगल कार्य में नहीं कर सकता।

५. मंगल वाक्यों का स्मरण सर्वथा कल्याण कामना में किया जाता है। किसी भी मंगल वाक्य में 'शत्रु' और 'हन्त' धातु जैसे पदों का प्रयोग कदापि मांगलिक नहीं माना जा सकता।

६. साधक की दृष्टि सबसे पहले शब्दों पर जाती हैं तत्पश्चात अर्थ पर। यदि शब्द ही किसी दोष से दुष्ट हो तो वह मंगल वाक्य कल्याण प्राप्ति का परिचायक नहीं हो सकता है।

७. बीजाक्षरों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अरिहंत पद में प्रयुक्त 'अरि' शब्द में निहित 'ह' कार शक्ति बोधक बीज है। जिसका व्यवहार मारण और उच्चाटन के लिए किया जाता है अत: मंगलमय आत्माओं के स्वरूपांकन में शक्ति बीज का न्यास संभव नहीं है।

९. अहिंसा संस्कृति आत्मशोधन पर विशेष बल देती है अत: 'अरि' 'अरु' और 'हन्त' का प्रयोग संभव नहीं है। कारण 'उ' भी उद्वेग बीज माना गया है।

१०. जो कर्मों को शत्रु मानते हैं वह उनका भ्रम है। क्योंकि कहा भी जाता है-

कर्म विचार कौन भूल मेरी अधिकाई।
अग्नि सहे घनघात, लोह की संगत पाई॥

कर्म तो जड़ हैं, उनकी सुख-दुख देने की इच्छा नहीं है। जीव अपने रागादि परिणामों से पुद्गल को कर्म रूप परिणमित करके अपना बुरा करे तो इसमें कर्मों का क्या दोष? इसलिए योग्य पुरुष कर्मों को शत्रु (अरि) नहीं मानते। अत: कर्मों को 'हंत' करने का 'घात-नष्ट' करने का विचार भी महापुरुष के मन में नहीं आता।

११. जो यह कहते हैं कि अरिहंत ने कर्मों को नष्ट किया, तो यह कथन भी अनुचित है। कारण जीव अपने स्वरूप को भूलकर चौरासी लाख योनियों में अपने शुभ-अशुभ भाव के कारण भ्रमण करता है। जब जीव को अपने स्वरूप का ज्ञान होता है तब वह 'पर' का पीछा छोड़कर 'स्व' में रमण करना प्रारंभ करता है, इस अपेक्षा से जीव जब 'स्व' में रमण करता है तो कर्म उदय में आकर, क्षय होकर अलग हो जाते हैं। अत: यह कहना अनुचित है कि जीव ने कर्मों का नाश किया है।

१२. जो जीव कर्मों को शत्रु मानकर, मन में उनके प्रति द्वेष रखकर तप और जप करके कर्मों का नाश करने का विचार करते हैं, वे केवलज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि कर्मों को शत्रु मानने से राग द्वेष सहज ही हो गया। जबकि जहाँ राग-द्वेष होता है वहाँ केवलज्ञान नहीं हो सकता।

१३. शब्दों के समूह की विशिष्ट छवि मानस पटल पर बनती है। उस छवि के अनुसार ही व्यक्ति के भाव बनते हैं; श्रद्धा बनती है और उसके परिणाम होते हैं। जैसे शिखर जी व गिरनार जी का नाम लेने पर भिन्न-भिन्न छवि बनती है, जिस प्रकार लड़का-लड़की, मानव-मानवी, देव-देवी, शब्दों में केवल 'ई' की मात्रा का ही अन्तर है, फिर भी भिन्न-भिन्न छवि बनती हैं। वही स्थिति 'अरिहंत' और अरहंत की है। 'अरहंत' शब्द से ८ प्रातिहार्यों से युक्त, अनंत चतुष्टय से संपन्न, छियालीस गुणों वाले, इन्द्र व देवताओं से पूजित देवाधिदेव छवि वाले , समस्त लोक के आदरणीय वन्दनीय पूजनीय जिनेन्द्र देव।

अभी आपको बचपन में मिले संस्कारों के कारण 'अरिहंत' शब्द का अभ्यास बना हुआ है, तथा उस रूप कर्म शत्रुओं का नाश करने वाले परमात्मा की छवि बनी हुई है, लेकिन अब आपको पुराने जमाने के संस्कारों को तोड़कर उस अरहंत परमात्मा की छवि बनाना है जो अनंत चतुष्टय युक्त, अष्टप्रातिहार्य सहित, चौतीस अतिशयों से सम्पन्न हैं। उस देवाधिदेव प्रभु की छवि अपने दिल-दिमाग में बनाने में थोड़ा समय जरूर लगेगा लेकिन उचित और हितकारी अवश्य रहेगा।

णमोकार का अर्थ है नमस्कार। और नमस्कार तभी होगा जब हमें अपने परमात्मा के प्रति विनय 'लघुता' होगी, कृतज्ञता-जिज्ञासा होगी, फिर आपके हृदय में 'हन्त' अर्थात् नष्ट के भाव कैसे आ सकेंगे। अरे!जब नमस्कार करते ही अहंकार, मद, गर्व, उच्चता, अभिमान, पलायन हो जाता है फिर हन्त (नष्ट) कैसे करोगे? अरि (शत्रु) कैसे मानोगे? क्योंकि अहंकार के छोड़े बिना णमोकार नहीं हो सकता। अहं के छोड़े बिना नमन् नहीं हो सकता। और नमन के बिना जीवन चमन नहीं हो सकता। तत्त्वानुशासन ग्रन्थ में आचार्य श्री ने णमोकार के नमस्कार में एक-एक अक्षर की महिमा के विषय में कहा है-

णमोकार मंत्र के एक अक्षर का भी भक्ति पूर्वक नाम लेने से सात सागर के पाप कट जाते हैं, पाँच अक्षरों का पाठ करने से पचास सागर के पाप कट जाते हैं। पूर्ण मंत्र का उच्चारण करने से पाँच सौ सागर के पाप कट जाते हैं। इस मंत्र को १८४२२ प्रकार से बोला जा सकता है और वैसे भी इस णमोकार महामंत्र से ८४ लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई है। इस महामंत्र के प्रभाव से अनेकों आत्माओं का उद्धार हुआ है। कुमार पारसनाथ ने जलते हुए नाग-नागिन को सुनाया जिससे वह मरकर धरणेन्द्र-पद्मावती हुये। राजकुमार जीवंधर स्वामी ने मरते हुये कुत्ते को सुनाया, जिससे वह मरकर सुदर्शन नामक यक्षेन्द्र देव हुआ। मरते हुये बैल को राम ने सुनाया जिससे वह बैल मरकर सुग्रीव हुआ। उसी णमोकार महामंत्र के प्रभाव से अंजन चोर का उद्धार हुआ। इसके जाप के विषय में प्राचीन आचार्यों ने कहा है-

अट्ठसंय अट्ठसहस्स, अट्ठलक्ख अट्ठ कोडिओ।

जो गुणइ भत्ति सो, पावइ सासयं ठाणं॥

अर्थात् जो व्यक्ति इस महामंत्र की आठ करोड़, आठ लाख, आठ हजार, आठ सौ आठ बार जाप करता है वह शाश्वत सुख धाम मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। लगातार सवा लाख जाप करने से सब कष्ट दूर होकर दरिद्रता से मुक्ति मिलती है। एक लाख जाप करने से आई हुई विपत्तियाँ नष्ट होकर अभीष्ट फल प्राप्त होता है। इस महामंत्र को सिद्ध करने की अनेकों विधियाँ प्राचीन ग्रन्थों में मिलती है। एक जगह लिखा है।

जो गुणई लक्खमेगं, पुण्णइ विहिइ जिगनमुक्कारं।
सो तईअभवे सिज्झइ, अहवा सातट्ठमे जम्मे॥

अर्थात् जो मनुष्य पूर्ण विधि सहित नमस्कार मंत्र का एक लाख जाप कर लेता है, वह तीसरे या सातवें या आठवें भव में नियम से सिद्ध हो जाता है। अन्यत्र भी कहा है–

नमस्कारसमो मंत्र, शत्रुञ्जयसमो गिरी।
वीतरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति।

नमस्कार जैसा मंत्र, शत्रुञ्जय जैसा पर्वत, वीतराग जैसे देव न भूतकाल में हुए हैं और न ही भविष्य काल में होंगे। मंत्र-विशारद कहते हैं कि इस मंत्र का नौ लाख जाप करने से नरक गति के बन्ध का निवारण होता है। अनेक प्रकार की सिद्धियाँ व संपत्तियाँ प्राप्त होती हैं। यदि प्रतिदिन एक माला का जाप करें तो २५ वर्ष में नौ लाख मंत्र जाप पूर्ण होता है। और यदि पाँच माला प्रतिदिन जाप करें तो पाँच वर्ष में नौ लाख जाप पूर्ण होता है।

मंत्र का सामर्थ्य:– मंत्र की रचना अक्षरों के समायोजन से होती है। और फिर कोई भी अक्षर निर्बीज नहीं होता– ''निर्बीज अक्षरं नास्ति''। प्रत्येक अक्षर की सजीवता ही अनुकूल समायोजन पाकर शक्ति, शान्ति और समृद्धि को उत्पन्न करती है। **आज विज्ञान ने नवीन तथ्यों का उद्घाटन किया है। उनमें ''साउण्ड-एनर्जी''– ध्वनि शक्ति भी एक है। ध्वनि तरंगों से हीरे की कटाई आज सामान्य बात बन गई है। हीरे जैसे कठोर रत्न को ध्वनि-तरंगें काट सकती हैं, तब क्यों नहीं मंत्र-ध्वनि द्वारा कारक और मारक क्रियायें हो सकती हैं? जैसे ध्वनि के द्वारा आज रिमोट चलता है, मोबाईल चलता है, कम्प्यूटर चलता है, उसमें जो आवाज सेव कर दी जाती है उसी से वह ऑन-ऑफ होता है, ठीक उसी प्रकार प्राचीन आचार्य कहते हैं कि पंच नवकार मंत्र के चिन्तन मात्र से जल, अग्नि आदि स्थिर हो जाते हैं। शत्रु-महामारी, चोर तथा राज्य संबंधी घोर विघ्नों का नाश हो जाता है। शब्द के प्रयोग से व्याख्याता हजारों-लाखों श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर देता है।** मंत्र में शब्दों के साथ-साथ साधक की भावनाओं का भी बहुत प्रभाव पड़ता है। कुछ मंत्रों के तो अधिष्ठाता देवी-देवता होते हैं जो अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार कार्य करते हैं।

किन्तु योग्यता के अभाव में मन्त्र सिद्ध नहीं होता-यथा बाँझ स्त्री। इसलिए पूर्वाचार्यों ने मंत्र साधक में योग्य योग्यता होना भी बतलाई है। मंत्र साधना की योग्य विधि बतलाई है। कुछ लोग पुस्तकों में महिमा पढ़कर, दूसरों से महिमा-चमत्कार सुनकर मंत्र सिद्ध करने लगते हैं। किन्तु मैं उन लोगों से कहना चाहता हूँ कि अपने मन से, या पुस्तकों में महिमा पढ़कर कोई मंत्र सिद्ध न करें। योग्य गुरु से जो मंत्र-तंत्र के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हों उन्हीं से मंत्र लेकर सिद्ध करें, अथवा अनर्थ भी हो सकता है। क्योंकि मन्त्रों को सिद्ध करना यानि सर्प की वामी में हाथ डालना है। मधुमख्खियों के छत्ते को हाथ से पकड़ना है, जलती हुई आग में कूदना है। क्योंकि प्रत्येक अक्षरों के, प्रत्येक मंत्रों के अधिष्ठाता देवी-देवता होते हैं जो गलती होने पर अशुभ भी करते हैं।

मन्त्रबीज और मन्त्र बनाने के विधान में बताया गया है कि 'स्वर और व्यंजन पर अनुस्वार (ं) बिन्दु लगाने पर वह मन्त्र बीज बनता है। वैसे प्रत्येक कार्यानुसार मन्त्र और साधना विधि का उसके साथ उल्लेख रहता है। यदि न हो और आवश्यकता की पूर्ति करनी हो तो उस दशा में नाम के प्रथम अक्षर पर बिन्दु लगावें और नाम के साथ चतुर्थीभक्ति जोड़ें। नाम के आगे प्रणय और अन्त में नमः पल्लव लगाने पर वह उस देव का मूल मन्त्र बन जाता है- जैसे पारसनाथ- ***''ॐ पां पारसनाथाय नमः''***। यह भगवान पारसनाथ का मूल मन्त्र है।

ऐसे ही सरस्वती ज्ञान बीज (ऐं), कामबीज (क्लीं), मायाबीज (ह्रीं), लक्ष्मीबीज (श्रीं), मंगलबीज (ॐ) का सभी मन्त्रों के आदि में उपयोग होता है। (अपवाद को छोड़कर) इसी प्रकार अन्त में नमः का उपयोग होता है। किस मन्त्र का कहाँ किस रूप में उपयोग किया जाए यह प्रत्येक स्वर-व्यंजन में निहित शक्ति से ज्ञात होता है। मन्त्र में पल्लव की भी जानकारी होनी चाहिए। मंत्र के उच्चारण का प्रभाव भी साधक पर पड़ता है, वैसे भी मंत्र उच्चारण के आठ स्थान माने गये है- वक्ष, कंठ, सिर, जिह्वामूल, दांत, नासिका, ओष्ठ, और तालू। लेकिन यह तो स्थूल जगत की बात है। इसके पूर्व उच्चारण मूलाधार (शक्तिकेन्द्र) से प्रारंभ होकर तेजस केन्द्र पर पहुंचता है, वहाँ से आनन्द, विशुद्धि केन्द्र को पारकर तालू तक वही मंत्र पहुंचता है। पश्चात दर्शन केन्द्र (आज्ञाचक्र, भृकुटि के मध्य) तक पहुंच जाता है। तब तेजस्विता प्रकट होती है। **मंत्र जाप अनेक प्रकार का होता है- जैसे मौन जाप, मुखर जाप, लेख जाप, एकाकी जाप, समुदाय जाप आदि।** मंत्र की महिमा के बारे में पूर्वोचार्यों ने लिखा है-

मंत्रं संसारसारं, त्रिजगदनुपमं, सर्वपापारिमंत्रम्।
संसारोच्छेदमंत्रं विषम्विषहरं कर्मनिर्मूलमंत्रम्॥
मंत्रं सिद्धिप्रदानं शिवसुखजननं केवलज्ञानमंत्रम्।
मंत्रं श्री जैन मंत्रं जप-जप जपितं जन्मनिर्वाणमंत्रम्॥

अर्थात् यह महामंत्र संसार में सारभूत है, तीनों लोकों में अद्भुत है, समस्त पापों को नष्ट करने वाला शत्रु है, जन्म-मरण रूप संसार का उच्छेदकर्ता है। विषमता रूप विष का हरणकर्ता है। कर्मों को निर्मूलन करने वाला है। यह मंत्र सिद्धि (मुक्ति) प्रदायक है, मोक्ष सुख का जनक है, केवलज्ञान रूपी मंत्र का उत्पादक है। यह राग-द्वेष विजेताओं का सूचक है, जन्म से लेकर निर्वाण तक जपने योग्य मंत्र है। इसलिए इस जपनीय महामंत्र का जाप करो, जाप करो। क्योंकि जैंसे फूलों का सार इत्र है, दूध का सारभूत पदार्थ घी है, वैसे ही जिनशासन का सारभूत तत्व णमोकार महामंत्र है। जिसमें संक्षिप्त से चौदह पूर्व का सार सन्निहित है। यह महामंत्र जैन परम्परा से संबंधित है। किन्तु इसे तो जैन-अजैन कोई भी पढ़ सकते हैं। इसका उपयोग करके कोई भी सफलता प्राप्त कर सकता है। जैसे दूध से कोई भी मक्खन (घृत) निकाल सकता है, बस उसे उसकी विधि का ज्ञान होना चाहिए। जाति, लिंग, भाषा आदि उसमें बाधक नहीं बनते। ठीक ऐसे ही णमोकार महामंत्र से सभी लाभ ले सकते हैं।

हमारे आचार्यों ने पंचपरमेष्ठी को पाँच रंगों में विभक्त किया है। अरहंतों का श्वेत रंग, सिद्धों का लाल रंग, आचार्यों का पीला रंग, उपाध्यायों का नीला रंग तथा साधुओं का श्याम रंग बताया गया है। हमारा सारा मूर्त्त संसार पौद्गलिक है। पुद्गल में भी वर्ण, रस, गन्ध वा स्पर्श होता है। वर्ण का हमारे शरीर और मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। **नीला रंग जब शरीर में कम होता है तब क्रोध की मात्रा बढ़ जाती है। और नीले रंग की पूर्ति होने पर क्रोध स्वतः ही कम हो जाता है। श्वेत रंग की कमी होने पर स्वास्थ्य लड़खड़ाने लगता है। लाल रंग की न्यूनता से आलस्य और जड़ता बढ़ने लगती है। पीले रंग की कमी से ज्ञानतन्तु निष्क्रिय हो जाते हैं, तब समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता। काले रंग की कमी होने पर प्रतिरोध की शक्ति कम हो जाती है। रंगों के साथ मानव के शरीर का कितना सम्बन्ध है, यह इससे स्पष्ट होता है। णमो अरहंताणं का ध्यान श्वेत वर्ण के साथ किया जाये, तो श्वेत वर्ण हमारी आन्तरिक शक्तियों को जागृत करने में सक्षम होता है। वह समूचे ज्ञान का संवाहक है। श्वेत वर्ण स्वास्थ्य का प्रतीक है। हमारे शरीर में रक्त की जो कोशिकाएं हैं, वे मुख्य रूप से दो रंगों की है-श्वेत रक्त कणिकाएं (W.B.C.) और लाल रक्त कणिकाएं (R.B.C.) जब हमारे शरीर में रक्त कणिकाओं का सन्तुलन बिगड़ जाता है तो शरीर रुग्ण हो जाता है। ''णमो सिद्धाणं'' का जाप हमारे शरीर में लाल वर्ण को जागृत करता है। ''णमोआइरियाणं'' का पीला रंग हमारे मन को सक्रिय बनाता है। शरीर शास्त्रियों का मानना है कि यह थायराइड ग्लेण्ड आवेगों पर नियंत्रण करता है। ''णमो उवज्झायाणं'' का नीला रंग शान्तिदायक, एकाग्रता पैदा करने वाला, कषायों को शान्त करने वाला है। इस पद के जाप से आनंद केन्द्र सक्रिय होता है। ''णमो लोए सव्व साहूणं'' का काला रंग शरीर में प्रतिरोध शक्ति बढ़ाता है। कुल मिलाकर णमोकार मंत्र**

का जाप वा ध्यान–इहलौकिक वा पारलौकिक सुखशांति देने वाला है। इस मंत्र की साधना से साधक संसार सागर से पार होकर सिद्धावस्था को प्राप्त कर सकता है।

णमो अरहंताणं तिलोय–पुज्जो य संधुओ भयवं।
अमर–नरराय–महिओ, अणाई–निहाणां सिवं दिसउ॥

अर्थात्– उन अर्हन्तों को नमस्कार हो, जो त्रिलोक द्वारा पूज्य, और अच्छी तरह स्तुत्य हैं तथा इन्द्र और राजाओं द्वारा वन्दित हैं, और जो जन्ममरण से रहित हैं, वे हमें मोक्ष प्रदान करें।

अरहंत वंदण नमंसणशणि, अरहंत पूयसक्कारं।
सिद्धिगमणं च अरहा, अरहंता तेण बुच्चंति॥

जो वंदन और नमस्कार के योग्य हैं। जो पूजा, सत्कार, सिद्धिगमन के योग्य हैं, उन्हें अरहंत कहते हैं। अरहंत सर्वोच्च सामर्थ्य को धारण करने वाले हैं। जगत की समस्त अर्हतओं में उनका स्थान सर्वोच्च है, फिर चाहे वह ज्ञानबल हो, रूपबल हो, धनबल हो, सामर्थ्यबल हो, उनके तुल्य दूसरा कोई नहीं हो सकता।–

कपिल पाटनी
सोनकच्छ

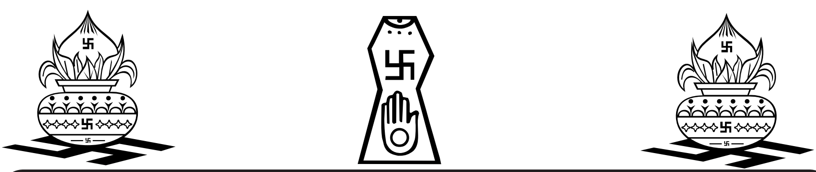

वि ेशा सूचना

- यह पुस्तक उनके लिए है जो मंत्रों आदि पर पूर्ण श्रद्धा,(विश्वास)रखते हैं।
- यह पुस्तक उनके लिए हैं जो देव शास्त्र गुरु पर पूर्ण आस्था रखते हैं।
- यह पुस्तक उनके लिए हैं जो अपाय विचय धर्म ध्यानी साधक हैं।
- यह पुस्तक उनके लिए हैं जो किसी भी प्रकार से दुखी परेशान हैं, अथवा किसी दुखी परेशान व्यक्ति के दुखों को दूर करना चाहते हैं।
- यह पुस्तक उनके लिए हैं जो जीवन में सुख शान्ति समृद्धि चाहते हैं। यदि आपमें इनमें से कोई भी बात लागू होती है तो आप पुस्तक को पढें...आप का स्वागत हैं, अन्यथा आप पुस्तक को बन्द कर दें,पुस्तक को ना पढें, यह पुस्तक आप के लिए नही हैं।

मूनि प्रार्थना सागर

जरा सोचो विचार करो

जैसे कि दवाईयों की दुकान पर विभिन्न प्रकार की दवाईयों का संग्रह रहता है, मगर मरीज वही दवाई खरीदता है जिसकी उसे आवश्यकता होती है अथवा जिन्हें खरीदने की चिकित्सक सलाह देते हैं। उसे अन्य दूसरी दवाईयों से कोई प्रयोजन नहीं रहता। ठीक इसी प्रकार आपके लिए भी यह शास्त्र मंत्रों का भण्डार है, एक मेडीकल स्टोर है। अत: इसकी आवश्यकता उसे ही है जो रोगी हैरान-परेशान, दु:खी-पीड़ित है। स्वस्थ और सुखी जीवों को इससे दूर ही रहना चाहिए। क्योंकि बिना आवश्यकता के वस्तु की कीमत नहीं होती। अत: जिसे इसकी आवश्यकता हो वही इसका उपयोग करे और उसी मंत्र का उपयोग करे, जिसकी उसे आवश्यकता है, ऐसा नहीं कि थोड़ा सा यह कर लूँ, थोड़ा सा वह कर लूँ। अत: किसी योग्य अनुभवी गुरु के मार्गदर्शन-निर्देशन में ही मंत्र सिद्ध करें।

यह शास्त्र तो मंत्रों का भण्डार है जैसे दवाई की दुकान दवाईयों का भण्डार है। उसमें सभी प्रकार की दवाईयाँ होती हैं। जीवन जीने की और मरने की भी, अब जिसे जो आवश्यकता हो वह खरीद लें, ठीक इसी प्रकार दुनिया में सभी प्रकार के मंत्र होते हैं जिसे जो आवश्यक हो वह सिद्ध कर लें लेकिन अन्य मंत्रों को बुरा कहकर निन्दा आदि न करें, क्योंकि कोई भी रोगी अपनी मतलब की दवाई के अलावा अन्य दूसरे प्रकार की दवाईयों को बुरा नहीं कहता। कारण पता नहीं कब किस दवाई की आवश्यकता पड़ जाये और उसे लेना पड़े। इसलिए वह अपने मतलब की मेडिकल स्टोर से दवाई लेकर अन्य प्रकार की दवाई से मध्यस्थ (तटस्थ) रहता है, ठीक उसी प्रकार आप भी अपने मतलब का मंत्र लेकर अन्य प्रकार के मंत्रों से मध्यस्थ रहें। उन्हें भला-बुरा कहकर उनकी निन्दा आदि न करें क्योंकि पता नहीं कब आपका भाग्य फूट जाए, कब कर्म रुठ जायें, कब दुर्भाग्य आ जाये, कब किस्मत पल्टा खा जाये और आपको दर-दर भटकना पड़ जाये फिर कहीं ऐसा न हो की वही मंत्र आपको कोई जपने को कहें, फिर क्या होगा, जरा सोचो ? विचार करो... ?

तंत्र अधिकार

मंगलाचरण

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि।
साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

मंत्र विद्या

मकारं च मन: प्रोक्तं त्रकारं त्राण मुच्यते।
मनस्त्राणत्व योगेन मंत्र इत्यभिधीयते॥

अर्थात् 'मं' का अर्थ निज से संबंध रखने वाली मनोकामना, 'त्र' का अर्थ है रक्षा करना, इस प्रकार जो मनोकामना की रक्षा करे वह 'मंत्र' कहलाता है। वैष्णव धर्म के ग्रन्थों में लिखा है– 'मननात् त्रायेत यस्मात्तस्मान्मन्त्र: प्रकीर्तित:' अर्थात् 'म' कार से मनन और 'त्र' कार से रक्षण। अर्थात् जिन शब्दों वाक्यों, विचारों से मनोकामना की रक्षा हो उसे मंत्र कहते हैं। वैसे जिन शब्दों के जाप से कार्य सिद्ध हो उसे मंत्र कहते हैं या जिन शब्दों के जाप से मन में शान्ति हो उसे मंत्र कहते हैं। मंत्र शब्द का मूल अर्थ है गुप्त परामर्श क्योंकि मंत्र शब्द की उत्पत्ति मतृ धातु से हुई है जिसका अर्थ है गुप्त बोलना। आगम में लिखा भी है।

तेजस्करं मुक्ति करं प्राणांतेपि न दीयते,
येन दत्तात्वियं विद्याऽनर्ध्यातेन जिनं वपुः।
गता विद्या प्रतापश्च तेजस्कांतिवीर्यस्तथा,
तेन विद्या न दातव्या प्राणांतेपि न धीधनैः।।

अर्थात् मंत्र तेज देने वाला, मुक्ति देने वाला है, इसको प्राणांत के समय भी किसी को नहीं देना चाहिए। जिसने भी इस अनमोल विद्या को दिया है, उसका तेज, कांति और वीर्य सब नाश को प्राप्त हो गया है। इसलिए प्राणों का अन्त होते समय अर्थात् मरते वक्त भी यह मंत्र विद्या किसी को भी नहीं देना चाहिए। कहा भी है–

स्युमंत्रयंते गुप्तं भाष्यंते मंत्रविभिद्रिति मंत्राः।

अर्थ– जिनको गुप्त रूप से कहें वे मंत्र कहलाते हैं। यह शब्द का व्युत्पति के अनुसार अर्थ है।

मंत्रों का मूल– अकारादिहकारान्त वर्णाः मंत्राः प्रकीर्तिताः।

अर्थ– अकार से लेकर हकार तक के स्वतंत्र असहाय अथवा परस्पर मिले हुए वर्ण (अक्षर) मंत्र कहलाते हैं।

अथवा– ''मननात् त्रायेत इति मन्त्रः–**जिसके मनन करने से रक्षण हो वह मंत्र है। मंत्र साधना में मूल तथ्य है–मनन अर्थात् मन्त्री (साधक) की भावना व अक्षरों के साथ तादात्मय ही मंत्र की सार्थकता है और यही इसकी विराट शक्ति है। जिसके बल पर मंत्र असाध्य को भी साध्य कर देता है। अप्राप्य को भी प्राप्य कर देता है और इष्ट सिद्धि में सहायक होता है। मन्यते ज्ञायते आदेशों अनेन इति मंत्रः अर्थात् जिसके द्वारा आत्मा का आदेश–अनुभव जाना जावे वह मंत्र है। अथवा मन्यते विचार्यते आत्मदेशो येन सः मंत्रः अर्थात् जिसके द्वारा आत्मा के स्वरूप का विचार किया जावे वह मंत्र है। अथवा मन्यते सत्क्रियन्ते परमपदे स्थितः आत्मा वा यक्षादि शासन देवता अनेन इति मंत्रः। अर्थात् जिसके द्वारा परमपद स्थित पंच परमेष्ठियों का अथवा यक्षादि शासन देवों का साधन किया जाये वह मंत्र है।**

अथवा– ''मननात् मन्त्रः'' मनन करने के कारण ही मन्त्र नाम पड़ा है। मन्त्र, मनन को उत्प्रेरित करता है, वह चिन्तन को एकाग्र करता है। अध्यात्मिक ऊर्जा (शक्ति) को बढ़ाता है। जैसे सूर्य की किरणों को एक कांच (लेन्स) के माध्यम से एकत्रित करने पर अग्नि उत्पन्न हो जाती है, ठीक उसी प्रकार मन्त्र के माध्यम से मन को एकत्रित करके ऊर्जा (शक्ति) उत्पन्न हो जाती है जिससे सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

मंत्र साधक के लक्षण

गुरु के लक्षण

अथातः संप्रवक्ष्यामि मंत्रिलक्षणमुत्तमम्।
यो मंत्रादिविधौ प्रोक्तस्सज्जातीयस्त्रिवर्णभृत्॥
रत्नत्रयधनः शूरः कुशलो धार्मिकः प्रभुः।
प्रबुद्धाखिलशास्त्रार्थः, परार्थनिरतः कृती॥
शांतः कृपालु निर्द्वेषः, प्रपन्नः शिष्यवत्सलः।
षट्कर्म कर्मवित्साधु, सिद्धविद्यो महायशाः॥
सत्यवादी जितासूर्यो, निरासो निरहंकृतिः।
लोकज्ञः सर्वशास्त्रज्ञो, तत्वज्ञो भावसंयुतः॥

अर्थ–मंत्र सिद्ध कराने वाले गुरु में निम्नलिखित लक्षण होने चाहिये। वह बीजाक्षरों को बनाने और मंत्रों को शुद्ध करने में समर्थ हो। वह बीजकोष, मंत्र व्याकरण और मंत्र सामान्य विधान का अच्छा ज्ञान रखने वाला हो। उत्तम वर्ण वाला, साहसी, धार्मिक, सब शास्त्रों का अर्थ जानने वाला, दूसरों का उपकार करने में आनंद मानने वाला, कृतज्ञ, शान्त, कृपालु, चतुर, शिष्यों से प्रेम करने वाला, लोक को पहचानने वाला, यशस्वी, तेजस्वी, सत्यवादी, ईर्ष्या रहित, अभिमान न करने वाला और द्वेष रहित पुरुष ही मंत्रों को सिद्ध कराने में गुरु बन सकता है।

शिष्य के लक्षण

दक्षो जितेन्द्रियो मौनी, देवताराधनोद्यतः॥
निर्भयो निर्मदो मंत्री, जपहोमरतः सदा।
धीरः परिमिताहारः, कषायरहितः सुधी॥
सुदृष्टि र्विगतालस्यः, पाप भीरु दृढ. व्रतः।
शीलोपवाससंयुक्तो, धर्मदानादितत्परः॥
मंत्राराधनशूरो धर्म दयास्व गुरु विनयशीलयुतः।
मेधा विगतनिद्रः प्रशस्तचित्तोऽभिमानरतः॥
देवजिनसमयभक्तः सविकल्पः सत्वाक विदग्धाश्च।
वाक्पटुरपगतशंकः शुचिरार्द्रमना विगतकामः॥
गुरुभणितमार्गवर्ती प्रारब्धस्यांतदर्शनोद्युक्तः।
बीजाक्षरावधारी शिष्यः स्यात्सद्गुणोपेतः॥

अर्थ- मंत्र साधना करने वाले शिष्य में निम्नलिखित गुण होने चाहिये- जो बुद्धिमान, चित्त को व इंद्रियों को संयम में रखने वाला, मौन से रहने वाला, देवता की आराधना करने को उद्यत हो, भय से रहित, मान से रहित, सुधी, सम्यग्दृष्टि, आलस्य रहित, पाप से डरने वाला, ग्रहण किए व्रतों को दृढ़ता से निर्वाह करने वाला, शील तथा उपवास से युक्त, धर्म तथा दानादि में लीन, मंत्र सिद्ध करने में वीर, दया भाव रखने वाला, अपने गुरु की विनय करने वाला, जप के समय ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, मेधावी, निद्रा को जीतने वाला, प्रसन्न रहने वाला, स्वाभिमानी, देव और शास्त्र की आराधना व भक्ति करने वाला, नि:शंक, सच बोलने वाला, पवित्र मन वाला, कामदेव को जीतने वाला, गुरु के बताये मार्ग पर चलने वाला, बीजाक्षरों को पहचानने वाला तथा अपने भाग्य के फल को भोगने को तैयार रहने वाला ही शिष्य हो सकता है।

मंत्र साधना के अयोग्य पुरुष

सम्यग्दर्शन दूरो वाक्कुंठ श्छांद सो भय समेत:।
शून्य हृदयोप लज्जो, मंत्रश्रद्धाविहीनश्च॥
आलस्यो मंदबुद्धिश्य, मायावी क्रोधनो विट:।
गर्वी कामी मदोद्रिक्तो, गुरुद्वेषी च हिसक:॥
अकुलीनोऽतिबालश्च, वृद्धोऽशीलोदयश्च न:।
चर्मादि श्रृंगकेशादि-धारी चाधर्मवत्सल:॥
ब्रह्महत्यादिदोषाढ्यो, विरूपो व्याधिपीड़ित:।
ईदृशो न भवेद्योग्यो, मंत्रवादेषु च सर्वथा॥

निम्न दोषों वाला मनुष्य कभी मंत्र साधक नहीं बन सकता, अत: गुरु को उचित है कि उसको मंत्र न दे-

अर्थ- जो सम्यग्दर्शन से दूर हो ,पाप करने वाला, कुंठित वाणी वाला, भय करने वाला, शून्य हृदय, निर्लज्ज, मंत्रों में श्रद्धा न रखने वाला, आलसी, मंद बुद्धि,मायावी, क्रोधी, भोगी, इन्द्रियलोलुपी, कामी, गुरु से द्वेष रखने वाला, हिंसक, शीलरहित, अंग-भंग, अत्यन्त बालक, अत्यन्त वृद्ध, १६ वर्ष से कम उमर वाला, रोगी हो वह साधक नहीं हो सकता।

गुरु का महत्व

गुरुरेव भवेन्माता गुरुरेव भवेत् पिता।
गुरुरेव सखा चैव, गुरुरेव भवेद्व्रतं॥
गुरु: स्वामी गुरुर्भर्ता, गुरुर्विद्या गुरुर्गुरु:।
स्वर्गो गुरुर्गुरुर्मोक्षो, गुरुर्बंधु: गुरु: सखा॥

गुरुपदेशादिह मंत्रबोधः प्रजायते शिष्यजनस्यसम्यक्।
तस्माद्गुरुपासनमेव कार्यं, मंत्रान्बुभुत्सोर्विनयेन नित्यम्॥

अर्थ- प्रत्येक मनुष्य को पहले किसी योग्य गुरु के चरणों में बैठकर शिष्य बनने की योग्यता प्राप्त करनी चाहिये और फिर गुरु की आज्ञा पाने पर मंत्र की आराधना में हाथ लगाना चाहिए। शिष्य को आदि से अन्त तक तन-मन और धन से सेवा करते हुए विनय करते रहना चाहिए। क्योंकि मंत्र विधि में सब आपत्तियों से प्राणों की रक्षा करने के कारण गुरु ही माता, गुरु ही पिता और गुरु ही हितकारी है। इसके अतिरिक्त साधक के योग्य उत्तम उपदेश देने के कारण गुरु ही स्वामी, गुरु ही भर्ता, गुरु ही विद्या, स्वर्ग और मोक्ष का दाता है तथा गुरु ही मित्र होता है। शिष्य को गुरु के उपदेश से ही भली प्रकार मंत्र का ज्ञान होता है। अतः ज्ञान की इच्छा रखने वाले को सदा ही विनयपूर्वक गुरु की उपासना करनी चाहिए। मंत्र गुरु से ही ग्रहण करना चाहिए।और भी कहा है-

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्ति,पूजा मूलं गुरुः पद्म।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं ,मोक्ष मूलं गुरुः कृपाः॥

गुरु से ही मंत्र ग्रहण का विधान

मंत्र को कभी भी देख - सुनकर या अपनी इच्छा से कभी आरम्भ न करें अन्यथा उससे अनर्थ होता है। अतएव साधक गुरु के मुख से ही मंत्र को लेकर सिद्धि के लिए विनयपूर्वक जपें। शिष्य कलिंग फल, वृताक, वरकंज, बैंगन, लहसुन, पुराना अनाज, दूध और घी आदि कभी न खावें एवं सप्त व्यसन (जुआ, मांस, शराब,शिकार,वेश्यागमन,चोरी,परस्त्री सेवन)से दूर रहें। मंत्र गुरु के दिये जाने पर विशेष गुणकारी होता है। अन्यथा देवता अनर्थ करते हैं और मंत्र का फल भी कुछ नहीं होता। **मंत्र छः कानों में जाने से छिन्न-भिन्न हो जाता है, इसलिए एकांत में ही गुरु शिष्य को मंत्र का उपेदश करें।** गुरुवत् शिष्य भी परोपकार के अर्थ उपदेश दें। किन्तु प्रगट रूप से इस ग्रन्थ में लिखा मिल जाने पर भी स्वयं न लेकर गुरु के द्वारा ही मंत्र लेकर सिद्ध करें।

मंत्राराधना में दिशा बोध

१. पूर्व यमान्तक-	मृत्यु का अन्त करने वाली
२. दक्षिण प्रज्ञान्तक-	बुद्धि का अन्त करने वाली
३. पश्चिम दिशा पद्यान्तक-	हृदय को नष्ट कारक
४. उत्तर विघ्नान्तक-	विघ्नों का अन्त करने वाली। (प्र. र. ५४०)

पूजा हेतु दिशा बोध

पूर्व- शान्ति पुष्टी,	दक्षिण- सन्तान अभाव,
पश्चिम- संतान विच्छेद,	उत्तर- धन लाभ,

आग्नेय- धनहानि, वायव्य- सन्तान अभाव,
नैऋत्य- कुल का क्षय, ईशान- सौभाग्य नाशक। (प्र. र. पे. ५४०)

मंत्र जाप विधि क्रम

दिशा चार्ट -

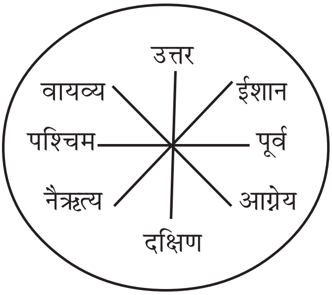

दिशा- वशीकरण कर्म को उत्तराभिमुख होकर, आकर्षण कर्म को दक्षिणाभिमुख होकर, स्तंभन कर्म को पूर्वाभिमुख होकर, शान्तिकर्म को पश्चिम की ओर मुख कर, पौष्टिक कर्म को नैऋत्य की ओर मुखकर, मारण कर्म को ईशानाभिमुख होकर, विद्वेषण कर्म को आग्नेय की ओर व उच्चाटन कर्म को वायव्य की ओर मुंह कर साधना करना चाहिए।

काल- शान्ति कर्म को अर्धरात्रि में, पौष्टिक कर्म को प्रभात में, वशीकरण, आकर्षण व स्तंभन कर्म को दिन के बारह बजे से पहले पूर्वाह्नकाल में, विद्वेषण कर्म को मध्याह्नकाल में, उच्चाटन कर्म को दोपहर बाद अपराह्न काल में व मारण कर्म की संध्या समय में साधना करना चाहिए।

मुद्रा- वशीकरण में सरोज मुद्रा, आकर्षण कर्म में अंकुश मुद्रा, स्तंभन कर्म में शंख मुद्रा, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में ज्ञान मुद्रा, मारण कर्म में वज्रासन मुद्रा, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में पल्लव मुद्रा का उपयोग करना चाहिए।

आसन- आकर्षण कर्म में दण्डासन, वशीकरण में स्वस्तिकासन, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में पद्मासन, स्तंभन कर्म में वज्रासन, मारण कर्म में भ्रदासन, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में कुक्कुटासन का प्रयोग करना चाहिए।

वर्ण- आकर्षण कर्म में उदय होते हुए सूर्य जैसे वर्ण का, वशीकरण कर्म में रक्त वर्ण, स्तंभन कर्म में पीतवर्ण, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में चन्द्रमा के समान सफेद वर्ण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में धूम्रवर्ण तथा मारण कर्म में कृष्ण वर्ण ध्यातव्य है।

तत्त्व ध्यान- आकर्षण कर्म में अग्नि, वशीकरण कर्म व शान्ति कर्म में जल, स्तंभन व पौष्टिक कर्म में पृथ्वी, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में वायु व मारण कर्म में व्योम ध्यातव्य है।

माला- आकर्षण कर्म व वशीकरण में मूंगे की माला, स्तंभन कर्म में सुवर्ण की माला, शान्ति कर्म में स्फटिक की माला, पौष्टिक कर्म में मोती की माला, मारण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में पुत्रजीवक की माला व्यवहार्य है।

पुष्प- स्तंभन कर्म में पीले, आकर्षण कर्म व वशीकरण कर्म में लाल, मारण, उच्चाटन, विद्वेषण कर्म में काले, शान्तिकर्म व पौष्टिक कर्म में सफेद पुष्प प्रयोजनीय हैं।

हस्त- आकर्षण, स्तंभन, शान्ति कर्म, पौष्टिक कर्म, मारण, विद्वेषण व उच्चाटन में दक्षिण (दाहिना हाथ) तथा वशीकरण में वामहस्त का प्रयोग निहित है।

अंगुलि- आकर्षण कर्म में कनिष्ठा, शान्ति कर्म में व पौष्टिक कर्म में मध्यमा, वशीकरण में अनामिका, स्तंभन, मारण, विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में तर्जनी का प्रयोग किया जाता है।

पल्लव- आकर्षण में वौषट्, वशीकरण में वषट्, स्तंभन व मारण कर्म में घे घे, शान्ति कर्म व पौष्टिक कर्म में स्वाहा, विद्वेषण कर्म में हूं, उच्चाटन कर्म में फट् आदि इस तरह पल्लव समझना चाहिए।

मंडल- वशीकरण कर्म में अग्नि मंडल के बीच, शान्ति कर्म में व पौष्टिक कर्म में वरुण मंडल के बीच, स्तंभन मोहन आदि में महेन्द्र मंडल के बीच, चक्र व साध्य का नाम रखना चाहिए।

हाथों की मुद्राएं- आह्वानन आदि पंचोपचार पूजा में मुद्राओं का भी विधान है। कुछ मुद्राओं का विवरण निम्न प्रकार है-

आह्वानन मुद्रा- दोनों हाथ बराबर कर अंजलि की तरह अंगूठों को अनामिका के मूल पर्व के पास लगायें, इसे आह्वाननी मुद्रा कहते हैं।

स्थापना मुद्रा- आह्वानन मुद्रा को उल्टा करें तो वह स्थापना मुद्रा हो जाती है।

सन्निधान मुद्रा- दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर अंगूठों को ऊपर सीधा करके रखें, इसे सन्निधान मुद्रा कहते हैं।

सन्निरोध मुद्रा- दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर अंगूठों को भी भीतर दबा लें, इसे सन्निरोध मुद्रा कहते हैं।

अवगुण्ठन मुद्रा- दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर दोनों तर्जनी अंगुलियों को लम्बा करें व अंगूठों को मध्यमा अंगुलियों पर रखें, इसे अवगुण्ठन मुद्रा कहते हैं।

अस्त्र मुद्रा- दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुली लम्बी करें, इसे अस्त्र मुद्रा कहते हैं।

जाप की परिभाषा

मकारं च मनः प्रोक्तंत्रकारं त्राणमुच्यते,
मनस्त्राणत्व योगेन इति प्रोक्तः जनम् पाप विनाशकम्॥प्र.र.॥

जप के प्रकार

मन्त्राक्षरों की **बार बार आवृत्ति करना, पुनरावृत्ति करना, रटना जप कहलाता है। इस प्रकार 'जप' स्मरण का एक विशिष्ट विस्तृत स्वरूप है। परन्तु यह अपनी विशेषता रखता है। मन्त्रविदों ने इसे निम्न प्रकार कहा है।**

ज करो जन्मविच्छेदः प करो पाप नाशकः।
तस्माज्जप इति प्रोक्तो जन्म पाप विनाशकः।

अर्थात्– 'ज' कार जन्म का विच्छेद करने वाला है। और 'प' कार पाप नाशक कहा है। अतः जप यथाविधि हो तो सिद्धि के लिए कोई शंका नहीं रहती। आचार्यो ने कहा है कि जप तीन प्रकार से किया जाता है–

१. **मानस जप :** जिस जप में मन्त्र के पद, शब्द और अर्थ का मन द्वारा बार-बार चिन्तन होता है उसे मानस जप कहते हैं। यह सर्वश्रेष्ठ प्रकार की जप है।

२. **उपांशु जप :** जिस जप में केवल जिह्वा हिलती है या इतने हलके स्वर से जप होता है जिसे कोई सुन न सके, मात्र ओंठ ही हिलते नजर आयें, तो उसे उपांश जप कहते हैं यह मध्यम प्रकार की जप है।

३. **वाचिक जप :** जप करने वाले ऊंचे-नीचे स्वर से स्पष्ट या अस्पष्ट मन्त्र बोलकर जप करता है। उसे वाचिक जप कहते हैं। लेकिन **यह जघन्य प्रकार की जप है।**

मन्त्र विशारद वाचिक जप से एक गुना फल, उपांशु जप से सौ गुना फल तथा मानस जप से हजार गुना फल बताते हैं।

त्रियोग जाप का फल

१. **मानसिक जाप**– कार्य सिद्धि के लिये मन में करना।

२. **वाचनिक जाप**– पुत्र प्राप्ति के लिये उच्च स्वर से जाप करना।

३. **कायिक जाप**– धन प्राप्ति के लिये, बिना बोले मंत्र पढ़ना जिससे ओंठ हिलते रहें।

जाप एवं हवन में मंत्र का प्रयोग–

जप काले नमः शब्दों, मंत्रस्यान्ते प्रयोजयेत्।
होम काले पुनः स्वाहा, मंत्रस्यायं सदाक्रमः॥

जप स्थान का फल

गृहे जपफलं प्रोक्तं बने शतगुणं भवेत्।
पुष्यारापे तथा रण्ये सहस्रं गुणितं मतम्॥
पर्वते दशसहस्रं च नद्यां लक्षमुदाहतं॥
कोटी देवालये प्राहुरनन्तं जिनसन्निधौ॥

विद्या १२ गो. प्र. चित्रा ८५५

अर्थ- घर में मंत्राराधना करने से एक गुणा फल, वन में सौ गुना, नसिया एवं वन में हजार गुना, पर्वत पर बैठकर १० हजार गुना, नदी के किनारे लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना जिनेन्द्र देव के सामने अनंत गुना फल मिलता है।

जाप का फल कब नहीं मिलता

जो श्रावक जप करते समय प्रमादी होकर ऊंघते हैं, नींद का झोंका लेते हैं अथवा बार-बार उबासी लेते हैं या किसी प्रकार का प्रमाद करते हैं उनका जाप करना न करने के समान है और जो कोई अपने हृदय में उद्वेग व चंचलता रखता हुआ जप करता है अथवा माला के मेरुदंड को उल्लंघन कर जप करता है अथवा जो उंगली के नख के अग्रभाग से जप करता है उसका वह सब जप निष्फल होता है। लिखा भी है व्यग्रचिन्तेन यज्जप्तं-२ मरुलंघने। नरवाग्रेण च यज्जप्तं तज्जप्तं निष्फलं भवेत्।

जाप करने का विधान

मोक्ष प्राप्ति के लिए अंगूठे से जपना चाहिये, औपचारिक कार्यों में तर्जनी से, धन और सुख की प्राप्ति के लिये मध्यमा से, शान्ति कार्यों के लिये अनामिका ऊंगली से, आव्हानन के लिये कनिष्ठा से शत्रु ,नाश के लिये तर्जनी से, धन संपदा के लिये मध्यमा से, सर्व कार्य की सिद्धि के लिये कनिष्ठा से जाप करना चाहिये एवं अंगूठे पर माला रखना चाहिये।

मंत्र साधना के निर्देश

१. मंत्र-साधना के लिए स्थान पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, शान्त, एकान्त, आवाज रहित होना चाहिए।

२. जिस स्थान पर बैठकर मंत्र साधना करना है, उस स्थान के रक्षक देवी देवताओं से पहले अनुमति लेकर ही वहाँ बैठना चाहिए।

३. मंत्र साधना के लिए आवश्यक सामग्री पास रखना चाहिए एवं किसी एक योग्य विश्वास पात्र व्यक्ति को अपने पास बैठाना चाहिए।

४. मंत्र-साधना के समय तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन अवश्य करना चाहिए एवं भूमि शयन करना चाहिए तथा सात्विक, अल्प, शुद्ध शाकाहारी भोजन करना चाहिए।

५. मंत्र साधना के दिनों में कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि) का त्याग कर अच्छे विचारों को मन में लाकर प्रसन्न रहना चाहिए। जहां तक बन सके तो मौन रहना चाहिए।

६. मंत्र के जाप की जितनी संख्या निश्चित है, उतना संकल्प लेकर विधि पूर्वक करना चाहिए। जाप का संकल्प अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए और न ही मंत्र के जाप के समय का परिवर्तन करना चाहिए।

७. मंत्र साधना के पहले रोज सकलीकरण अवश्य करना चाहिए।

८. यदि मंत्र साधना में कोई रक्षक देवी-देवता किसी प्राणी रूप या किसी अन्य रूप में साधना के समय सामने आ जाये, तो साधक को बिलकुल भी नहीं घबराना चाहिए।

९. मंत्र साधना में माला, आसन, धोती-दुपट्‌टा आदि कपड़े उसी रंग के उपयोग में लेना चाहिए जो विधि में बतलाये गये हों।

१०. मंत्र की उपासना, साधना, आराधना, ध्यान, पूजन और जाप पूर्ण श्रद्धा-विश्वास पूर्वक करना चाहिए।

११. मंत्र साधना के बीच यदि मलमूत्र के लिए जाना पड़े तो कायोत्सर्ग पूर्वक स्थान छोड़ें एवं ग्रहण करें तथा जाप के कपड़े पहनकर कभी भी मलमूत्र विसर्जन न करें। अर्थात् वस्त्रों की शुद्धि का पूर्ण ध्यान रखें।

१२. मंत्र साधक को ओढ़ने-बिछाने के कपड़े सफेद रंग के उपयोग में लेना चाहिए या फिर जो रंग के वस्त्र जाप विधि में बतलाये हों वैसे ही कपड़े लेना चाहिए।

१३. मंत्र साधना में शुद्ध घी का दीपक अवश्य जलाना चाहिए,लेकिन बाई तरफ धूप रखना चाहिए और दाहिनी तरफ दीपक रखना चाहिए।

१४. प्रत्येक मंत्र साधना के लिए जो वस्त्र, आसन, माला, दिशा, समय, मुद्रा और दीपकादि दिया रहता है उसी के अनुसार जप करें। **चार्ट पीछे देखें पेज नं. (91)**

१५. यदि मंत्र साधना में कोई निश्चित दिशा न बतलाई गई हो तो फिर पूर्व दिशा में मुख करके ही बैठना चाहिए।

१६. स्थान स्वच्छ व शुद्ध होना चाहिए। हर रोज झाड़ू लगाकर उसे गीले कपड़े से पौंछना चाहिए।

१७. अन्य व्यक्तियों के साथ वार्तालाप व उनका स्पर्श नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दूषित परमाणुओं से पवित्रता नष्ट होती है।

१८. असत्य नहीं बोलना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए तथा जहाँ तक हो सके मौन रहना चाहिए।

१९. भोजन व पानी लेते समय मूल मंत्र से अभिमंत्रित कर ग्रहण करना चाहिए।

२०. जमीन पर ही सोना चाहिए। वह भी जहां पर साधना की जाय उसी के पास व नीचे कपड़ा या चटाई बिछाकर सोना चाहिए व अंधेरे में नहीं सोना चाहिए।

२१. हजामत नहीं बनानी चाहिए तथा गरम पानी से स्नान नहीं करना चाहिए, साबुन आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।

२२. किसी को शाप या आशीर्वाद नहीं देना चाहिए तथा किसी की भी निन्दा आलोचना नहीं करना चाहिए।

२३. मंत्र व मंत्र प्रदाता गुरु तथा परमात्मा पर पूर्ण आस्था रखना चाहिए तथा मंत्र-देवता व गुरु-प्रभु की उपासना श्रद्धा-भक्ति पूर्वक पूर्ण विश्वास से करनी चाहिए।

२४. मन्त्र को गुप्त रखना अर्थात् मंत्र किसी को भी नहीं बताना चाहिए अन्यथा मंत्र सिद्ध नहीं होता।

२५. जप की संख्या का परिमाण निश्चित कर लेना चाहिए, फिर प्रतिदिन उतनी ही जाप करना चाहिए। निश्चित संख्या से कम या अधिक जप नहीं करना चाहिए।

२६. प्रतिदिन निश्चित समय पर निश्चित स्थान पर बैठकर निश्चित संख्या में जाप करें।

२७. जाप करते समय प्रतिदिन दीपक अवश्य जलाकर रखें तथा सुगंधित अगरबत्ती या धूपबत्ती भी जलायें।

२८. मंत्र में जिस रंग की माला लिखी हो उसी रंग का आसन यानि बिस्तर या वस्त्र (धोती दुपट्टा) आदि श्रेष्ठ माना गया है।

२९. मंत्र संकल्प पूर्ण होने पर हवन अवश्य करें जितनी संख्या में जाप की हो उससे दशांस हवन करें तभी मंत्र आराधना पूर्ण मानी जाएगी।

३०. प्रमाद (आलसी) अवस्था में, अशान्त अवस्था में, व्याकुलचित्त अवस्था में जाप न करें।

३१. माला के शिखर वाले (मेरु के) तीन दानों का उल्लंघन करके जाप न करें।

३२. मंत्र जाप करते समय प्राण प्रतिष्ठित किया हुआ श्रीमहायंत्र अथवा मंत्रित श्री मंगल कलश, णमोकार मंत्र या जिनेन्द्र देव अथवा गुरु के चित्र (फोटो) को सामने रखकर जाप करें।

३३. सुआ-सूतक (सूतक-पातक) में भी जाप करना न छोड़ें। स्त्रियों को रजस्वला होने पर भी जाप करते रहना चाहिए। स्नान करने के पश्चात् मन्त्र का जाप मन में करें जोर से बोलकर न करें और न ही माला काम में ले।

३४. जप का संकल्प पूर्ण होने पर यथाशक्ति दान-पुण्य अवश्य करना चाहिए।

३५. **सकलीकरण**- मंत्र साधने के पहले सकलीकरण क्रिया अवश्य करें।

सकलीकरण किसे कहते हैं ?

१. निर्विघ्न इष्ट कार्य की सिद्धि के लिये विद्या साधन के इच्छुक साधक की जिससे रक्षा होती है, वह क्रिया सकलीकरण कहलाती है।

२. निर्विघ्न इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए अपनी रक्षा हेतु जो क्रिया की जाती है उसे सकलीकरण क्रिया कहते हैं।

36. **मंत्रों के पंचोपचार**- मंत्राधि देवताओं (मंत्र स्वामी)के पांच उपचार कहे हैं-

आह्वानन, स्थापना, सन्निधिकरण, अष्टद्रव्य से पूजन और विसर्जन।

१. **आह्वानन**– मंत्राधिदेवता के बुलाने को आह्वानन कहते हैं।

२. **स्थापन**– उन देवता या प्रतिबिंब के उचित स्थान में स्थापन करने को स्थापना कहते हैं।

३. **सन्निधिकरण**– देवता का पूजन करते समय साक्षात्कार करने को सन्निधिकरण कहते हैं।

४. **पूजन**– देवता का अभिषेक पूर्वक अष्ट द्रव्यों से अर्चन गुणानुवाद करने को पूजन कहते हैं।

५. **विसर्जन**– उनको आदर सत्कारपूर्वक अपने स्थान पर भेजने को विसर्जन कहते हैं।

विशेष :– पूजन विधि देंखे यंत्र अधिकार में, **पेज नं. (264)** जैसे वहां पर यंत्रों की पूजन की गयी है उसी प्रकार मंत्र देवताओं की पूजन करें।

37. **दीपक में घी व तेल का प्रयोजन**– गाय के दूध के घी का दीपक सर्व सिद्धि कारक, भैंस के घी का मारण में, ऊंटनी के घी का विद्वेषण में, भेड़ के घी का शांतिकर्म में, बकरी के घी का उच्चाटन में, तिल के तेल का सर्वसिद्धि में, सरसों तेल मारण में प्रयोग किया जाता है।

38. **बत्ती का महत्व**– वशीकरण में श्वेत बत्तियों का, विद्वेषण में पीत, मारण में हरी, उच्चाटन में केसरिया, स्तम्भन में काली, शान्ति के लिए सफेद रंग की बत्तियों का प्रयोग किया जाता है।

39. **दिशा विचार**– पूर्व दिशा में दीपक का मुख रखने से सर्व सुख की प्राप्ति, स्तम्भन, उच्चाटन, रक्षण तथा विद्वेषण में पश्चिम दिशा की ओर, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए उत्तराभिमुख तथा मारण में दक्षिणाभिमुख दीपक रखना चाहिए।

40. **कलश में वस्तुएं रखने का महत्व**– सामान्यतः कलश को जल से भरते हैं। किन्तु विशेष प्रयोजन में विशेष वस्तुएं रखे जाने का विधान मिलता है। जैसे– धन लाभ हेतु मोती व कमल का प्रयोग करते हैं, विजय के लिए अपराजिता, वशीकरण के लिए मोर पंखी, उच्चाटन के लिए व्याघ्री, मारणा के लिए काली मिर्च, आकर्षण के लिए धतूरा, भरने का विधान है।

41. **माला का महत्व**

रुद्राक्ष माला पहनने से ब्लडप्रेशर नहीं होता, पपीते के बीज की माला पहनने से प्लेग नहीं होता, कमल बीज की माला पहनने से रोग नहीं होता, मूँगे की माला पहनने से रक्त वृद्धि व शुद्धि होती है। ध्यान दें– सोते समय माला धारण न करें प्रातः स्नान के बाद ही धारण करें। जपते समय सुमेरु का उल्लंघन न करें। अर्थात् माला पूरी होते ही लांघें नहीं

बल्कि आँखों को लगाकर पुनः जाप प्रारम्भ करें। खंडित माला से जाप न करें।

42. **आसन विधान**

बांस की आसन से दरिद्रा, पाषाण से रोगी, भूमि पर करने से दु:ख, लकड़ी की आसन से दुर्भाग्य, घास की आसन से यश हानि, पत्रों की आसन से भ्रान्ति, वस्त्र पर बैठकर करने से मन चंचल, चमड़ा के आसन से ज्ञान नाश, कंबल के आसन से मान भंग। अतएव डाब की आसन सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए डाब की आसन पर बैठकर जाप करना चाहिये। यही प्रशंसनीय माना जाता है।(विद्यानुवाद -५४०)

तृण, घास के आसन पर बैठकर जाप पूजा करने से यश की हानि होती है,नीले रंग के वस्त्र से अधिक दु:ख भोगना पड़ता है, हरे वस्त्र के आसन पर सदा मान भंग होता है, सफेद वस्त्र पर बैठकर करने से यश वृद्धि होती है, हल्दी के रंग वाले वस्त्र के आसन से हर्ष की वृद्धि होती है, लाल वस्त्र के आसन पर कार्यों की सिद्धि होती है; किन्तु सर्वश्रेष्ठ डाब का आसन है। (धर्मरीसका नामक ग्रन्थ एवं चर्चासागर पृ. २८)।

43. हवन विधि-

सकलीकरण से शुद्धि, यज्ञोपवीत तथा मंत्रस्नान करके पर्यंकासन से हवन करें।

होम (हवन) कुण्ड :-

होम कुण्ड तीन प्रकार के होते हैं- १.त्रिकोण-यह कुण्ड मारण, आकर्षण और वशीकरण के काम आता है। २. गोलकुण्ड- यह विद्वेषण व उच्चाटन इन दो कर्मों में काम आता है। ३. चौकोर - यह शान्ति, पौष्टिक और स्तंभन कर्म में काम आता है।

44. **धूप विचार-** मुख्यतः अगर, तगर, देवदारु, छरीला, गूगल, लौंग, लोबान, कपूर, चंदन, कस्तूरी, खस, नागरमोथा से धूप बनायी जाती है।

45. **जाप-होम-मंत्र**-जाप के समय मंत्र के अन्त में नमः शब्द लगावे और होम के समय ''स्वाहा'' शब्द जोड़े। मूल मंत्र की संख्या से दसवाँ भाग होम की आहुतियाँ अवश्य दें।

समिधाएं- सामान्य रूप से हवन के लिए पलाश (ढाक) की लकड़ी मुख्य मानी गई है। इसलिए यही समिधाएं ली जाती हैं, और उसके अभाव में दूध वाले वृक्षों की समिधाएं ली जाती हैं। लेकिन क्षुद्र कर्मों मारणादि में बहेड़े, नीम, धतूरे आदि की समिधाएं लेना चाहिए।

विशेष- शान्ति और पौष्टिक कर्म में लाल कनेर के पुष्पों से हवन करें। क्षोभ कर्म में गूगल, कमलगट्टे आदि से होम किया जाता है। वशीकरण के लिए सुपारी के फल तथा पत्तों से हवन किया जाता है। योगी वशी के लिए चमेली फूलों से तथा धन-धान्य आदि

की वृद्धि के लिए घी, तिल, उड़द, सरसों, धान्य, बांस के बीज, गेहूँ, मूंग आदि से हवन किया जाता है। शान्ति, पौष्टिक, वशीकरण तथा आकर्षण आदि शुभ कर्मों के लिए उत्तम द्रव्यों से प्रसन्न चित्त होकर हवन करें एवं मारण, उच्चाटन, विद्वेषण, और स्तंम्भन में अशुद्ध द्रव्यों से क्रोध सहित होम किया जाता है। पलाश के होम से यक्षिणी वश और आम व घी से विद्याधर वश में होता है। यदि वह न मिले तो दूध वाले वृक्ष (पीपल आदि) की सूखी लकड़ी बिना कीड़ों वाली होनी चाहिए। होम में दूध, घी तथा अष्टांग धूप आदि द्रव्य लेना चाहिए। अशुभ कार्य (मारणादि) में बिना कीड़ों वाली अशुभ द्रव्य व शुभ कार्य (शांति आदि) में उत्तम सामग्री और प्रसन्न चित्त से कार्य होते हैं।

❖ पहले जल चन्दनादि अष्टद्रव्यों से मन्त्र जपते हुए अग्नि की पूजा करें, फिर दूध, घी, गुड़ सहित एक लकड़ी को होम कुण्ड में रखें। फिर अग्नि स्थापित कर पहले घी की आहुतियाँ स्तोत्र श्लोक पढ़ते हुए दें। पीछे लकड़ियों को रखकर आहुति द्रव्य को मिलाकर जाप का मंत्र बोलते हुए आहुतियाँ देवें। हवन को पांच कलश की स्थापना करके करना चाहिए। जिसने भी सम्पूर्ण विधि से अच्छी तरह से एक मन्त्र भी सिद्ध कर लिया, तो फिर उसे थोड़े ही समय में दूसरे मंत्र भी सिद्ध हो सकते हैं।

होम द्रव्य– होम करने के लिए एक सेर दूध, एक सेर घी और अष्टांग धूपादि से मिला हुआ द्रव्य लेवें।

नोट– होम के समय मंत्र के अन्त में स्वाहा लगा लेवें। तथा मंत्र जाप की संख्या के दशांश से हवन करें।

45. **द्रव्य (सामग्री) शुद्धि :**– हाथ में जल लेकर मंत्रित करके सर्व पूजा की सामग्री पर छिड़कें अर्थात् शुद्धि करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं झ्रों झ्रों वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं स: अ सि आ उ सा समस्त तीर्थ जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्य पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

कार्य सिद्धि के लिए आसन और वस्त्र का विधान

वशीकरण का मंत्र :– वशीकरण मंत्र सिद्ध करने के लिए माला, आसन एवं सभी वस्त्र पीले होना चाहिए।

आकर्षण मंत्र :– आकर्षण के लिए मंत्र साधना करते समय माला, आसन व सभी वस्त्र हरे रंग के होना चाहिए।

मोहित मंत्र– मोहित करने के लिए माला,आसन एवं वस्त्र लाल रंग के उपयोग करना चाहिए।

शान्ति पौष्टिक मंत्र :– शान्ति और धन लाभ के लिए माला, आसन और वस्त्र सफेद रंग के होना चाहिए ।

मारण– उच्चाटन– विद्वेषण आदि में काले वस्त्र, माला और आसन का उपयोग होता है।

वस्त्र विधान– नीले रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से बहुत दुख होता है। हरे रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से मान भंग होता है। श्वेत रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से यश की वृद्धि होती है, पीले रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से हर्ष बढ़ता है। लाल रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से लाभ होता है तथा यह श्रेष्ठ वस्त्र भी है।

नोट– साधक को कोई भी मंत्र मिलाने पर ऋण या धन की संख्या आती हो तो उसमें मंत्र के प्रारम्भ में ॐ, ह्रीं, श्रीं या क्लीं इन बीजाक्षरों में से कोई भी एक बीजाक्षर जोड़ देने पर साधक को अवश्य ही मंत्र सिद्ध होगा और फल प्राप्त होगा।

माह के अनुसार मंत्र जपने का फल

चैत माह में मन्त्र जाप्य शुरु करने से सर्वपुरुषार्थ सिद्धि, वैशाख में– रत्न लाभ; ज्येष्ठ में–मरण; आषाढ़ में– बन्धुनाश, श्रावण –भाद्रा–क्वाँर (अश्विनी) में– रत्नलाभ; कार्तिक में– मंत्र सिद्धि, मगसिर (अगहन) में– मंत्र सिद्धि; पौष में– शत्रुवृद्धि व पीड़ा, माघ में– मेधा (बुद्धि) वृद्धि; फाल्गुन में सर्व कार्य सिद्धि होती है।

वार के अनुसार जाप का फल

रविवार को मंत्र जाप आरंभ करें तो धन लाभ, सोमवार को–शान्ति, मंगलवार को– आयुष्य क्षय, बुध को– सुन्दरता, गुरुवार को– ज्ञान वृद्धि, शुक्रवार को– सौभाग्य, शनिवार को– वंश हानि होती है।

तिथियों के अनुसार जाप का फल

१. प्रतिपदा को मंत्र जाप आरंभ करने से– बुद्धि हानि, २. द्वितीया को– बुद्धि विकास, ३. तृतीया को– शुद्धि, ४. चतुर्थी को– आर्थिक हानि, ५. पंचमी को– ज्ञान वृद्धि, ६. षष्ठी को– ज्ञान नाश, ७. सप्तमी को– सौभाग्य वृद्धि, ८. अष्टमी को– बुद्धिक्षय, ९. नवमी को– शरीर हानि, १०. दशमी को– राज्य की सफलता, ११. एकादशी को– शुद्धता, १२. द्वादशी को– सर्वकार्य हानि, १३. त्रयोदशी को– सर्वकार्य सिद्धि, १४. चतुर्दशी को– तिर्यंचयोनि; १५. अमावस्या को– सिद्धि नहीं और पूर्णिमा को– सिद्धि होती है।

नोट–जिन तिथि, वार तथा माह में कार्य वर्ज्य हैं उनमें भी विशेष योग जैसे सिद्धियोग आदि, विशेष नक्षत्र–पुष्य आदि में तथा तीर्थंकरों की पंचकल्याणक तिथियों में कार्य करने पर सफलता मिलती है। (आचार्य विमल सागर जी महाराज की डायरी अनुसार)

नक्षत्र अनुसार जाप का फल

१. अश्विनी– शुभ, २. भरणी–मरण, ३. कृतिका–दुख, ४. रोहिणी–ज्ञान लाभ, ५. मृगशीर्ष– सुख, ६. आर्द्रा–बन्धुनाश, ७. पुनर्वसु– धन, ८. पुष्य– शत्रुनाश, ९. अश्लेषा–

मृत्यु, १०. मघा- दुखमोचन, ११. पूर्वा फाल्गुनी-सौन्दर्य, १२. उत्तरा फाल्गुनी-ज्ञान, १३. हस्त-धन, १४. चित्रा-ज्ञानवृद्धि, १५. स्वाति-शत्रुनाश, १६. विशाखा-दुख, १७. अनुराधा-बंधुवृद्धि, १८. ज्येष्ठा-पुत्र हानि, १९. मूल-कीर्तिवृद्धि, २०. पूर्वाषाढ़ा-यश वृद्धि, २१. उत्तराषाढ़ा- यश वृद्धि, २२. श्रवण-दुख, २३. धनिष्ठा- दारिद्रय, २४. शतभिषा-बुद्धि, २५-२६. पूर्वाभाद्रपद व उत्तरा भाद्रपद-सुख, २७. रेवती-कीर्ति वृद्धि।

नोट- मकर संक्रान्ति, कर्क संक्रान्ति, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, सोमवार-अमावस्या, मंगलवार-चतुर्दशी, रविवार-सप्तमी हो तो मंत्र ग्रहण करने में शुभ हैं।

मंत्र यंत्र तंत्र शक्ति का महात्म्य

अचिन्त्यं ही तपो विया मणि मन्त्रो शधिशक्त्यतिशयं माहात्म्यं दृष्ट त्वभावत्वात्। स्वभावोऽतर्कगोचर इति समस्तवादिसंयतत्वात्।

अर्थ- विद्या, मणि,मंत्र, औषध आदि की अचिन्त्य शक्ति का माहात्म्य प्रत्यक्ष देखने में आता है। स्वभाव तर्क का विषय नहीं है, ऐसा समस्त वादियों ने कहा है।

मंत्र- तंत्र की शक्ति पौद्गलिक है

जोणि पाहुडे भणिदमंत-तंतसत्तीयो-पोग्गलाणुभागौ त्ति धेत्तव्वो।

अर्थ- योनि प्रभृत में कहे गए मंत्र-तंत्र रूप शक्तियों का पुद्गलानुभाग है।

मंत्र तंत्र सिद्धि का मोक्ष मार्ग में निषेध

वशीकरण,आकर्षण, विद्वेषण, मारण, उच्चाटन, जल, अग्नि, विष, सेना आदि का स्तम्भन, नगर में क्षोभ उत्पन्न करना, इन्द्र-जाल साधन, जीत हार विद्या, परविद्या छेदन, ज्योतिष का ज्ञान, वैद्यक विद्या साधन, यक्षिणी मंत्र, गड़े धन देखने का अंजन, शस्त्रादि का साधन, भूत व सर्प साधन, इत्यादि व क्रिया रूप कार्यों में रत पुरुष दोनों लोकों को नष्ट करता है।

परिस्थिति वश मंत्र प्रयोग की आज्ञा

स्तेनै रूपद्रूयमाणानां तथा श्वापदैः दुष्टर्वा भूमिपालै नदीरो धकैर्माया च तदुपद्रवनिरासः विद्यादिभिः।

अर्थ-जिन मुनियों को चोर से उपद्रव हुआ हो, दुष्ट पशुओं से पीड़ा हुई हो, दुष्ट राजा से कष्ट पहुंचा हो, नदी के द्वारा रूक गए हों, भारी रोग से पीड़ित हो गए हों तो उसका उपद्रव विद्यादिकों से नष्ट करना उनकी वैय्यावृत्ति है।

किन्तु मंत्र द्वारा साधु का आजीविका करने का निषेध

जो साधु मंत्र द्वारा धनोपार्जन करते हैं, वास्तव में वे निर्लज्ज अपनी माता को जैसे वैश्या बनाते हैं (ज्ञा. ४१५६-५७) जो मुनि मंत्र-तंत्र औषध द्वारा आजीविका करके वैश्योंवत् धन-धान्य का ग्रहण करता है वह साधु मार्ग को दूषित करता है।

माला विधान

स्फटिक, मोती, चांदी, सोना, मूंगा, पोत, रेशम, कमलबीज, सूत ये नौं प्रकार की माला श्रेष्ठ हैं और अग्नि द्वारा पकी हुई मिट्टी, हड्डी, लकड़ी और रुद्राक्ष आदि की मालाएं कुछ फल देने वाली नहीं हैं, ये मालाएं अयोग्य हैं, ग्रहण करने योग्य नहीं हैं। (चर्चा सा. पृ. २४)

माला बनाने में धागा का उपयोग– सफेद रंग का धागा पौष्टिक शान्ति कारक, लाल रंग का धागा आकर्षण वशीकरण में, पीले रंग का धागा स्तंभन में और काले रंग का धागा मारण आदि कार्य में प्रयुक्त किया जाता है।

माला का उपयोग– वशीकरण व आकर्षण में मूंगे या लाल चंदन की माला, स्तंभन कर्म में सुवर्ण की माला, शान्ति कर्म में स्फटिक की माला, पौष्टिक कर्म में मोती की माला, मारण–विद्वेषण व उच्चाटन कर्म में पुत्रजीवा की माला, व्यवहार में लेना चाहिए।

माला में मड़िकों का महत्व– मारण, मोहन, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण आदि में १५ मनकों की माला, मोक्ष प्राप्ति व अभिचार कर्म में २५ मनकों की माला, मोक्ष सिद्धि के लिए, प्रिय प्राप्ति के लिए तथा समस्त सिद्धि के लिए ५४ व १०८ मनकों की माला तथा पुष्टि व धन के लिए ३० मनकों की माला श्रेष्ठ मानी गयी है।

माला– निर्देश

१. माला दाहिने हाथ में ही रखनी चाहिए।

२. माला पृथ्वी पर नहीं गिरनी चाहिए तथा उस पर धूल व गर्द नहीं जमनी चाहिए ।

३. माला अंगूठे पर रख कर मध्यमा या अनामिका अंगुली से फेरनी चाहिए

४. मनकों (दानों) में नाखून नहीं लगाना चाहिए।

५. माला में जो सुमेरु होता है, उसे लांघना नहीं चाहिए। यदि और आगे अधिकमाला फेरनी हो तो माला को वापस बदल लेना चाहिए।

६. माला फेरते वक्त जमीन पर नहीं छूना चाहिए।

७. माला जपने के पूर्व माला की शुद्धि अवश्य कर लेनी चाहिए।

पहले पंचामृत से अभिषेक के जल में धोकर एक प्लेट में रख लें फिर निम्न मंत्र को ७ बार बोलकर पुष्प चढ़ाएं तथा बाद में मस्तक पर लगाकर उपयोग में लें।

मंत्र– ॐ ह्रीं रत्नै: सुवर्णैर्बीजैर्या रचिता जप मालिका, सर्व जपेषु सर्वाणि वाञ्छितानि प्रयच्छतु।

माला विधान प्रकारान्तर से– पुत्र प्राप्ति के लिए मोती की माला, स्तम्भन विधि के लिए, रोग शान्ति के लिए, दुष्ट या व्यंतर देवों के उपद्रव दूर के लिए कमल बीज या मोती की

माला, शत्रु उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला से जाप करना चाहिए तथा सर्व कार्य सिद्धि के लिए पंच वर्ण पुष्पों की माला तथा सदा सुख देने वाली सूत की माला होती है।

माला का फल– अंगुलियों से जाप की गणना करने में एक गुना फल मिलता है, रेखा से जप की गणना करने पर आठ गुना, पुत्रजीवक के बीज की माला से दस गुना, शंख की माला से सौ गुना, आँवले की माला से पाँच सौ गुना, मूंगे की माला से हजार गुना, लौंग की माला से पाँच हजार गुना, स्फटिक की माला से दस हजार गुना, मोती की माला से लाख गुना, पद्माक्ष (कमल बीज) की माला से दस लाख गुना, सोने की माला से करोड़ गुना फल मिलता है। लेकिन माला के साथ-साथ भावों की शुद्धि भी अनिवार्य है। सूत की माला सदा सुख देने वाली होती है।

मंत्र जाप निषेध

१. नग्न होकर जप नहीं करना चाहिए।
२. सिले हुए वस्त्र पहन कर जप नहीं करना चाहिए
३. शरीर व हाथ अपवित्र हों तो जप नहीं करना चाहिए।
४. मस्तक के बाल खुले रखकर जप नहीं करना चाहिए।
५. आसन बिछाये बिना जाप नहीं करना चाहिए।
६. बातें करते हुए जप नहीं करना चाहिए। मस्तक को ढ़ककर जप करना चाहिए।
७. अन्य मनुष्यों की उपस्थिति में जाप नहीं करनी चाहिए।
८. अस्थिर चित्त से जप नहीं करना चाहिए।
९. रास्ते चलते हुए या रास्ते में बैठकर जप नहीं करना चाहिए।
१०. भोजन करते समय जप नहीं करना चाहिए।
११. निद्रा लेते समय जप नहीं करना चाहिए।
१२. उल्टे-सीधे बैठकर या पैर फैलाकर अथवा लेटकर जाप नहीं करना चाहिए
१३. भयभीत अवस्था में जाप नहीं करना चाहिए।
१४. अंधकार वाले स्थान में जाप नहीं करना चाहिए।
१५. अशुद्ध व अशुचि युक्त स्थान में जाप नहीं करना चाहिए।
१६. जाप करते समय छींक नहीं लेनी चाहिए, खंखारना नहीं चाहिए, थूकना नहीं चाहिए तथा नीचे के अंगों का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए।
१७. मन में बुरे-विचार आते समय जप नहीं करना चाहिए। विक्षिप्त अवस्था में जाप नहीं करना चाहिए।

१८. मंत्र साधना के समय यदि लघुशंका या दीर्घशंका (मलमूत्र त्याग) के लिये; लिये हुए संकल्प के बीच में उठना भी पड़े तो कायोत्सर्ग (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर) करके उठना चाहिए व कायोत्सर्ग पूर्वक पुनः आसन ग्रहण करना चाहिए।

दीपनादि प्रकार

१. मंत्र के प्रारंभ में नाम की स्थापना करें तो दीपन कहा जाता है। जैसे- देवदत्त ह्लीं।

२. मंत्र के अंत में नाम की स्थापना करें तो पल्लव कहा जाता है। जैसे- ह्लीं देवदत्त।

३. मंत्र के मध्य भाग में नाम की स्थापना करे तो संपुष्ट कहा जाता है। जैसे- ह्लीं देवदत्त ह्लीं।

४. मंत्र के प्रारंभ में व मध्य में नामोल्लेख करें तो रोधान कहा जाता है, जैसे- देव ह्लीं दत्त ह्लीं।

५. एक मंत्राक्षर दूसरा नामाक्षर, तीसरा मंत्राक्षर चौथा नामाक्षर इस तरह संकलित करें तो ग्रन्थ कहा जाता है। जैसे- ह्लीं दे ह्लीं व ह्लीं द ह्लीं त्त।

६. मंत्र के दो दो अक्षरों के बाद एक एक नामाक्षर रखें तो उसे संकलित कहते हैं जैसे- ह्लीं ह्लीं दे ह्लीं ह्लीं व ह्लीं ह्लीं द ह्लीं ह्लीं त्त।

व्रज आठ होते हैं- वम्ल्व्र्यूं, खम्ल्व्र्यूं, झम्ल्व्र्यूं, भम्ल्व्र्यूं, मम्ल्व्र्यूं, रम्ल्व्र्यूं, सम्ल्व्र्यूं, हम्ल्व्र्यूं, क्ष्म्ल्व्र्यूं,

पिंडाक्षर १४ होते हैं- वम्ल्व्र्यूं, खम्ल्व्र्यूं, धम्ल्व्र्यूं, छ्म्ल्व्र्यूं, झम्ल्व्र्यूं, ड्म्ल्व्र्यूं, तम्ल्व्र्यूं, भम्ल्व्र्यूं, मम्ल्व्र्यूं, यम्ल्व्र्यूं, रम्ल्व्र्यूं, सम्ल्व्र्यूं, हम्ल्व्र्यूं, क्ष्म्ल्व्र्यूं।

बिना विचारे सिद्ध करने योग्य मंत्र

जिन मंत्रों के आदि में अथः हो उनको सिद्धादि, जिनके आरंभ में ॐ हो उनको सुसिद्धादि मंत्र कहते हैं। यह दोनों ही शुभ होते हैं। इनको सिद्ध कर लेवें। किन्तु जिनके आदि में विद्वेषी पद हो उनको साध्यादि कहते हैं उनको सिद्ध न करें। सुसिद्धादि मंत्र पाठ मात्र से सिद्धादि जाप से, और साध्यादि जाप होम आदि से साधक को फल देते हैं। प्रणव (ॐ), ह रि (उ), माया (ह्रीं), व्योनव्यापी (हुँ), शड़ क्षय (ष), प्रासाद (हं) और बहुरूपी (भ) यह सात साधारण (प्रणव) माने गए हैं। इनका योग विचार करने की आवश्यकता नहीं। सौरीमंत्र और जिन मंत्रों में भी सिद्ध, साध्य-सुसिद्ध और शत्रु के विचार की आवश्यकता नहीं है। आम्नाय से चले आये हुए गण मंत्रों में प्रणव (ॐ) के, प्रासाद (हं) के और सपिण्डाक्षरों के भी सिद्ध और शत्रु का विचार न करें। एकाक्षर मंत्र, मूलमंत्र और सैद्धान्तिक मंत्रों के भी सिद्ध और शत्रु को न देखें। स्वप्न में दिये हुए, स्त्री से दिये हुए और नपुंसक मंत्र के भी सिद्ध और शत्रु को न विचारे। हंस, अष्टाक्षर मंत्र तथा एक, दो और तीन आदि बीजों के सिद्ध और शत्रु को न विचारे। अकार से लेकर क्षकार तक के

अनुस्वार सहित मातृका अक्षरों से सीधे क्रम अथवा वर्णमाला से पृथक प्रत्येक वर्ण को साथ लगाकर जपने से शीघ्र ही सिद्धि मिलती हैं। सब मंत्रों को आदि में हल्लेखा (ह्रीं), कामबीज (क्लीं) और श्री बीज को मंत्र की शुद्धि के लिए मंत्र में लगाकर जप करना चाहिए। भार नामक मंत्राक्षर से सम्पुट किया जाने से दुष्ट मंत्र भी सिद्ध हो जाता है और जिसकी जिसमें भक्ति होती है वह मंत्र भी सिद्ध हो जाता है। मंत्र महोदधि के अनुसार एक वर्ण, तीन वर्ण, पांच वर्ण, छः वर्ण, दस वर्ण, आठ वर्ण, नौ वर्ण, ग्यारह वर्ण और बत्तीस वर्णवाले मंत्रों को बिना विचारे सिद्ध करना चाहिए। स्वप्न में पाये हुए, स्त्री से पाये हुए, माला, मंत्र, नृसिंह मंत्र, प्रासादा, ''हूं'' सूर्य मंत्र बाराह मंत्र मातृका अक्षरों पर (ह्रीं) त्रिपुरा मंत्र और काम मंत्र जप से सिद्ध हो जाते हैं। गरुड़ मंत्र, बौद्ध मंत्र और जैन मंत्रों में भी सिद्ध आदि का शोधन न करें। इसके अतिरिक्त अन्य मंत्रों की शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है।

गृहीत शत्रु मंत्र को त्याग करने की विधि

यदि भूल से शत्रु मंत्र का अनुष्ठान आरंभ कर दिया हो तो उसके त्याग करने की विधि भी है। किसी उत्तम दिन में सर्वतोभद्रमण्डल में कलश की स्थापना करके मंत्र को उल्टा बोलते हुए कलश को जल से भरे। उस पर वस्त्र ढककर उसमें देवता का आह्वानन करें। फिर उसके सामने अग्निकुण्ड बनाकर उसमें अग्नि की प्रतिष्ठा करके ग्रहण किए हुए मूल मंत्र को उल्टा करके घी की एक सौ आठ आहुतियां देवें। फिर खीर और घी की दिक्पालों को बलि देवें। इसके पश्चात देवों के देव भगवान ऋषभदेव से निम्नलिखित शब्दों से प्रार्थना करें- ''हे भगवान मुझ चंचल बुद्धि वाले ने मंत्र की अनुकूलता बिना विचार किये ही जो इस मंत्र को ग्रहण करके इसका पूजन किया है, इससे मेरे मन में क्षोभ हो रहा है। हे भगवान! आप कृपा करके मेरे मन के क्षोभ को दूर कीजिये। और मेरा उत्तम कल्याण करके मुझे अपनी निर्मलभक्ति दीजिये''। इस प्रकार प्रार्थना करके उस मंत्र को ताड़पत्र कपूर- अगर और चन्दन से उल्टा लिखकर पहले उसका पूजन करें और फिर उसको अपने सिर से बांधकर उस घड़े के जल से स्नान करें। उस कलश में फिर से जल भरकर उसके मुख में उस पत्र को डाल दें। फिर उस घड़े का पूजन करके उसको किसी नदी या तालाब में डालकर सच्चे सात साधुओं को आहार दान दें अथवा उत्तम श्रावक को भोजन करावें। इस प्रकार वह उस मंत्र के कष्ट से छूट जाता है।

दुष्ट मंत्र को जपने की विधि

यदि मंत्र उपरोक्त प्रकार से अनेक बार शोधन किया जाने पर भी शुद्ध न हो तो उसके दोष को दूर करने के वास्ते उसकी आदि में' ह्रीं क्लीं' श्रीं, बीजों को लगाकर जपें। अथवा 'ॐ' के सम्पुट में जपा जाने से दुष्ट मंत्र भी सिद्ध हो जाता है। अथवा उल्टे या सीधे क्रम से वर्णमाला को लगाने से भी मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र सिद्ध होगा या नहीं देखने की विधि

मंत्र के अक्षरों को ३ से गुणा करें, फिर अपने नाम के अक्षरों को और मिला देवें, उस संख्या में १२ का भाग देवें, शेष जो रहे, उसका फल निम्नलिखित जानें।

५-९- बाकी बचे तो मन्त्र सिद्ध होगा।

६-१०- बचे तो देर से सिद्ध होगा।

७-११- बचे तो मन्त्र अच्छा होगा।

८-१२- बचे तो सिद्ध नहीं होगा।

पुरुष का ऋणी धनी विचार

किसी पुरुष या स्त्री से कोई कार्य लेने के लिए मंत्र जपना हो तो निम्नलिखित उपाय से विचार करें कि काम देने वाला व्यक्ति साधक का ऋणी है या नहीं। यदि साधक ऋणी होगा तो कार्य निश्चय रुप से पूर्ण होगा। नीचे लिखे कोष्ठक से वर्णों और उनकी शत्रु मित्रता का ज्ञान हो जावेगा। इस कोष्ठक में ऋणी-धनी इस रीति से देखा जा सकता है कि दोनों पुरुषों के अक्षरों की संख्या को पृथक्-पृथक् कर दो से गुणा करें, फिर जो-जो संख्या आये उसमें प्रथम में दूसरे व्यक्ति के नाम अक्षरों की संख्या को और दूसरे में प्रथम व्यक्ति के नाम अक्षरों की संख्या को जोड़कर आठ का भाग दें। फिर दोनों में जिसका अंक शेष अधिक हो वह ऋणी जिसका न्यून हो वह धनी। अर्थात् अधिक अंश वाला न्यून अंक वाले को धन देगा। जैसे सेठ भगवानदास के पास नन्दकिशोर नौकरी चाहता है तो उसको मिलेगी या नहीं। अब देखों भगवानदास की संख्या छह है और नन्दकिशोर की पांच हैं। दोनों को दो से गुणा किया तो ६×२=१२ और ५×२= १० अब इसमें एक दूसरे की वर्ग संख्या जोड़ दो आठ का भाग दो। १२+५=१७ ÷ ८=१शेष। १०+६= १६ ÷ ८ =० शेष। यहां पर शून्य के शेष से भगवानदास का शेष १ अधिक है। अत: भगवानदास नन्दकिशोर को नौकरी पर रख लेगा।

संख्या	वर्ग का स्वामी	वर्ग के अक्षर	शत्रु	मित्र	उदासीन
१.	गरुण	अ ई उ ए	सर्प	श्वान	सिंह
२.	बिलाव	क ख ग घ ङ	मूषक	सर्प	श्वान
३.	सिंह	च छ ज झ ञ	मृग	मूषक	सर्प
४.	श्वान	ट ठ ड ढ ण	मेष	मृग	मूषक
५.	सर्प	त थ द ध न	गरुड़	मेष	मृग
६.	मूषक	प फ ब भ म	बिलाव	गरुड	मेष
७.	मृग	य र ल व	सिंह	बिलाव	गरुड

८.	मेष	श ष स ह	श्वान	सिंह	बिलाव

कलियुग के सिद्धिप्रद मंत्र

एकाक्षर के मंत्र, दो व तीन अक्षर वाले मंत्र, तीन प्रकार के नृसिंह मंत्र, एकाक्षर अर्जुन मंत्र, दो प्रकार के चिंतामणि मंत्र, क्षेत्रपाल मंत्र, यक्षाधिपति भैरव के मंत्र, गणेश मंत्र, चेटका मंत्र, यक्षिणी मंत्र, मातंगी मंत्र, सुन्दरी मंत्र, श्यामा मंत्र, तारा मंत्र, कर्णपिशाची मंत्र, शवरी मंत्र, एकजटा मंत्र, वामा मंत्र, काली मंत्र, नील सरस्वती मंत्र, त्रिपुरा मंत्र और कालरात्रि मंत्र कलियुग में सिद्ध होते हैं।

मंत्र के अधिकारी द्विजवर्णों के योग्य मंत्र

अघोर मंत्र, दक्षिणामूर्ति मंत्र, उमा मंत्र, माहेश्वर मंत्र, हयग्रीव मंत्र, बाराह मंत्र, लक्ष्मी मंत्र, नारायण मंत्र, प्रणव के आरम्भ होने वाले मंत्र, चार अक्षरों के मंत्र, अग्नि के मंत्र, सूर्य के मंत्र, प्रणव से आरंभ होने वाला गणेश मंत्र, हरिद्रा गणेश पड़क्षर राम मंत्र, को और वैदिक मंत्रों को ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को ही देने चाहिए। निंद्य कार्य वालों को नहीं।

ब्राह्मण और क्षत्रियों के योग्य मंत्र

सुदर्शन मंत्र, पाशुपत मंत्र, आग्नेयास्त्र और नृसिंह मंत्र को ब्राह्मण और क्षत्रिय को ही देना चाहिये अन्य को नहीं।

चारों वर्णों के योग्य मंत्र

छिन्नमस्ता, मांतगी, त्रिपुरा, कालिका, शिव, लघु श्यामा, कालरात्रि, गोपाल, राम उग्र तारा और भैरव के मंत्र चारों वर्णों को देने चाहिये। **यह मंत्र स्त्रियों को विशेष रुपसे सरलता से सिद्ध होते हैं।** इसकी अधिकारी चारों वर्णों की स्त्रियां ही होती हैं।

वर्ण क्रम से बीजों के अधिकारी

ह्रीं, क्लीं, श्रीं और ऐं बीज ब्राह्मण को देवें। क्लीं, श्रीं और ऐं क्षत्रिय को देवें। श्रीं और ऐं वैश्य को देवें तथा 'ऐं' बीज शूद्र को देवें। अन्यों को फट् बीज देवें।

वर्णों के भेद

वर्ण-रंग व मण्डल की अपेक्षा

स्वरोष्माणो द्विजाः श्वेता, अबूमण्डलसंस्थिताः।
कंतस्या भूर्भुजो रक्ता-स्तेजोमंडलसंस्थिताः।
चूपूवैश्यान्वयौ पीतौ पृथ्वीमंडलभागिनौ।
दुतु कृष्णत्विषौ शूद्रौ वायुमण्डलसंभवौ।

अक्षर	वर्ण	रंग	मण्डल

अर्थ-	स्वर	ब्राह्मण वर्ग	श्वेत	जलमण्डली
	कवर्ग	क्षत्रिय	रक्त	अग्नि
	चवर्ग	वैश्य	पीत	क्षिति
	टवर्ग	शूद्र	कृष्ण	वायु
	तवर्ग	शूद्र	कृष्ण	वायु
	पवर्ग	वैश्य	पीत	क्षिति
	यवर्ग	क्षत्रिय	रक्त	अग्नि
	शवर्ग	ब्राह्मण	श्वेत	जल

नोट- मंत्र व्याकरण के अनुसार ई ऊ लृ **ॡ** का रंग पीत व जल मण्डली है। 'ष' का पीत रंग व आकाश मण्डली कहा है।

तिथि-वार व गति की अपेक्षा

प्रतिपन्नवमी रवि शनिवासरे द्विजसिद्धिरथ चतुर्थ्या च।
द्वादश्येकादश्योः सितवारे भूपसिद्धिः स्यात्।
कुजवारे पंचम्यां षष्ठयां च चतुर्दशी-त्रयोदश्योः।
वैश्याक्षरसंसिद्धिः संभनकर्मात्र कर्त्तव्यं।
वहिन्स्तंभन शांतिक पौष्टिककर्माणि कृत्यानि।
लक्ष योजन गा विप्रास्त दर्द्धगतयो नृपाः।
तदर्द्ध गामिनो वैश्या शूद्रास्तद्दल यायिनः।

अर्थ- विशिष्ट ब्राह्मणादि वर्ण की सिद्धि की तिथि, वार व उसकी गति की तालिका निम्न प्रकार हैं।

अक्षर	**तिथि**	**वार**	**गति**
ब्राह्मण	प्रतिपदा, नवमी	रवि,शनि	एक लाख योजन कार्य
क्षत्रिय	११,१२,४	सोमवार	पचास हजार योजन कार्य
वैश्य	५,६,१३,१४	मंगलवार	पच्चीस हजार योजन कार्य स्तम्भन
शूद्र	पर्व के दिन १४ आदि तथा ७ को	गुरुवार	१२ १/२ हजार योजन कार्य पौष्टिक

अक्षरों की शत्रु-मित्रता

मण्डलों की अपेक्षा

अप्पाक्षरमग्न्याक्षरमरयो मरुदग्निबीजमपि मित्रं।
भूम्यक्षरमाप्याक्षरमुभे च मित्रत्वं बीजं च॥

धरानिलजवर्णानामन्योन्यमिह सर्वदा।
न मित्रत्वं न वैरत्वमौदासीन्यं तु केवलं॥

अर्थ– जलमण्डली अक्षर और अग्नि अक्षर एक दूसरे के शत्रु हैं। वायु अक्षर और अग्नि मण्डली अक्षर परस्पर मित्र हैं। पृथ्वीमण्डली, जलमण्डली और खबीज भी मित्र होते हैं। परन्तु पृथ्वी अक्षर और वायु अक्षर परस्पर उदासीन होते हैं अर्थात् न शत्रुता होती है न मित्रता।

चतुर्वर्णाक्षरों की अपेक्षा

एक: शूद्रस्त्रिभिर्विप्रैर्मित्रत्वं प्रतिपद्यते।
त्रिभि: शूद्रैर्द्विजोप्येकस्तथा क्षत्रियवैश्ययो:॥
एकभागों भवेद्विप्र–स्यैक: क्षत्रियवैश्ययो:।
शूद्रस्याप्येकभागश्चेत्संयुक्तो मित्रतां व्रजेत॥
सर्वमंत्रान्त्वैकस्मिन्वर्गोऽभीष्टफलप्रदा।
विमुच्याक्षरसंघातमिति सर्वज्ञभाषितं॥

अर्थ– एक शूद्र की तीन ब्राह्मणों के साथ, तीनों शूद्रों की एक ब्राह्मण के साथ तथा क्षत्रिय और वैश्य की परस्पर मित्रता नहीं होती।

लिंग की अपेक्षा

सप्तकला: पुल्लिंगा: नपुंसकास्तत्र संति सप्तकला:।
द्वे च कले स्त्री ज्ञेये कलासु मध्ये तु षोड़शेषु॥
आदिमपंचमषष्ठद्वादशमुख पंच दशकपर्यता:।
पुल्लिंगा: स्त्रीलिंगौ द्वितीयतूर्यस्वरौ स्यातां॥
सप्तकलादिरुद्रप्रमाणपर्यंतसकलांतकल:।
त्रिकलापि सप्त षष्ठा इत्युदिता मंत्रवादेत्र॥
कवर्गाद्य त्रयो वर्णाष्टवर्गाद्यचतुर्थका:।
तवर्गाद्य द्विवर्णौ च पवर्गाद्य त्रयोपि च॥
क्ष: कूटाक्षरेणैते सर्वे मिलितैकोनविंशति:।
पुल्लिंगसंज्ञिनो वर्णा: मंत्रव्याकरणे मता:॥
उष्मणादिमो वर्णश्च वर्गाद्यक्षरद्वयं।
पवर्गांत्यद्विणौ च स्त्रीणां पंचाक्षराणि वै॥
कपवर्गा तुर्य्यवर्णावंतस्था अक्षरद्वयं शांतं।
पंचमवर्गतृतीयो ज टु ञ ण नवास्तु च षंढ़ा: स्यु:॥

अर्थ– सोलह कलाओं में सात पुल्लिंग, सात नपुंसक लिंग और दो स्त्री लिंग वाली हैं।

पुल्लिंगी अक्षर– अ उ ऊ ऐ ओ औ अं ये सात स्वर तथा क ख ग ट ठ ड ढ त थ प फ ब ज झ ध म ष स और क्ष। इन १९ वर्णों को पुल्लिंगी कहा है।

नपुंसक लिंगी– इ ॠ ॠलृ ॡ ए अः घ भ य र ह द ञ ण और ङ। ऐसे सात स्वर व नौ व्यञ्जानों को नपुंसक लिंगी कहा गया है।

स्त्री लिंगी– श च छ ल और व इन पांचों को स्त्रीलिंगी कहा है। तथा ई, आ ये दो स्वर स्त्रीलिंगी हैं।

लिंग ध्यान संकेत

अक्षर	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसक लिंग**
अआ इई उ ऊ ॠ ॠ	अ उ ऊ	ई आ	इ ॠ ॠ
लृ ॡ ए ऐ ओऔ अं अः	ओ औ अं ऐ	–	लृ ॡ ए अः
क ख ग घ ङ	क ख ग	–	घ ङ
च छ ज झ ञ	ज झ	च छ	ञ
ट ठ ड ढ ण	ट ठ ड ढ	–	ण
त थ द ध न	त थ ध	–	द न
प फ ब भ म	प फ ब म	–	भ
य र ल व	–	ल व	य र
श ष स ह	ष स	श	ह
क्ष त्र ज्ञ	क्ष	–	–

१. क प वर्गा तुर्यवर्णा वान्तस्था अक्षर द्वयं शान्ति॥ पञ्चम वर्ग

२. क च वर्गा तुर्यवर्णा वान्तस्था अक्षर द्वयं शान्तं।

३. पञ्चम् वर्ग तृतीयाद्वि ङ ञ ण न वान्ते षंड़ा स्युः।

नोट– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र प्रत्येक का एक एक भाग हो तो यह मिलकर मित्रता रूप से परिणत हो जाता है।

एक ही वर्ग में (सब मंत्र) अभीष्ट फल को नहीं देते। किन्तु एक वर्ग के अक्षर संघात को बचाकर ही फल देते हैं, ऐसा सर्वज्ञ देव ने कहा हैं।

लिंग की अपेक्षा–

पुल्लिंगाक्षरमित्रत्वं रामा क्षरसमं सदा।
नपुंसकमुदासीनमक्षरं तद्द्वयोरपि॥

अर्थ– पुल्लिंग अक्षरों के साथ स्त्रीलिंग अक्षरों की सदा ही मित्रता होती है।

किन्तु नपुंसक उन दोनों में ही उदासीन रहता है।

मंत्रों के भेद व लक्षण

१. अक्षर संख्या की अपेक्षा– (१) मंत्र के तीन भेद हैं– बीजमंत्र, मंत्र और मालामंत्र। एक अक्षर से लगाकर नौ अक्षर तक के मंत्र को बीजमंत्र कहते हैं। दस अक्षर से बीस अक्षर तक के मंत्र को 'मंत्र' और बीस अक्षर से अधिक वालों को माला मंत्र कहते हैं।

(२) बीज मंत्र सदा ही सिद्ध हो जाते हैं और सदा ही फल देते हैं। मंत्र वाले मंत्र, मंत्री (साधक)को यौवनावस्था में ही फल देते हैं। मालामंत्र वृद्धावस्था में फल देते हैं।

(३) **प्रकारान्तर से**–सोलह अक्षरों तक माला मंत्र और उससे आगे कल्प कहलाते हैं। कल्प इस लोक और परलोक दोनों स्थान में फल देते हैं।

२. लिंग की अपेक्षा

लिंग की दृष्टि से मंत्र के तीन भेद हैं– स्त्री, पुरुष और नपुंसक। जिन मंत्रों के अंत में 'श्री व स्वाहा' शब्द होता है वह स्त्रीमंत्र कहलाते हैं। हूं, वषट्, फट् घे तथा स्वधा आदि पल्लव जिनमें होते हैं वे पुल्लिंगी मंत्र हैं और नमः अंत वाले मंत्र नपुंसक होते हैं। स्त्रीमंत्रों का प्रयोग पाप नष्ट करने में, पुरुष मंत्रों का उपयोग शुभ कर्म, मारण, उच्चाटन, निर्वषीकरण और वशीकरण में करें और उच्चाटनादि शेष कर्मों में नपुंसक मंत्रों का प्रयोग करें।

३. आग्नेय और सौम्य की अपेक्षा–

प्रणव, अग्नि और आकाश बीजों वाले आग्नेय मंत्र कहलाते हैं। दूसरे आचार्य सौर्यबीजों को सौम्य और फट् अंत वालों को आग्नेय कहते हैं। आग्नेयों के ही अंत में 'नमः' लगा देने से वह सौम्य हो जाते हैं।

मारण, उच्चाटन आदि में आग्नेय मंत्र बतलावें। शांत वशीकरण, पौष्टिक आदि कर्मों में सौम्य मंत्रों को बतलावें। आग्नेय मंत्र के लिए सायंकाल वाम स्वर और जागृत मंत्र कहा है तथा सौम्य के लिए इससे उल्टा लेना चाहिये।

४. प्रबुद्ध व स्वाप की अपेक्षा

मंत्रों की दो अवस्थायें होती हैं– स्वाप (सोया हुआ) और बोध (जागता) आग्नेय की स्वाप दशा होती है। बायें बहना प्रबोध या बोध और दायें बहना स्वाप कहलाता है। यह एक दूसरे के विपरीत होते हैं। यदि मंत्र दोनों में बह रहा हो तो दोनों ही भेदों को जानना चाहिये। केवल प्रसुप्त और केवल प्रबुद्ध सिद्ध नहीं होते।

५. मंत्रों का षडङ्ग न्यास

पण्डित पुरुष हृदय में 'नमः', मस्तक में 'स्वाहा', चोटी अर्थात शिखा स्थान में वषट् कवच में 'ॐ' और नेत्रों में क्रम से संवौषट् और फट् लगावें। जिस मंत्र के पृथक् अंग भेदों का वर्णन न हो बुद्धिमानी से ही उनकी कल्पना कर लें। एक मंत्र का षडङ्ग न्यास होता है। उस न्यास में पांच अंग का उपदेश भी किया जाता है। पंचांग मंत्र का नेत्र सहित अनुष्ठान करें।

६. ॐ पंचपरमेष्ठी का वाचक है

ओंकार पंचपरमेष्ठी का द्योतक है। यह अरहंत, अशरीर (सिद्ध), आचार्य, उपाध्याय और मुनि का प्रथम अक्षर अ+अ+आ+ उ+म्- लेकर बनाया गया है।

७. मंत्रों के दस कर्म-

१. शान्ति- जिस मंत्र से रोग, ग्रह पीड़ा, उपसर्ग शान्ति व भयशमन हो उसे शान्ति कर्म कहते हैं।

२. स्तंभन- जिस मन्त्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी आदि जीवों की गति, हलन-चलन का निरोध हो, उसे स्तंभन कर्म कहते हैं।

३. मोहन- जिस मन्त्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी मोहित हों, उसे मोहन या सम्मोहन कहते हैं। मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म आदि प्रायः इसी के अंग है।

४. उच्चाटन- जिस मन्त्र के प्रयोग से मनुष्य, पशु-पक्षी अपने स्थान से भ्रष्ट हो, इज्जत, मान-सम्मान खो दें उसे उच्चाटन कर्म कहते हैं।

५. वशीकरण- जिस मंत्र के प्रयोग से अन्य व्यक्ति या प्राणी को वश में किया जा सके फिर साधक जो जैसा कहें सामने वाला या प्राणी वह वैसा करें उसे वश्यकर्म कहते हैं।

६. आकर्षण- जिस मंत्र के द्वारा दूर रहने वाला मनुष्य, पशु-पक्षी आदि अपनी तरफ आकर्षित हों, अपने निकट आ जायें, उसे आकर्षण कर्म कहते हैं।

७. जृंभण- जिस मन्त्र के द्वारा मनुष्य, पशु-पक्षी प्रयोग करने वाले की सूचनानुसार कार्य करें उसे जृंभण कर्म कहते हैं।

८. विद्वेषण- जिस मन्त्र के द्वारा दो मित्रों के बीच फूट पड़े, संबंध टूट जाये उसे विद्वेषण कर्म कहते हैं।

९. मारण- जिस मन्त्र के द्वारा अन्य जीवों की मृत्यु हो जाय उसे मारण कर्म कहते हैं।

१०. पौष्टिक- जिस मन्त्र के द्वारा धन, धान्य, सौभाग्य, यश व कीर्ति आदि में वृद्धि हो उसे पौष्टिक कर्म कहते हैं।

अक्षरों का लक्षण और माहात्म्य

अ– गोल आसन, पीतवर्ण, कुंकुमगंध, नमक का स्वाद, जम्बूद्वीप में विस्तीर्ण, चतुर्मुख, अष्ट भुजायें, काले नेत्र, मुकुटधारी, श्वेतवर्ण, मोतियों के आभूषण, अत्यन्त गंभीर और पुल्लिंग।

आ– पद्मासन, गज और सर्प वाहन, श्वेत वर्ण, शंख, चक्र, पद्म और अंकुश का धारण करने वाला, दो मुख और आठ भुजायें, सर्पभूषण, अत्यन्त शोभित, बड़ी कान्ति, तीस सहस्र योजन वाला, विस्तीर्ण, स्त्रीलिंगी।

इ– चौखूंटासन, कछुआ वाहन, हेमवर्ण, वज्र आयुध एक योजन लम्बा, दुगुना चौड़ा और ऊंचा, कषायला स्वाद, वज्र और वैडूर्य के वर्ण से अलंकृत, मंदस्वर, नपुंसक और क्षत्रिय।

ई– कमलासन, वराह वाहन, मंद गूमन अमृतरस, सुगन्ध, दो भुजायें, फल और कमल का धारक, श्वेतवर्ण, सौ योजन चौड़ा, दो सौ योजन ऊँचा, दिव्य शक्ति धारी, स्त्रीलिंग।

उ– त्रिकोणासन, चकवा वाहन, दो भुजायें, मूसल और गदा आयुध, धूमवर्ण, कठोर और कटु स्वाद, सौ योजन चौड़ा, दो सौ योजन ऊँचा, कठोर गंध, वशीकरण और आकर्षण करना।

ऊ– त्रिकोणासन, ऊँट वाहन, रक्तवर्ण, कषाय रस, निष्ठुर गंध, फल और फूल को लिए हुए, दो भुजायें, नपुंसक और सौ योजन विस्तीर्ण।

ऋ– ऊँट का स्वभाव, ऊँट के जैसा स्वर, सौ योजन चौड़ा, दुगुना लम्बा, ऊँट के मुख की सुगंधि जैसा रस, नाग आभरण और सब विघ्न।

ॠ– पद्मासन, मोर वाहन, कपिलवर्ग, चार भुजायें, सौ योजन चौड़ा, दो सौ योजन लम्बा, चमेली की गंध, मधुर स्वाद, हेम आभरण, नपुंसक।

ऌ– घोड़े के जैसा स्वभाव, रस और स्वर, सौ योजन चौड़ा, दुगुना लम्बा, शूरवीर वाहन, मूसल, माला और कमल लियें हुए, चार भुजायें, कमलासन, नाग आभरण, सब विघ्नों का करना, नपुंसक।

ॡ– मोतियों का मुकुट, यज्ञोपवीत और कुंडल आभूषण, माला और कमल लिए हुए, दो भुजायें, चमेली की गंध, पचास योजन चौड़ा और दुगुना लम्बा नपुंसक, क्षत्रिय और उच्चाटन रूप।

ए– जटा और मुकुटधारी, मोती का आभूषण, यज्ञोपवीत, शंख–चक्र कमल और परशु लिए हुए, चार भुजायें, दिव्य स्वाद, सर्वप्रिय सुगन्धि, शुभ लक्षण, गोल आसन और नपुंसक।

ऐ- त्रिकोणासन, गरुड़ वाहन, त्रिशूल और गदा लिए हुए, दो भुजायें, अग्निवर्ण, निष्ठुर गंध, दूध का स्वाद, घर्घर स्वर, दस योजन चौड़ा, दुगुना लम्बा, वशीकरण और आकर्षण शक्ति रखना।

ओ- बैल वाहन, तपे हुए सोने के समान वर्ण, सब शास्त्रों सहित, लोक और अलोक में व्याप्त, महाशक्ति, त्रिनेत्र, बारह सहस्र भुजायें, पद्मासन, सर्व देवताओं से पूज्य, सब मंत्रों को सिद्ध करने वाला, सब लोकों से पूज्य, सबको शांत करने वाला, सबके अनुग्रह रूप शरीर वाला, पृथ्वी-जल अग्नि-यजमान-आकाश-सूर्य और चंद्र आदि के करने वाला, (कर्ता), सब आभूषणों से युक्त, दिव्य स्वाद, सुगन्ध वाला, सबकी रक्षा करना, शुभ देह, स्थावर और जंगम का आश्रय, सब जीवों पर दया करना, परम अव्यय और पंच अक्षर गर्भित।

औ- गोल आसन, चकवा वाहन कुंकुम गंध, पीतवर्ण, वज्र और पाश धारण किये हुए, चार भुजाएं, कसायला स्वाद, श्वेत मालादि पहने, स्तम्भन शक्ति, सौ योजन विस्तीर्ण, दुगुनी लम्बाई।

अं- पद्मासन श्वेत वर्ण, नीलकमल के समान सुगन्ध, कौस्तुभ मणि का आभरण,पद्म और पाश को लिए हुए, दो भुजायें, यज्ञोपवीतधारी, प्रसन्नमति, मधुर स्वाद, सौ योजन चौड़ा और दुगुना लम्बा।

अः- त्रिकोणासन, पीतवस्त्र, कुंकुम गंध,धूम्रवर्ण,कठोर स्वर, निष्ठुर दृष्टि नमकीन स्वाद, दो भुजाऐं, शूल आयुध, निष्ठुर गति, सुन्दर कृति, नपुंसक और शुभ कर्म बतलाना।

क- चौखूंटा आसन, चार दांत वाले, हस्ती की सवारी, पीतवर्ण, सुगंधित मालाओं और सुगंधित लेप सहित, स्थिर गति, प्रसन्न दृष्टि, दो भुजाएं, वज्र और मूसल के आयुध, जटा और मुकुटधारी, सब आभूषणों से भूषित, सहस्र योजन चौडा,सहस्र योजन ऊँचा, पुल्लिंग, क्षत्रिय, इंद्रादि देवताओं वाली स्तम्भन-शांति-पौष्टिक-वशीकरण और आकर्षण कर्म की शक्ति सहित।

ख- पिंगली वाहन, मोर की गर्दन के समान वर्ण, तोमर और शक्ति लिए हुए, दो भुजाएं, सर्पका यज्ञोपवीत, अच्छा स्वर, तीस योजन चौड़ा, आकाशगामी क्रिया, क्षत्रिय, सुगंधित माला और अनुलेप युक्त, अग्नि के भी नगर को कंपाने वाला, सोचे हुए मनोरथ को सिद्ध करने वाला और पुल्लिंग खकार का माहात्म्य है।

ग- हंस वाहन, पद्मासन, माणिक का आभरण, इंगलीक वर्ण, हृदय को प्रसन्न करने वाला, श्वेत वस्त्र वाला, सुगंधित मालाओं और अनुलेप से युक्त, कुंकुम और चन्दन को पसन्द करने वाला, क्षत्रिय, पुल्लिंग, सबको शान्ति करने वाला, सौ योजन विस्तीर्ण, सब आभरणों से भूषित, फल और पाश को लिए हुए, दो भुजाएँ, यक्ष आदि देवताओं वाला, अमृत का स्वाद, प्रसन्न दृष्टि, गकार का माहात्म्य है।

घ- ऊंट का वाहन, उलूक आसन, वज्र और गदा युक्त, दो भुजाएँ, धूम्रवर्ण, सहस्त्र योजन विस्तीर्ण, हंस का स्वर, कठोर गंध वाला, नमकीन स्वाद वाला, महाबली, उच्चाटन-छेदन मोहन और स्तम्भन कर्म करने वाला, पांच सौ योजन विस्तीर्ण, नपुंसक रौद्र शक्ति, क्षत्रिय, सबको शान्ति करने वाला और महाबलवान देवता रुप घकार का माहात्म्य है।

ङ- सर्प को खाने वाला, दुष्ट स्वर वाला, बुरी दृष्टि, दुराचारी, करोड़ योजन चौड़ा, सहस्त्र योजन ऊँचा, कार्य का आसन, रात्रि को पसन्द करने वाला, मूसल- गदा- शक्ति- मुष्टि, भुशुंडि और परशु लिए हुए, छः भुजाएँ, नपुंसक, यम आदि देवता रूप ङकार की शक्ति है।

च- सुन्दर हंस का वाहन, श्वेतवर्ण एक सौ करोड़ सहस्त्र योजन अर्थात् दस खरब योजन चौड़ा, वज्र वैडूर्य और मोतियों के आभूषणों से भूषित, शुभचक्र फल और कमल से युक्त, चार भुजाएँ, जटा और मुकुटधारी, अच्छे स्वर वाला, पुष्प प्रिय, ब्राह्मणी और यक्ष आदि देवताओं वाला, चकार की शक्ति है।

छ- मकर वाहन, कमलासन, बड़े घंटे का सा स्वर , उदय होते सूर्य के समान कांति, सहस्त्र योजन विस्तीर्ण, आकर्षण आदि रौद्र कर्म करने वाला, अच्छे मन वाला, सुगंधित, श्यामवर्ण, दिव्य आभरणों से भूषित, चार भुजाओं वाला, चक्र-वज्र-शक्ति और गदा आयुध, सब कार्यों में सिद्धि करने वाला, गरुड़ देवता रूप छकार की शक्ति है।

ज- शूद्र, पुल्लिंग, परशु-पाश-पद्म और वज्र लिए हुए चार भुजायें, अमृत का स्वाद, जटा और मुकुटधारी, मोती और हीरे के आभूषणों से सुसज्जित, वशीकरण और आकर्षण कर्म करने वाला, सत्यवादी, सुगंध को पसन्द करने वाला, सौ कमलों के समान कांति और गरुणादि देवता रूप जकार का माहात्म्य है।

झ- पुरुष, वैश्य, धर्म-अर्थ काम और मोक्ष को आकर्षित करने वाला, कुबेर आदि देवता रूप, शंख और चक्र लिए हुए दो भुजायें, मोती और हीरों के आभूषणों से सुसज्जित, सत्यवादी, पीतवर्ण, पद्मासन, सुगंधित और अमृतस्वाद झकार की शक्ति है।

ञ- काकवाहन, गंधक की गंध, कृष्ण वर्ण, दूत कर्म करने वाला, नपुंसक, सौ योजन विस्तीर्ण, त्रिशूल, परशु-निष्ठुर और गदा लिए हुए चार भुजाएँ, महाक्रूर स्वर, सब जीवों को भय करने वाला, शीघ्र चलने वाला, व्यभिचार कर्म से युक्त, नमकीन स्वाद, रौद्र दृष्टि और यम देवता रूप।

ट- गोल आसन, कबूतर का वाहन, कपिल वर्ण, वज्र और गदा लिए हुए दो भुजाएँ,

सौ योजन विस्तीर्ण, पुल्लिंग, मृदु स्वर, मन्द गंध वाला, नमकीन स्वाद, शीतल स्वाभाव, सर्प का यज्ञोपवीत और चन्द्र देवता रूप।

ठ– चौखूंटा आसन, गज वाहन, शंख के जैसी प्रभा, वज्र और गदा लिए हुए दो भुजाएँ, जम्बूद्वीप के बराबर विस्तीर्ण, अमृतस्वाद, पुल्लिंग, रक्षामोहन और स्तम्भन कार्य को करने वाला, सब आभरणों से भूषित क्षत्रिय देवता रूप।

ङ– चौखूंटा आसन, शंख के समान प्रभा, जम्बूद्वीप के बराबर विस्तृत, दूध और अमृत के समान स्वाद, पुल्लिंग, वज्र और पद्म लिए हुए दो भुजाएँ, रक्षा–स्तम्भ और मोहन करने वाला, कपूर के जैसी गंध, सब आभूषणों से भूषित, केले का स्वाद, अच्छे स्वर वाला, कुबेर देवता रूप।

ढ– चौखूंटा आसन, मोहन करने वाला, जम्बूद्वीप के बराबर विस्तृत, पुल्लिंग, परशुपाश–वज्र–मूसल–भिण्डपाल, मुद्गर–धनुष–हल–बाण लिए हुए अष्ट भुजाएँ, अच्छा स्वाद, अच्छा स्वर, सिंह के शब्द जैसी महाध्वनि, रक्तवर्ण, ऊपर को मुख वाला, दुष्टों का निग्रह और शिष्टों (सज्जनों) का पालन करने वाला, सौ योजन विस्तीर्ण, सहस योजन घेरे वाला, उसके आधे परिणाम ऊंचा, जटा और मुकुटधारी, अच्छी गंध निश्वास युक्त, किन्नर और ज्योतिष देवों से पूज्य, महान् धीरता युक्त, प्रलयकाल की अग्नि के समान भयंकर, शक्ति, वशीकरण और आकर्षण करने वाला, क्षणमात्र में सिद्ध होने वाला और अग्निदेवता रूप ढकार की शक्ति है।

ण– त्रिकोण आसन, व्याघ्र, सौ योजन लम्बा, उसके आधा चौड़ा, छह भुजाएँ, चन्द्रमा–तोमर–भुशुण्डि–भिंडपाल–परशु और त्रिशूल शस्त्रों वाला, कठोर गंध , शाप और अनुग्रह दोनों में समर्थ, रौद्रदृष्टि, नमकीन स्वाद, नपुंसक और वायु देवता रूप।

त– पद्मासन, गज वाहन, चमकते हुए आभूषण, सौ योजन लम्बा, उसके आधा चौड़ा, चंपे की गंध, परशु–पाश–पद्म और शंख लिए हुए चार भुजाएँ, पुल्लिंग, चन्द्रादि देवताओं से पूजित, मधुर स्वाद, सुगंधप्रिय तकार की शक्ति है।

थ– बैल वाहन, आठ भुजाएँ, शक्ति–तोमर–परशु–धनुष–दंड–पाश–गदा–और चक्र का धारक, कृष्णवर्ण, कृष्णवस्त्र, जटा–मुकुटधारी, करोड़ योजन लम्बा, इसके आधा चौड़ा, क्रूर दृष्टि, कठोर गंध, धतूरे के रस को पसन्द करने वाला, सब काम और अर्थ को सिद्ध करने वाला, अग्नि देवतारूप थकार की शक्ति है।

द– महिष वाहन, कृष्ण वर्ण, तीन मुख, छः भुजाएँ, गदा–मूसल–त्रिशूल–भुशुण्डि–वज्र और तोमर का धारक, करोड़ योजन विस्तीर्ण उसका आधा चौड़ा, दिगम्बर, लोह के आभूषण वाला, सर्प के यज्ञोपवीत वाला, निष्ठुर ध्वनि, कमल को छुड़ाने

वाले, मन्त्र को सिद्ध करने वाले, यम देवता रूप, कृष्णवर्ण और नपुंसक दकार का माहात्म्य है।

ध- पुल्लिंग, कषायवर्ण, तीन नेत्र, चार योजन लम्बा चौड़ा, रौद्र कार्य को करने वाला, छह भुजाएँ, चक्र-पाश-गदा-भुशुण्डि-मूसल-वज्र और बाण के धारक, कृष्णवर्ण, काले सर्प का यज्ञोपवीत, जटा और मुकुट के धारक, हुंकार रूप महान् शब्द वाला, महान् शूर, कठोर धूएँ को पसन्द करने वाला, रौद्र दृष्टि, नैऋृति देवता रूप धकार की शक्ति है।

न- कृष्ण वर्ण, नपुंसक, त्रिशूल और मुद्‌गर के शस्त्रवाला, उठे हुए बालों वाला, सब शरीर चमड़े से लिपटा हुआ, रौद्र दृष्टि, कठोर स्वाद, कृष्ण, सर्प प्रिय, कौए के जैसा स्वर, सौ योजन लम्बा, उससे आधा चौड़ा, बिनौले-गूगल-तिल के तेल और धूप को पसन्द करने वाला, दुर्जन प्रिय, रौद्रकर्म को धारण करने वाला, यम आदि देवता रूप।

प- कृष्ण वर्ण पुल्लिंग, चमेली के फूल के समान गंध, दस सिर, बीस भुजाएँ, अनेक आयुध, मुद्रा में लीन, कोटि योजन चौड़ा, दुगुना लम्बा, तीन करोड़ योजन तक शक्ति वाला, गरुड़ वाहन, पद्मासन, सब आभरणों से भूषित, सर्प का यज्ञोपवीत पहने, सर्व देवताओं से पूजित, सर्व देवोमय, सब दुष्टों के नाश करने में प्रलय के पवन के समान, चन्द्र आदि देवता रूप पकार की शक्ति है।

फ- बिजली के समान तेज, पुल्लिंग, पद्मासन, सिंह वाहन, दस कोटि योजन लम्बा, उसके आधा चौड़ा, परशु और चक्र लिए हुए दो भुजाएँ, केतकी पुष्प की गंध, सिद्ध और विद्याधरों से पूजित, मधुर स्वाद, व्याधि-विष और दुष्ट ग्रहों को नष्ट करने वाला, सबको अत्यंत आनंद दायक महादिव्य शक्तियुक्त, शान्ति कारक, ईशान देवता रूप फकार का माहात्म्य है।

ब- इंगलिका के समान प्रभावाला, दस करोड़ योजन ऊँचा, उससे आधा लम्बा-चौड़ा, मोतियों के आभूषण और यज्ञोपवीत का धारक, दिव्य आभरणों से भूषित, शंख-चक्र-गदा-मूसल-कांड-कण धनुष-बाण और तोमर को लिए, अष्ट भुजाएँ, हंस वाहन, कमलासन, बेर फल के जैसा स्वाद, गंभीर स्वर, चंपे की गंध, वशीकरण और आकर्षण के प्रिय, कुबेर देवता रूप।

भ- नपुंसक, दस सहस्र योजन ऊँचा, उससे आधा घेरा, निष्ठुर मनवाला, रूखे और कठोर स्वाद वाला, शीघ्र गति से चलने वाला, ऊर्ध्व मुख, तीन नेत्र, चक्र-शूल-गदा और शक्ति लिए हुए चार भुजाएँ, त्रिकोणासन, व्याघ्र वाहन, लाल नेत्र, तीक्ष्ण, ऊर्ध्वकेश, विकृतरूप, रौद्रकांति, क्षणमात्र में शरण देने वाला, सिद्धि करने वाला,

नैऋत्य देवता रूप भकार की शक्ति है।

म- उदय होते हुए सूर्य के समान कांति, अनंत योजन प्रभा, सर्व व्यापि, अनन्तमुख, अनन्तबाहु, भूमि आकाश और समुद्र तक दृष्टि, सर्व कार्य का साधक, अमर और दीपन करने वाला, सब गंध की मालाओं और अनुलेप युक्त, धूप-चरु और अक्षत को पसन्द करने वाला, सब देवताओं में रहस्य रूप, सब काम करने वाला, प्रलय काल की अग्नि के समान चमकने वाला, सबका स्वामी, पद्मासन, अग्निदेवता रूप मकार की शक्ति है।

य- नपुंसक, भूमि-आकाश और सब दिशाओं में व्याप्त, अरूपी, शीघ्र और मंद दोनों प्रकार की गतिवाला, प्रसन्नता युक्त, व्यभिचार कर्मप्रिय, सब देवताओं की अग्नि तथा प्रलय की अग्निरूप, तीव्र ज्योतिवाला, अनंतमुख, अनंत बाहु, सब कर्मों का कर्ता, सर्व लोकप्रिय, हरिण वाहन, गोलासन, अंजनवर्ण, महामधुर ध्वनि युक्त, वायव्य देवता रूप यकार की शक्ति है।

र- नपुंसक, सर्वव्यापि, बारह आदित्यों के समान प्रभायुक्त, अग्निस्वरूप कोटि योजन तक कांति वाला, सब लोकों का कर्ता, सर्व होम प्रिय, रौद्र शक्ति, स्त्रियों के लिए पांच बाण, दूसरे की विद्या का नाशक, अपने कर्म का साधक और मोहन करने वाला, त्रिकोणासन, अग्नि देवता रूप रकार की शक्ति है।

ल- पीतवर्ण, वज्र-चक्र-शूल और गदा लिए हुए चार भुजाएँ, हस्तिवाहन, स्तम्भन और मोहन करने वाला, जम्बूद्वीप प्रमाण विस्तृत, मंद गति को पसन्द करने वाला, महात्माओं लोक अलोक से पूजित, सब जीवधारी रूप, चौंखूंटा आसन, पृथ्वी को जीतने वाला, इन्द्र देवता रूप लकार की शक्ति है।

व- श्वेतवर्ण, बिंदु सहित, मधुर नमकीन स्वाद नपुंसक, मकर वाहन, पद्मासन, वश्य-आकर्षण, निर्विष और शांत कर्मों को करने वाला, वरुणादि देवतारूप वकार की शक्ति है।

श- रक्तवर्ण, दस सहस्र योजन लम्बा, उसका आधा चौड़ा, चंदन की गंध, मधुर स्वाद, मधुर रस, चकवे पर चढ़े हुए, कमलासन, शंख-चक्र-फल और पद्म लिए हुए चार भुजाएँ, प्रसन्न दृष्टि, अच्छे मन वाले, सुगंधित धूपप्रिय, लाल हार, सुन्दर आभूषण तथा जटा और मुकुट पहने हुए, वश्य-आकर्षण-शांतिक और पौष्टिक कर्मों के कर्ता, अत्यंत प्रकाशित, विद्या को धारण करने वाले, चन्द्र आदि देवता रूप शकार की शक्ति है।

ष- पुल्लिंग, मोर की शिक्षा के समान वर्ण, फल और चक्र लिए दो भुजाएँ, प्रसन्न दृष्टि, एक योजन लम्बा, इसका आधा चौड़ा, खट्टा रस, सुंदर गंध, कूर्मासन,

कूर्मवाहन, दृष्टि प्रिय, सब आभरणों से भूषित, स्तम्भन और मोहनकारक, इन्द्र आदि देवता रूप।

स– पुल्लिंग, श्वेतवर्ण, वज्र–चक्र–शंख और गदा लिए हुए चार भुजाएँ, एक पक्ष योजन प्रमाण, मधुर स्वर, हीरे–मोती और वैडूर्य के आभूषण, सुगंधित माला, और अनुलेप से युक्त, श्वेत वस्त्र प्रिय, सब कर्मों के कर्ता, सब मंत्रों से पूजित, महा मुकुटधारी, वश्य और आकर्षण के कर्ता, प्रसन्न दृष्टि, हंस वाहन, कुबेर देवता रूप सकार की शक्ति है।

ह– नपुंसक, सर्वव्यापी, श्वेतवर्ण, श्वेतगंध प्रिय, श्वेतमाला और अनुलेप से युक्त श्वेत वस्त्रप्रिय, सब कर्मों के कर्ता, सब मंत्रों में प्रधान, नव देवताओं से पूजित, महान कांति वाले, अनेक मुद्राओं शस्त्र और युक्तियों से युक्त, अचिंत्य गति वाले, चलायमान को भी विजय करने वाले चिंतित मनोरथ सब देवताओं का आकर्षण करने वाले, भूत भविष्य वर्तमान ऐसे तीन लोक और तीन काल को देखने वाले सब लक्ष्मी आदि देवता रूप हकार की शक्ति है।

क्ष– पुल्लिंग, पीतवर्ण, जम्बूद्वीप के समान ध्यान करने योग्य, असंख्यात द्वीप और समुद्रों में व्यापी, एक मुख, वायु के समान गंभीर, वज्र–पाश–मूशल–भुसुण्डि–गदा–शंख और चक्र लिए आठ भुजाएँ, गज वाहन, चौखूटां आसन, सब आभरणों से भूषित, जटा और मुकुट के धारक, सब लोगों से पूजित, स्तम्भन रूप सुगंधित मालाओं को पसन्द करने वाले, सबकी रक्षा करने वाले, सर्वप्रिय, सर्वकाल के ज्ञान वाले, माहेश्वर, सब यंत्रों को पसन्द करने वाले, रुद्र और अग्निदेवताओं से पूजित क्षकार की शक्ति है।

मंत्रों के जप में गूंथने के भेद

मंत्रों को जपने के निम्नलिखित तेरह प्रकार हैं जिनको विन्यास कहते हैं– ग्रथित, सम्पुट, ग्रस्त, समस्तयायोग, विदर्भित, आक्रान्त, आद्यान्त, अगर्भित या गर्भस्थ, सर्वतो मुख, विदर्भ, विदर्भ ग्रसित, रोधन और पल्लव।

ग्रथित– साध्य के नाम के एक अक्षर के साथ मंत्र के एक एक अक्षर को एक बार प्रयोग करने को ग्रथित कहते हैं। यह वश्य और आकर्षक कर्मों में फलदायक होता है।

सम्पुट– जिसमें आदि में मंत्र, फिर साध्य का नाम और अन्त में फिर मंत्र बोला जाये उसे सम्पुट कहते हैं। यह शांति और पुष्टि करने वाला तथा तीन लोक के ऐश्वर्य को देने वाला है।

ग्रस्त– जिसमें आदि और अन्त में आधा–आधा मंत्र और बीच में साध्य का नाम हो उसे ग्रस्त कहते हैं। इसको मारणादि सभी अशुभ कर्मों में प्रयोग किया जाता है।

समस्तयायोग- जिसमें पहले नाम और फिर मंत्र बोला जावे उसे समस्तया योग कहते हैं।

विदर्भित- जिसमें मंत्र के दो-दो अक्षर और एक-एक साध्य के नाम का अक्षर आवे उसे विदर्भित कहते हैं। यह वशीकरण करता है।

आक्रान्त- यदि साध्य का नाम चारों ओर मंत्र के अक्षरों से घिरा हुआ हो तो उसे आक्रान्त कहते हैं। यह सब कार्यों की सिद्धि, स्तम्भन, आवेशन, वश्य और उच्चाटन कर्मों को करता है।

आद्यन्त- जिसमें आदि में एक बार पूरा मंत्र, मध्य में साध्य का नाम और अन्त में फिर पूरा मन्त्र लगाया जावे उसे आद्यन्त कहते हैं, यह विद्वेषण करता है। आदि और अन्त में दो-दो बार मंत्र का प्रयोग करके बीच में एक बार साध्य का नाम रखने को गर्भस्थ या गर्भित कहते हैं। यह मारण, उच्चाटन, वश्य, नदी स्तम्भन, नौका भंजन और गर्भ स्तम्भन में प्रयोग किया जाता है।

सर्वतोमुख- जिसमें आदि और अंत में तीन-तीन बार मंत्र जपा जावे और नाम बीच में एक ही बार रहे उसे सर्वतोमुख कहते हैं।

विदर्भ- सब उपसर्गों को शांत करने वाला सब सौभाग्यों को करने वाला तथा देवताओं को भी अमृत देने वाला है। जिसमें आदि में मंत्र और फिर नाम और फिर मंत्र इस प्रकार तीन-तीन बार किया गया हो उसे विदर्भ कहते हैं। यह सब व्याधियों को नष्ट करने वाला तथा भूत और मृगी के रोग को दूर करता हैं।

विदर्भ ग्रसित- जिसमें साध्य के नाम के एक-एक अक्षर को विदर्भ रूप में करके पहले के समान आदि और अन्त में प्रयोग किया जावे उसे विदर्भ ग्रसित कहते हैं। यह सब कार्यों को करने वाला और सभी ऐश्वर्यों के फलों को देने वाला है।

रोधन- नाम के आदि, मध्य और अन्त में मंत्र रखने को रोधन कहते हैं। मंत्र के अन्त में नाम रखने को पल्लव कहते हैं।

बीजों का प्रयोजन

ये अक्षर स्त्रीलिंगी हैं- इ, ऊ, व, रू,ण।

ये अक्षर विकल्प से स्त्रीलिंगी हैं- ॠ ॠ लृ ॡ ङ ञ ण न म द ए ऐ उ ऊ।

ये अक्षर विकल्प से नंपुसकलिंगी हैं- ज, य, म।

शेष अक्षर पुल्लिगीं हैं।

❖ इस प्रकार अक्षरों के तीन प्रकार के गण करें। नाम का विकल्प से प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार नपुंसक अक्षर कहेंगे।

❖ ई, ष, लृ ॡ और ऊ पीत अक्षर हैं।

- ❖ ॠ ,ॠ, ष, ण, य, द, क्ष और र कठिन भेद और कार्य-कारण संबंध वाले कार्यों को करते हैं। शेष अक्षर मिले हुए तिल और चावलों के समान रहते हैं। मंत्र को जानने वाले मनुष्य अपनी बुद्धि से काम लें।
- ❖ अकार आकार का प्रतिषेधक है। अकार बिन्दु सहित होने पर शांतिक, पौष्टिक, वश्य और आकर्षण कर्मों को करता है।
- ❖ उ ऊ ॠ ॠ ए ऐ और अनिर्विष कर्म तथा व्यभिचार करते हैं।
- ❖ अकार सबका उच्चाटन करता है।
- ❖ खकार निर्विष कर्म को और विकल्प से वशीकरण करता है। धकार वशीकरण; किन्तु विकल्प से स्तंभन, भेदन और व्यभिचार कर्मों को करता है। चकार और छकार शांतिक और पौष्टिक को करता है और विकल्प से भेद और व्यभिचार को करता है।

ज झ	निर्विष करता है और विकल्प से स्तंभन और व्यभिचार करता है।
ञ	आकर्षण को और विकल्प से व्यभिचार को भी करता है।
ट	वश्य और व्यभिचार को करता है
ण	व्यभिचार को करता है
त थ	शांति और पौष्टिक करता है।
द ध	व्यभिचार करता है।
न	व्यभिचार करता है।
प फ	शान्तिक और पौष्टिक करता है।
ब भ	क्षोभ और स्तंभन करता है।
म	सर्व कर्मों को और विकल्प से सब सिद्धि को करता है।
य	सब व्यभिचार के कर्म और विकल्प से आकर्षण करता है।
ल	स्तंभन, वशीकरण, मोहन तथा विकल्प से निर्विष करता है।
व	निर्विष करता है।
श	शांतिक, पौष्टिक, वश्य और आकर्षण करता हैं।
ष	स्तंभन और मोहन करता है।
स	वाणी की सिद्धि करता है।
ह	सब कार्य करता है।
क्ष	सब योगों को करने वाला है।

मन्त्री को अक्षर के प्रति सभी प्रयत्न करने चाहिये।

बीजाक्षरों की सामर्थ्य

क्र.	बीजाक्षर	बीजाक्षरों के कार्य	लिंग	वर्ण
१.	अं	मृत्यु नाशन, अतिबली, गंभीर	पु	हेम
२.	आं	आकर्षण, महाद्युति कारक	स्त्री	श्वेत
३.	इं	पुष्टिकर, दिव्य शक्ति कारक	नपु	हेम
४.	ईं	आकर्षण	स्त्री	श्वेत
५.	उं	बलकारक, वशीकरण, आकर्षण	स्त्री	धूम्र
६.	ऊं	उच्चाटन	स्त्री	रक्त
७.	ऋं	क्षोभणं, सर्वविघ्न विनाशक	नपुं.	–
८.	ॠं	मोहन, व्यभिचार, मोहन	नपुं.	कपिल
९.	लृं	विद्वेषण, सर्वविघ्नकारी	नपुं.	पीत
१०.	लॄं	उच्चाटन कारक	नपुं.	पीत
११.	एं	वश्य, शुभकारक	नपुं.	?
१२.	ऐं	पुरुष वश्य	नपुं.	अग्नि
१३.	ओं	लोक वश्य	–	स्वर्ण
१४.	औं	राजा वश्य, स्तम्भन शक्ति	नपुं.	पीत
१५.	अं	हस्ति वश्य, प्रसन्न, अतिमधुर	नपुं.	श्वेत
१६.	अः	मृत्यु नाशक, शुभकर्म शासन	नपुं.	धूम्र
१७.	कं	विष बीज, स्तंभन शान्ति, पौष्टिक, वश्याकर्षणकारी	नपुं.	पीत
१८.	खं	स्तंभन, चिन्तित मनोरथकारी	नपुं.	–
१९.	गं	गणपति, सर्वशान्तिकर	पु.	–
२०	घं	स्तंभन, उच्चाटन, छेदन, मोहन, सर्वशान्तिकर, महाशक्ति	नपुं.	धूम्र
२१.	ङं	असुर, दुर्दृष्टि, दुष्टस्वर	नपुं.	?
२२.	चं	सुरबीज	नपुं.	श्वेत
२३.	छं	लाभ और मृत्यु नाशक, आकर्षणादि रौद्रकर्म, सर्वकार्यसिद्धि कारक	–	श्याम
२४.	जं	ब्रह्मराक्षस और मृत्यु नाशक, वश्याकर्षण, सत्यवादी	–	–

२५.	झं	चन्द्र-बीज, काम्य और धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देता है, राज वश्य और आकर्षण कारक	पु.	पीत
२६.	ञं	मोहन, महाक्रूरस्वर, सर्वजीव भयंकर	–	कृष्ण
२७.	टं	क्षोभन और चित्र कलंककारी, मृदुस्वर	पु.	कपिल
२८.	ठं	चन्द्रबीज विष मृत्यु, रक्षा, स्तंभन, मोहन, कार्यसिद्धि कारक	–	–
२९.	डं	गरुड़ बीज, विष नाशक, रक्षा, स्तंभन, मोहन, शुभस्वर	–	शंख
३०.	ढं	कुबेर बीज, उत्तराभिमुख होकर चार लाख जप से सिद्ध होता है। धन-धान्य समृद्धि, शंख और पद्मनिधि को करने वाला, दुष्टनिग्रह, रुद्रशक्ति, वश्याकारी	–	रक्त
३१.	णं	असुर बीज और तीन लाख जप से सिद्ध होता है। शापानुग्रहहारी	नपुं.	कृष्ण
३२.	तं	अष्टवसुधा बीज, जपात् धन-धान्य समृद्धि कारक।	पु.	–
३३.	थं	यमराज बीजं, मृत्युनाशनम्, सर्व कामादि साधन	–	–
३४.	दं	दुर्गा बीज, वश्य-पुष्टिकारक	नपुं.	कृष्ण
३५.	धं	सूर्य बीजं, जय सुखकरं, रौद्रकार्यकारक, रौद्रदृष्टि	–	कषाय
३६.	नं	ज्वर बीजं, स्वर देवतां रौद्रकार्यकारक, रौद्रदृष्टि	–	कृष्ण
३७.	पं	वीरभद्र बीज, सूर्य विघ्न विनाशनं	पुं.	–
३८.	फं	विष्णु बीज, धन-धान्य वर्द्धक, व्याधि, विष, दुष्टग्रह विनाशक, शान्तिकारक	पु.	–
३९.	बं	ब्रह्म बीज, वात-पित्त-कफ-श्लेष्म नाशक वश्याकृष्टि प्रसंगप्रिय	–	इंगुल
४०.	भं	भद्रकाली बीज, भूत-प्रेत-पिशाचभयोच्चाटनं रौद्रकान्ति	–	–
४१.	मं	मालाग्नि रुद्र बीज, स्तंभन, मोहन, विद्वेषणकर भूत-प्रेत-पिशाचाद्यावाहननं अष्ट महा-सिद्धिकर, सर्वकार्य साधक	–	–
४२.	यं	वायु बीजं, उच्चाटन, व्यभिचार कर्मप्रिय, सर्वलोक प्रिय	नपुं.	अरूपी

४३.	रं	आग्नेय बीज, उग्रकर्म कार्यकारक, परविद्याछेदक, स्तंभादि कारक	नपुं.	आदित्य
४४.	लं	इन्द्रबीज धन-धान्य सम्पत्कर, स्तंभन, मोहनकारक	-	पीत
४५.	वं	वरुणबीज, विष-मृत्यु नाशक, वश्याकर्षण, शान्तिकारक	-	श्वेत
४६.	शं	सूर्यबीज, एक लाख जप से श्री कारक, धर्म, अर्थ काम व मोक्ष प्रदाता, वश्याकर्षण, शान्ति, पौष्टिक	-	-
४७.	षं	वाग्बीज, धर्मार्थकाम-मोक्ष कारक, स्तंभन, मोहन	पुं.	पीतमाबील
४८.	सं	लक्ष्मीबीज-इसका एक लाख जप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, सर्वकार्यकर्ता, वश्यकर्ता	-	-
४९.	हं	शिवबीज, दस हजार जप से कार्य सिद्धि, सर्वकर्मकर्ता, चिन्तित मनोरथसाधक	नपुं.	-
५०.	क्षं.	नृसिंह बीज, दस हजार जप से मृत्यु नाश होता है, सर्वरक्षक, सर्वप्रिय, त्रिकालज्ञान	पु.	पीत

नोट- इन अक्षरों की सिद्धि पृथक-पृथक की जाती है। ह्लींकार को मध्य में और अकारादि क्ष पर्यंत अक्षरों को लिखकर उनमें अक्षरों की मणिरूप स्थापना कर उनमें जप करने पर सब कार्य सिद्ध होते हैं।

वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर सर्व- शक्तिशाली मंत्र है। उसके गुनने व मनन करने से विशिष्ट शक्ति का उपार्जन होता है, इससे इष्ट कर्म की सिद्धि होती है और विविध प्रकार के भय से रक्षण होता है। हम सिद्धियां व चमत्कार चाहते हैं, सामान्य परिश्रम से ही सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं और जब निष्फल हो जाते हैं तो निराश होकर सभी ओर से आस्थाहीन बन जाते हैं- मंत्रों पर, शब्दों पर विश्वास नहीं होता, परन्तु पूरी तरह विषय को न समझ सकने के कारण हमें भटकाव हो जाता है। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के उच्चारण से मनुष्य के शरीर पर विशिष्ट प्रभाव पड़ता है। ओकल्ट रिसर्च कॉलेज के प्रिंसिपल करमकर ने एक बार बताया कि **'र' अक्षर को बिन्दु सहित यानी 'रं' का एक हजार बार उच्चारण करें तो आपके शरीर की उष्णता एक डिग्री बढ़ जाएगी व 'ख' को बिन्दु सहित उच्चारण करते रहें तो आपके लीवर की शिकायत मिट जाएगी। इन्हीं अक्षरों से बीजाक्षर बनते है और उन्हीं से मंत्र और वे अपना विशिष्ट कार्य करते हैं।** यहां यह और स्पष्ट करना चाहता हूं कि प्रत्येक अक्षर को अनुस्वार लगाने के बाद ही मनन करना चाहिए जैसे- अं ऊं कं सं दं आदि। प्रत्यक वर्ण को ह्लींकार से युक्त करके जप करने से शीघ्र फल की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार ह्रीं रं ह्रीं रं ह्रीं रं ह्रीं आदि।

बीजाक्षरों का संक्षिप्त कोष

ॐ–	प्रणव, ध्रुव, विनय और तेजस् बीज है।
ऐं–	वाग् और तत्त्व बीज है।
क्लीं–	काम–बीज है।
ह्सौं ह्सौं ह्सौं–	यह शक्ति बीज है।
हो–	शिव और शासन बीज है।
क्षि–	पृथ्वी बीज है।
प–	अप बीज है।
स्वा–	वायु बीज है।
हा:–	आकाश बीज है।
ह्रीं–	माया और त्रैलोक्य बीज है।
कौ–	अंकुश और निरोध बीज है।
आ–	पाश–बीज है।
फट्–	विसर्जन और चलन बीज है।
वषट्–	दहन बीज है।
वोषट्–	आकर्षण और पूजा ग्रहण बीज है।
संवौषट्–	आकर्षण बीज है।
ब्लूं–	द्रावण बीज है।
ब्लैं–	आकर्षण बीज है।
ग्लौं–	स्तंभन बीज है।
क्ष्वीं–	विषापहार बीज है।
द्रां द्रीं क्लीं– ब्लूं	ये पांच द्रावण बीज हैं।
हूं–	द्वेष और विद्वेषण बीज है।
स्वाहा–	हवन और शान्ति बीज है।
स्वधा–	पौष्टिक बीज है।
नम:–	शोधन बीज है।
श्रीं–	लक्ष्मी बीज है।
अर्हं–	ज्ञान बीज है।
इं–	विष्णु बीज है।

क्षः फट् -	शस्त्र बीज है।
यः-	उच्चाटन और विसर्जन बीज है।
जूं-	विद्वेषण बीज है।
श्लीं-	अमृत बीज है।
क्ष्रीं-	सोम बीज है।
हंस-	विष को दूर करने वाला बीज है।
क्ष्म्ल्व्र्यूं	पिंड बीज है।
क्षं-	कूटाक्षर बीज है।
स्वी, क्ष्वीं, हंसः-	वाग्भव बीज है।
क्षिप ॐ स्वाहा-	शत्रु बीज है।
हाः-	निरोधन बीज है।
ठः-	स्तंभन बीज है।
ब्लौं-	विमल पिंड बीज है।
ग्लैं-	स्तम्भन बीज है।
घे घे-	वध बीज है।
द्राँ द्रीं-	द्रावण संज्ञक हैं।
ह्रां ह्रीं ह्रुं, ह्रैं ह्रौं ह्रः-	शून्य रूप बीज हैं।

बीजाक्षरों के लिए कुछ सांकेतिक शब्दः-

ॐ तार-	ध्रुव,वेदादि,नैगमादि श्रुत्यादि।
ह्रीं-	माया, लज्जा, शक्ति, शिव, पार्वती, भुवनेश, गिरिजा- नाम और बीज है।
हुं-	वर्म, कवच, त्रितत्त्व, क्रोध, छंद बीज।
ग्लौं-	नर बीज ।
हूँ-	कूच दीर्घ वर्म, दीर्घ तनुच्छद है।
नमः-	शिरोमं, अग्निवाच, वनिता, अग्निप्रिया, दहनप्रिया, पावक, द्विठः- ठद्वयं है।
आं ह्रीं कों-	ये तीन पाशादि- बीज हैं।
एं, ह्रीं,श्रीं-	त्रिबीज है।
त्री-	तारा बीज है।

त्रा-	चंडी बीज है।
स्त्रीं-	स्त्री बीज है।
स्वीं-	इन्दु बीज है।
क्ष्मं-	पीठ बीज है।
जं-	सृष्टि बीज है।
न:-	मल बीज है।
य:-	अचल बीज है।
ऐं-	वाग् बीज है।

ऋतु विचार-

एक दिन की साठ घड़ियों का उपयोग छहों ऋतुएं भी करती हैं। प्रत्येक दिन में ६ ऋतुएं इस प्रकार आती हैं- पूर्वाह्न सूर्योदय से चार घंटे तक लगभग ११ बजे तक के समय को बसंत ऋतु कहते हैं। मध्याह्न लगभग ११ बजे से ३ बजे तक के समय को ग्रीष्म ऋतु कहते हैं। ३ बजे से सूर्यास्त तक को शिशिर ऋतु, पूर्व रात्रि लगभग सूर्यास्त से चार घंटे तक लगभग ११ बजे तक के समय को वर्षाऋतु, मध्य रात्रि लगभग ११ बजे से तीन बजे तक को शरद ऋतु और रात्रि के अन्त लगभग तीन बजे से सूर्योदय तक के समय को हेमन्त ऋतु कहते हैं।

शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र-

क्रम	वार	तिथि	नक्षत्र
१.	रवि	१-८-९	हस्त, पुनर्वसु, रेवती, मृगसिर, तीनों उत्तरा पुष्य, मूल, अश्विनी, धनिष्ठा
२.	सोम	२-९	मृगसिर, रोहिणी, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, श्रवण, शतभिषा, पुष्य
३.	मंगल	३,६,८,१३	अश्विनी, रेवती, उत्तराभाद्र, मूल, विशाखा, उत्तरा फा., कृतिका, मृग, पुष्य, आश्लेषा
४.	बुध	२, ७, १२	अनु, श्रवण, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, कृतिका, रोहिणी, पूर्वाषाढ़, उ.फा.
५.	गुरु	५,१०,११,१५	पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु, पूर्वा फा., पूर्वाषाढ़, पू.भा., आश्लेशा, धनि, विशा, रेवती, स्वा., विश., अनु.।
६.	शुक्र	१,६,११,१३	रेवती, अश्विनी, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, अनु., मृगसिर, श्रवण, धनिष्ठा, पू.फा., पुनर्वसु।

७.	शनि	४,८,९,१४	रो.,श्र., धनिष्ठा, अश्विनी, स्वाती, पुष्य, अनुराधा, मघा, शतभिषा।

बीजाक्षरों के भेद

प्राकृत भाषा की अपेक्षा तेतीस व्यंजन, सत्ताईस स्वर और योगबाह (जोड़ाक्षर) चार कुल मिलकर चौसठ मूल वर्ण होते हैं। संस्कृत में सोलह स्वर, पच्चीस व्यंजन, अन्तस्थ चार, ऊष्म चार, क्ष, त्र, ज्ञ ये तीन, मिलाकर ५२ स्वर और व्यंजन होते हैं। इन सभी बीजाक्षरों की उत्पत्ति पंच नमस्कार मंत्र से ही हुई है, सर्व मातृका ध्वनि इसी मंत्र से उद्‌भूत है। इन सब में प्रधान 'ॐ' बीज है। आत्मवाचक है, इसी को तेजोबीज (अग्निबीज) काम बीज और भावबीज भी कहते हैं। यह ॐ बीज भी समस्त मंत्रों का सार है।

श्रीं–	कीर्तिवाचक	हं–	विद्वेष रोषवाचक
क्षीं–	शान्तिवाचक	प्रौं–प्रीं–	स्तम्भनवाचक
ह्रीं–	कल्याणवाचक	क्लीं–	लक्ष्मी प्राप्ति वाचक
ह्रं–	मंगलवाचक	तीर्थंकर नाम–	मंगलवाचक
ॐ–	सुखवाचक	क्ष्वीं–	योगवाचक

यक्ष और यक्षणियों के नाम–	कीर्ति और प्रीतिवाचक
वशीकरण, उच्चाटन में	'हूँ' का प्रयोग करना चाहिए।
मारण में	'फट्' का प्रयोग करना चाहिए।
स्तम्भन, विद्वेषण, मोहन में,	'नमः' का प्रयोग करना चाहिए।
शान्ति और पौष्टिक में	'वषट्' का प्रयोग करना चाहिए।

मंत्र शास्त्र के बीजों का विवेचन करने पर आचार्यों ने उनके रूपों का निरूपण करते हुए लिखा है–

अ आ ऋ ह श य क ख ग घ ङ–	यह वर्ण वायु तत्त्व संज्ञक हैं।
इ ई ॠ च छ ज झ ञ क्ष र थ–	यह वर्ण अग्नि तत्त्व संज्ञक हैं।
लृ व ल उ ऊ त ट द ड ण–	यह वर्ण पृथ्वी तत्त्व संज्ञक हैं।
ए ऐ लृ थ ध ठ ढ ध न स–	यह वर्ण जल तत्त्व संज्ञक हैं।
ओ औ अं अः प फ ब भ म –	यह वर्ण आकाश तत्त्व संज्ञक हैं।

मंत्र के अन्त में 'स्वाहा' शब्द रहता है। जो पाप नाशक, मंगलकारक तथा आत्मा की आन्तरिक शान्ति दृढ करने वाला है। मंत्र को शक्तिशाली करने वाले अन्तिम ध्वनि में– स्वाहा –स्त्रीलिंग, वषट् फट्– पुल्लिंग तथा नमः शब्द नपुंसकलिंग होता है।

जप में दिशा–कालादि का विचार–

अष्टकर्मों के जप में दिशादि का चार्ट–

नं.	कर्म	स्तंभन	विद्वेषण	आकर्षण	पौष्टिक	शांतिक	उच्चाटन	वश्य	मारण
१.	दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
२.	समय	पूर्वाह्न	मध्याह्न	पूर्वाह्न	अंतरात्रि	मध्य रात्रि	अपराह्न	पूर्वाह्न	संध्या
३.	मूद्रा	गदा	मूशल	पाश	कमल	ज्ञानमुद्रा	वज्र	पाश	खड्ग
४.	आसन	विकटासन	कुर्कुटासन	दंडासन	पद्मासन	पद्मासन	वज्रासन	स्वस्तिकासन	भद्रासन
५.	पल्लव	ठः ठः	हुं हुं	वौषट्	स्वधा	स्वाहा	फट्	वषट्	धे धे
६.	वस्त्र	पीत	धूम	उदयार्क	श्वेत	श्वेत	धूम	अरुण	काले
७.	पुष्प	पीत	धूम	अरुण	श्वेत	श्वेत	धूम	रक्त	काले
८.	वर्ण	पीत	धूम्र	उदयार्क	श्वेत	श्वेत	गूढ़ धूम्र	रक्त	कृष्ण
९.	विन्यास	आक्रांत	पाद्यांत	ग्रंथित	संपुट	श्वेत	समस्त	मन्थन	सस्त
		गर्भित	रोधन		सर्वतो		आद्यंत	आद्यंत	गर्भित
	–	–	–	–	मुख विदर्भ		गर्भित	गर्भित	पल्लव
	–	–	–	–	ग्रसित	–	–	विदर्भित	–
१०.	प्राणायाम	कुंभक	रेचक	पूरक	पूरक	पूरक	रेचक	पूरक	रेचक
११.	माला	नीम के फल	रीठे के फल	कमल के बीज	–	–	–	कमल के बीज	–
१२.	मणियें	स्वर्ण	पुत्रजीवि	मूँगा	मोती	स्फटिक	पुत्रजीवि	मूंगा	पुत्रजीवी
१३.	अंगुली	कनिष्ठा अंगुष्ठा	तर्जनी	कनिष्ठा	मध्यमा	मध्यमा	तर्जनी	अनामिका	तर्जनी
१४.	हाथ	दक्षिण	दक्षिण	वाम	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	वाम	दक्षिण
१५.	स्वर	दक्षिण	दक्षिण	वाम	वाम	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण
नं.	कर्म	स्तंभन	विद्वेषण	आकर्षण	पौष्टिक	शांतिक	उच्चाटन	वश्य	मारण
१६.	ऋतु	बसंत	ग्रीष्म	बसंत	हेमन्त	शरद्	वर्षा	बसन्त	शिशिर
१७.	मण्डल	पृथ्वी	वायु	अग्नि	जल	जल	वायु	जल	अग्नि
१८.	योग	चर	चर	स्थिर	पूरक	पूरक	चर	स्थिर	चर
१९.	करण	–	–	–	वव, बालव	–	–	–	–
	–	–	–	–	कौलव	–	–	–	–
२०.	दानोंकीसंख्या	१५	१५	१०८	१०८	१०८	१५	१०८	१५
२१.	दिवस	रवि, शनि	शुक्र, शनि		रवि, शनि	बुध, गुरु	शनि	गुरु, सोम	रवि, शनि,
	–	मंगल	–	–	मंगल	–	–	–	मंगल
२२.	पक्ष	कृष्ण	–		कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण
२३.	तिथि	अष्टमी, पूर्णा	८,९,१०,११		४,८,९,१४	२,३,५,७	८,१४	४,६,९,१३	
	–	अमावस्या	–	–	–	–	–	–	–
२४.	नक्षत्र	अश्विनी,	वैवाहिक	पुष्य, उत्तरा	–		वैनाशिक	पुष्य,उत्तरा	वैनाशिक
	–	आश्ले.मघा–ज्येष्ठा	–	त्रय	–	–	–	–	–
	–	मूला, रेवती	–	–	–	–	–	–	–
२५.	लग्न	वृश्चिक	–	–	सिंह	–	वृश्चिक	–	वृश्चिक
२६.	तत्त्वोदय	पृथ्वी	आकाश	अग्नि	जल	जल	वायु	अग्नि	–
२७.	अक्षर	पृथ्वी बीज	आकाश बीज	जलबीज	चंद्रबीज	–	वायुबीज	जलबीज	अग्निबीज
–	ल	ह	व	स	स	य	व	र	

मंत्र सिद्ध (जाप) करने की विधि

मंगलाष्टक पढ़ें, पात्र शुद्धि (स्वयं की शुद्धि) दिग्बंधन, रक्षा मंत्र, रक्षा सूत्र, यज्ञोपवीत धारण, दीपक स्थापना, कलश स्थापना, यंत्र स्थापना, यंत्राभिषेक, पूजा, आरती, आसन गृहण, जाप संकल्प और फिर मौन ग्रहण करके मन्त्र का उत्कीलन करके एवं मन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा करके ही जाप शुरु करें।

नोट– मंत्र आराधना के पूर्व व पश्चात् कायोत्सर्ग करके ही स्थान छोड़ें व ग्रहण करें।

(1) मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट, प्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगता-स्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥
सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयं श्र्यालयः,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त-वदनाः, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥

देव्यऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यश्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा।
दिक्पालादश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥

ये सर्वौषध-ॠद्धयः सुतपसां, वृद्धिंगताः पञ्च ये,ये
ये चाष्टांग-महानिमित्तकुशला, चाष्टौ विधच्चारिणः।

पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा, वक्षार रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुंडल-नगे, द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥

सर्पो हारलता-भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥९॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१०॥

इत्थं श्रीजिन-मङ्गलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्करं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्, तीर्थंकराणामुषः।
ये शृणवन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै, धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता, निर्वाण लक्ष्मीरपि॥११॥

(2) अंग शुद्धि मंत्र-

हाथ में जल लेकर मंत्रित कर अपने सिर पर डालें।

मंत्र-ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि झ्वीं क्ष्वीं पं पं वं वं मं मं सर्वाङ्ग शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा। मंत्र पढ़कर अपने ऊपर पानी के छींटे मारे।

(3) मंत्रों से दिशा बंधन करें

१. ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशात् समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा। (पूर्व दिशा में पीले सरसों फेकें)

२. ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशात् समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा। (दक्षिण दिशा में पीले सरसों फेकें)

३. ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशात् समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा। (पश्चिम दिशा में पीले सरसों फेकें)

४. ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर-दिशात् समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा। (उत्तर दिशा में पीले सरसों फेकें)

५. ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ऊर्ध्व, अधो आदि सर्व दिशा-विदिशात् समागत-विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा। (सभी दिशाओं में पीले सरसों फेकें)

अथवा

ॐ क्षां ह्राँ पूर्वे। ॐ ह्रीं अग्नौ। ॐ क्षीं ह्रीं दक्षिणे।

ॐ क्षें ह्रें नेऋते। ॐ क्षैं ह्रैं पश्चिमे। ॐ क्षों ह्रों वायव्ये।

ॐ क्षौं ह्रौं उत्तरे। ॐ क्षं ह्रं ईशाने। ॐ क्षः ह्रः भूतले।

ॐ क्षीं ह्रीं उर्द्धे। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त दिग्बंधनं करोमि स्वाहा।

अथवा

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा। इस मंत्र से पुष्प या पीली सरसों को ७ बार मंत्रित करें और सर्व दिशा में फेंके। तथा मंत्र बोलते हुए सब दिशाओं में ताली बजावें व तीन बार चुटकी बजावें।

(4) रक्षा मंत्र पढ़े-

प्रथम रक्षा मंत्र-ॐ ह्रूँ क्षूं फट् किरिटिं-किरिटिं घातय-घातय पर-विघ्नान् स्फोटय-स्फोटय सहस्त्रखण्डान कुरु-कुरु पर मुद्रान छिंद-छिंद पर मंत्रान भिन्द-भिन्द क्षों क्षः वः वः ह्रूं फट् स्वाहा। (मंत्र पढ़कर अपने ऊपर पुष्प या पीली सरसों का क्षेपण करें) (प्रतिष्ठा रत्नाकर पेज १७)

द्वितीय रक्षा मंत्र-ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच णमोकारो सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मंगलं ॐ ह्रूं फट् स्वाहा।

तृतीय रक्षा मंत्र-ॐ णमो अरहंताणं ह्राँ ह्रदयं रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा ।

ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा ।

ॐ णमो आयरियाणं ह्रूँ शिखां रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा ।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रौं एहि एहि भगवति वज्र कवच वज्रिणी रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते भूलिनि दुष्टान रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

यह पढ़कर अपने चारों तरफ अंगुली से कुण्डल सा खींचे यह ख्याल कर लें कि यह मेरे चारों और वज्र मय कोट है। यह कोट बनाकर चारों तरफ चुटकी बजावें। इसका मतलब है कि जो उपद्रव करने वाले हैं वे सब चले जावें। मैं वज्रकोट के अन्दर वज्रशिला पर बैठा हूं। इससे किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता है।

(5) रक्षा सूत्र बंधन-

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

दाहिने हाथ में तीन बार लपेट कर बांधे।

(6) यज्ञोपवित धारण मंत्र-

ॐ नमः परमशान्ताय शान्ति कराय पवित्रीकरणायहम् रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत दधामि, मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा। (प्रतिष्ठा रत्नाकर १०६)

(7) मंगल कलश स्थापन मंत्र

कलश स्थापना प्रथम मंत्रः-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या हरिद्धहरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-शुद्ध जलं सुवर्णघटं प्रक्षालित-परिपूरितं नवरत्न-गंधाक्षत-पुष्पार्चितममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

मंत्र- ॐ ह्रीं स्वस्ति विधानाय मंगल कलश स्थापनं करोमि। प्र. र. ८४

कलश स्थापना द्वितीय मंत्रः-ॐ अद्य भगवतो महा पुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्मणी श्री वीर निर्माण संवत्सरे .... मासे........ पक्षे..... तिथौ.....वासरे......प्रशस्त लगने......कार्यस्य निर्विघ्नं समाप्त्यर्थे नवरत्न गंध पुष्पाक्षत श्री फलादि शोभितं मंगल कलश स्थापनम् करोमि। श्रीं इवीं हं सः स्वाहा।

(8) **यंत्र स्थापना मंत्र**- ॐ ह्रीं स्वस्ति विधानाय मंगल श्रीमहायंत्र स्थापनं करोमि।

(9) **दीपक स्थापन मंत्र** :-ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं स्थापयामि।

(10) **ध्वाजारोहण मंत्र**- ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु। सर्व लोक शान्ति र्भवतु स्वाहा।

(11) **श्रीमहायंत्राभिषेक, श्रीमहायंत्र पूजा** (देखें पे.नं. 264)

(12) **श्रीमहायंत्र/मंगल कलश की आरती** (देखें पे.नं. 269)

(13) **आसन गृहण मंत्र**- ॐ ह्रीं अर्हं निःसहि हूँ फट् दर्भासने उपविशामि।

(14) जाप का संकल्प–

. ...जापस्य संकल्पं कुर्मः निर्विघ्नं समाप्तिर्भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(15) **मौन गृहण मंत्र**– ॐ ह्रीं अर्हं ह्यूं मौन स्थितर्थम् मौन व्रतं गृहणामि। (प्र.र.१११)

(16) **मंत्र का उत्कीलन मंत्र** –पहले सकलीकरण करें फिर किसी भी मंत्र का उत्कीलन करें।

ध्यान : पंच परमेष्ठी का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र पढ़ें– ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व मंत्र-तंत्र-यन्त्रादि नाम उत्कीलन स्वाहा।

मूल मंत्र प्रथम :– ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट पंचाक्षराणा मुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा।

द्वितीय :– ॐ जूं सर्व मन्त्र-तन्त्र मन्त्राणां संजीवन कुरु कुरु स्वाहा।

तृतीय :– ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠंलृं **ॡं** एं ऐं ओं औं अं अः
कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं,
पं फं बं भं मं, यं रं लं वं, शं सं षं हं क्षं मात्रक्षराणं सर्वम् उत्कीलनं कुरु स्वाहा।
ॐ सो हं हं सो हं (११ बार) ॐ जूँ सों हं हं सः ॐ ॐ (११ बार)
ॐ हं जूं हं सं गं (११ बार) सो हं हं सो यं (११ बार) लं (११ बार)
ॐ (११ बार) यं (११ बार)।

चतुर्थ : ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणां उत्कीलय उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

पंचम : ॐ ह्रीं जूं सर्व मन्त्र तन्त्र यन्त्र स्तोत्र कवचादीनां संजीवय संजीवय कुरु कुरु स्वाहा।

(17) मंत्र प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

मंत्र प्राण प्रतिष्ठा मंत्र :–ॐ ह्रीं क्रों अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ **ॡ** ए ऐ ओ औ अं अः क्ष्म्ल्व्र्यूं ठ्म्ल्व्र्यूं नमः परमात्मने ॐ हं सः क ख ग घ ङ ॐ हाँ णमो अरहंताणं क्ष्म्ल्व्र्यूं देवदत्ताणं × प्राणाः च छ ज झ ञ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं फ्म्ल्व्र्यूं जल देवतायां × प्राणाः ट ठ ड ढ ण ॐ हूँ णमो आइरियाणं य्म्ल्व्र्यूं अग्नि देवताणां × प्राणाः त थ द ध न ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रम्ल्व्र्यूं वायु देवतायां × प्राणाः प फ ब भ म ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्म्ल्व्र्यूं आकाश देवतायां × प्राणाः य र ल व, श स ष ह क्ष, ॐ णमो अरहंत केवलिणो इम्ल्व्र्यूं अनंतदेवतायां × प्राणाः इह स्थिता सर्व यंत्र, मंत्र, तंत्र रूपेण दिव्य देहाय सप्त धातु रूप कायेन्द्रियाणि देवदत्तस्य × काय वाङ्मनश्चक्षु श्रोत घ्राण जिव्हेन्द्रियाणि सुरुचिरं सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहाः।

नोट– (×) ऐसे निशान पर मंत्र का नाम उच्चारण करें।

----×---×----

मंत्र अधिकार

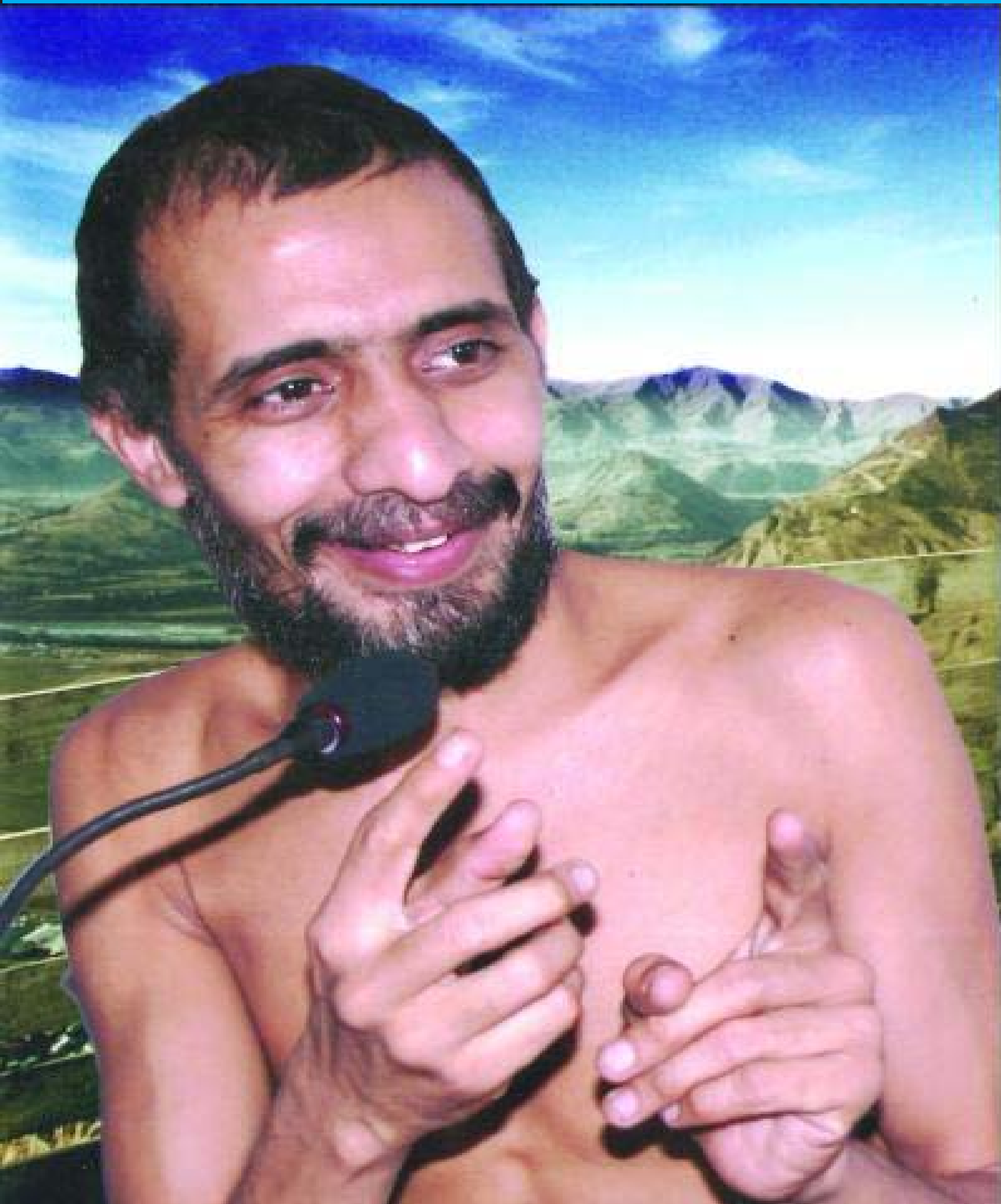

मुनि प्रार्थना सागर

Visit our website:- www.jainmuniprarthnasagar.com

Email:- muniprarthnasagar@gmail.com